तीसवाँ द्वार

विरासत का अंतिम रहस्य

डॉ. राजश्री वर्मा

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Rajshree Verma 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-286-0

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: June 2026

प्रस्तावना

इतिहास केवल उन पन्नों में नहीं होता जो कि सुनहरे अक्षरों में लिखे जाते हैं, बल्कि असली इतिहास अक्सर उन पत्थरों की दरारों में छिपा होता है जिन्हें वक़्त ने भुला दिया है।

नीलपुरा की गिरि-शिखर पहाड़ियों की गोद में बसी सूर्यगढ़ हवेली महज़ चूने और पत्थर की इमारत नहीं है। यह एक मूक गवाह है—उन वादों की, जो आधी रात को अंधेरे में किए गए थे; उन गद्दारियों की, जिनका हिसाब आज तक नहीं हुआ; और उस विज्ञान की, जो मानवता को बचाने या मिटाने की अद्भुत शक्ति रखता है।

जब हम किसी पुरानी हवेली के द्वार खोलते हैं, तो हम केवल धूल नहीं झाड़ते, हम उन रूहों की सिसकियों को भी जगाते हैं जो वहाँ कैद हैं। आर्यन खन्ना और मीरा सिंह के लिए यह यात्रा केवल एक परियोजना नहीं थी, यह अपने ही अस्तित्व के उन हिस्सों को खोजने की कोशिश थी जिन्हें 'सूर्यास्त' के काले सायों ने ढक दिया था।

यह उपन्यास संघर्ष है—आधुनिक महत्वाकांक्षा और प्राचीन सिद्धांतों के बीच। यह कहानी है उस पतली लकीर की, जो विनाशकारी हथियार को जीवनदायिनी अमृत से अलग करती है।

पन्ने पलटते हुए याद रखिएगा... हर ढलता हुआ सूरज केवल अंधेरा नहीं लाता, वह उन रहस्यों को भी उजागर करता है जिन्हें उजाला सह नहीं पाता। स्वागत है 'सूर्यगढ़ हवेली' के उस चक्रव्यूह में, जहाँ से बाहर निकलने का रास्ता केवल वही ढूँढ सकता है जिसका हृदय 'सत्य' की आग में तपा हो।

लेखिका परिचय

डॉ. राजश्री वर्मा (साहित्यिक नाम: राजश्री) साहित्य जगत की एक ऐसी उभरती हुई हस्ताक्षर हैं, जिनके लेखन में मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक यथार्थ का अद्भुत संगम दृष्टिगोचर होता है। मूलतः बिहार की निवासी डॉ. राजश्री ने भीम राव अंबेडकर बिहार यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर से होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की है।

एक कुशल चिकित्सक और गृहणी होने के साथ-साथ वे मानवीय रिश्तों की गहरी सूझबूझ रखती हैं, जो उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्पष्ट रूप से झलकता है। साहित्य के प्रति उनका अनुराग केवल लेखन तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें कविता, लेख और यात्रा-वृत्तांत पढ़ने में भी गहरी रुचि है।

उनका पहला उपन्यास "बंदिनी" नारी संवेदनाओं का एक जीवंत दस्तावेज है, जिसमें उन्होंने सरला, विद्या और आराधना नामक तीन अलग-अलग पीढ़ियों की महिलाओं के संघर्ष और व्यथा को बड़ी खूबसूरती से पिरोया है। चिकित्सक होने के नाते वे समाज के अंतर्मन को पढ़ना जानती हैं, और यही कारण है कि उनकी लेखनी पाठकों के दिल पर एक अमिट छाप छोड़ती है।

समर्पण

"उन अदृश्य हाथों के नाम...

जिन्होंने मुझे तब थामे रखा जब शब्द कम पड़ गए थे।

अपने माता-पिता को,

जिनकी प्रेरणा ने मुझे सदैव 'सत्य' के मार्ग पर चलना सिखाया।

अपने परिवार को,

जिनके अटूट धैर्य और प्रेम ने इस महागाथा को पन्नों पर उतारने का साहस दिया।

और,

उन समस्त नारियों को,

जो खामोशी से संघर्ष करती हैं, फिर भी अपने भीतर एक 'अमृत-धारा' संजोए रखती हैं। यह कृति आपकी अदम्य शक्ति को समर्पित है।"

आभार

"किसी भी वृहद् साहित्यिक कार्य की पूर्णता केवल एक लेखक की कलम का परिणाम नहीं होती, बल्कि उन सभी लोगों का साझा योगदान होती है जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस विचार को जीवित रखा।

सबसे पहले, मैं ईश्वर के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनकी असीम कृपा से मुझे इस कथा को पूर्ण करने की मानसिक शक्ति प्राप्त हुई।

मैं अपनी माँ स्वर्गीय आशा कुमारी सिन्हा के प्रति अपना विशेष आभार और श्रद्धा व्यक्त करती हूँ। उनका आशीर्वाद और संस्कार ही मेरी प्रेरणा के स्रोत रहे हैं, जिनके बिना इस साहित्य-साधना की कल्पना भी असंभव थी। भले ही वे आज भौतिक रूप से साथ नहीं हैं, किंतु उनकी स्मृतियाँ और शिक्षाएँ इस पुस्तक के हर शब्द में जीवित हैं।

मैं उन सभी प्रियजनों और मित्रों का विशेष धन्यवाद करना चाहती हूँ, जिन्होंने पांडुलिपि के निर्माण के दौरान मेरा मनोबल बढ़ाया। एक कुशल गृहिणी और चिकित्सक होने के दोहरे दायित्वों के बीच, लेखन के लिए समय निकाल पाना दुष्कर था, लेकिन मेरे परिवार के सहयोग ने इसे संभव बनाया।

विशेष रूप से, मैं अपने उन पाठकों का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मेरे पहले उपन्यास 'बंदिनी' को सराहा और मुझे पुनः लिखने के लिए प्रेरित किया। यह उपन्यास 'तीसवाँ द्वार' आप सभी के निरंतर प्रेम और प्रोत्साहन का प्रतिफल है।

अंत में, उन सभी का आभार, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन और संपादन की प्रक्रिया में मेरा साथ दिया।"

अनुक्रमणिका

अध्याय 1: दर्पण झील का वह सुनहरा किनारा....................................1

अध्याय 2: गर्द, गुफ़्तगू और गिरते हुए मलबे 8

अध्याय 3: तहखाने की गूँज और धूल भरे अहसास 13

अध्याय 4: बारिश की गूँज और भीगी हुई यादें.................................18

अध्याय 5: सुबह की ओस और पुराने साये 22

अध्याय 6: बिसात और बेबसी 26

अध्याय 7: टूटे हुए नक्शे और अधूरी तस्वीरें......................................29

अध्याय 8: रेत के महल और ढलता सूरज 33

अध्याय 9: वक़्त की धूल और नई दीवारें..37

अध्याय 10: बिसात के मोहरे और अदृश्य दुश्मन...............................41

अध्याय 11: परछाइयों का पीछा और पहला सुराग 45

अध्याय 12: जलमग्न मंदिर की पुकार..51

अध्याय 13: नीलगिरि के साये और रक्त-रंजित अतीत........................57

अध्याय 14: सत्य की अग्निपरीक्षा...69

अध्याय 15: सूर्यास्त का उदय और वैश्विक बिसात 73

अध्याय 16: टेम्स के किनारे मौत की दस्तक 76

अध्याय 17: घर वापसी और मृत्यु कक्ष की गूँज 80

अध्याय 18: दम घोंटती नफरत और आखिरी प्रायश्चित.......................84

अध्याय 19: मौत का पीछा और आख़िरी सौदेबाजी 88

अध्याय 20: रक्त के अवशेष और वंशज का सच 92

अध्याय 21: अकेली योद्धा और शिकारी का जाल 96
अध्याय 22: रक्त-संबंध और वैचारिक अग्निपरीक्षा 99
अध्याय 23: डिजिटल प्रलय और अदृश्य रणक्षेत्र 102
अध्याय 24: सिटी पैलेस का चक्रव्यूह और अंतिम काउंटडाउन 105
अध्याय 25: गिरि-शिखर की खोई हुई घाटी ’नीलकुंज’ 108
अध्याय 26: नीलकुंज का महासंग्राम 111
अध्याय 27: तंत्र का अंधकार 114
अध्याय 28: वापसी और तीसवें द्वार की गूँज 117
अध्याय 29: हवेली का रक्त-रंजित अंतिम प्रहार 120
अध्याय 30: शाश्वत प्रकाश की विरासत 123
भव्य सारांश 127

अध्याय 1
दर्पण झील का वह सुनहरा किनारा

नीलपुरा की शामें किसी अनुभवी चित्रकार की अधूरी पेंटिंग जैसी होती हैं, जहाँ रंग खुद तय करते हैं कि उन्हें कहाँ ठहरना है। दर्पण झील का पानी आज किसी ठहरे हुए कांच की तरह स्थिर था, जिसमें डूबते सूरज की लालिमा पिघले हुए सोने की तरह तैर रही थी, दूर पहाड़ियों के पीछे से आती ठंडी हवा जब पानी को छूती, तो छोटी-छोटी लहरें किसी अधूरी पहेली की तरह बनती और फिर खामोशी में विलीन हो जातीं। आर्यन ने अपनी गहरी नीली आँखों को सिकोड़कर उस परिदृश्य को देखा, जहाँ उजाला और अंधेरा एक-दूसरे से लड़ रहे थे।

आर्यन की पेंसिल की नोक स्केचबुक के कोरे पन्ने पर ठिठक गई। वह पिछले दस मिनटों से 'बागोर की हवेली' के झरोखों को कागज़ पर उतारने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसका ध्यान बार-बार भटक जाता। उसके लिए यह सिर्फ एक परियोजना नहीं था। केंद्र-प्रस्थ की शोर-शराबे वाली ज़िंदगी और एक टूटे हुए रिश्ते के मलबे से भागकर वह यहाँ सुकून की तलाश में आया था।

उसके चेहरे पर एक सख़्ती थी, जो शायद वक़्त के साथ और गहरी हो गई थी। ३० की उम्र में उसने सफलता तो बहुत पाई, लेकिन उसकी आँखों में एक ऐसी रिक्तता थी जिसे दुनिया की कोई भी भव्य इमारत नहीं भर सकती थी।

"अरे! बस एक सेकंड... वहीं रुकिए!"

अचानक एक खनकती हुई आवाज़ ने झील के किनारे की उस ख़ामोशी को चीर दिया। आर्यन का हाथ ठिठक गया। उसने चिढ़कर सिर उठाया।

सामने एक लड़की खड़ी थी। उसने हल्के नीले रंग का लंबा कुर्ता और सफ़ेद शरारा पहना था। उसके बाल हवा में बेतरतीब उड़ रहे थे और गर्दन में एक भारी ’कैनन’ कैमरा लटका था। वह किसी शिकारी की तरह अपनी आँखें लेंस पर टिकाए हुए थी।

"बिना इजाज़त तस्वीरें लेना शिष्टाचार नहीं है," आर्यन ने बिना सिर उठाए अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की। उसे अपनी निजता (Privacy) में खलल बिल्कुल पसंद नहीं था। लड़की ने कैमरा नीचे किया। उसके चेहरे पर गुस्से के बजाय एक शरारती मुस्कान थी। "सच कहूँ तो मैं उस हवेली के पीछे डूबते सूरज को कैप्चर कर रही थी। लेकिन आप… आप उस शॉट के बीच में एक पत्थर की मूर्ति की तरह जम गए थे। वैसे, आपकी उदासी कैमरे में बहुत ’एस्थेटिक’ लग रही है।"

आर्यन: (बिना सिर उठाए, ठंडे लहजे में) "कला और कलाबाज़ी में फर्क होता है। किसी अजनबी की एकांतता में बिना अनुमति के घुसपैठ करना कला नहीं, बदतमीजी है।"

मीरा: (हल्का खिलखिलाते हुए और उसके करीब आकर) "ओहो! मिस्टर 'सेंसिटिव आर्किटेक्ट', इतनी कड़वाहट लेकर इस सुंदर झील के पास कैसे बैठ लेते हैं? डर नहीं लगता कि आपके गुस्से से झील का पानी खौलने लगेगा?"

आर्यन: (गुस्से में अपनी पेंसिल पटकते हुए) "तुम्हें काम नहीं है कोई? जाओ यहाँ से और किसी और 'एस्थेटिक' पत्थर की फोटो खींचो। मुझे अकेला छोड़ दो।"

मीरा: "पत्थर ही तो खींच रही थी, पर अचानक वो बोलने लगा! वैसे, आपके स्केच में वो जो बाईं तरफ की खिड़की है न... वो थोड़ी तिरछी है।

आर्किटेक्ट साहेब, थोड़ा ध्यान दीजिए, वरना आपकी हवेली कागज़ पर ही ढह जाएगी!”

आर्यन ने अपनी स्केचबुक बंद की। "मैं यहाँ काम कर रहा हूँ और मुझे नहीं लगता कि मैंने आपको अपनी तस्वीर लेने की अनुमति दी है।"

मीरा: "ओह, रिलैक्स मिस्टर… जो भी आपका नाम है," वह उसकी तरफ बढ़ी और बिना पूछे उसके पास वाली सीढ़ी पर बैठ गई। "मैं मीरा हूँ और फोटोग्राफी अनुमति लेकर नहीं, लम्हों को चुराकर की जाती है। वैसे भी, इस शाम को कोई अकेले कैसे बिता सकता है? यह तो गुनाह है!"

आर्यन उसे देखता रह गया। वह अजीब थी—बेपरवाह और बेबाक। मीरा ने उसकी स्केचबुक की तरफ इशारा किया, "देख सकती हूँ? "

"नहीं। " आर्यन ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"खड़ूस, " मीरा बुदबुदाई, लेकिन उसकी आँखों में चमक बरकरार थी। "जानते हैं, नीलपुरा की इन पुरानी दीवारों की अपनी एक भाषा होती है। अगर आप इन्हें गौर से सुनें, तो ये आपको आपकी ही कोई भूली हुई कहानी सुना देंगी।"

आर्यन ने एक ठंडी सांस ली। "कहानियां काल्पनिक होती हैं, मीरा। हकीकत पत्थरों जैसी सख्त होती है, जिन्हें मोड़ा नहीं जा सकता।"

मीरा ने उसकी तरफ देखा, इस बार उसकी नज़रों में मज़ाक नहीं, बल्कि एक अजीब सी गहराई थी। "कभी-कभी पत्थरों को मोड़ने की ज़रूरत नहीं होती, बस उन्हें सही रोशनी में देखने की ज़रूरत होती है।"

उसने अपना कैमरा उठाया और एक आखिरी क्लिक किया। "यह आपकी फोटो नहीं है, यह उस लम्हे की है जब आपने पहली बार इस शाम को महसूस किया।" इससे पहले कि आर्यन कुछ कहता, वह उठ खड़ी हुई। "फिर मिलेंगे, मिस्टर आर्किटेक्ट! मुझे यकीन है कि नीलपुरा आपको बदलना जानता है।"

वह भीड़ में ओझल हो गई, लेकिन उसकी चप्पलों की थप-थप और उसकी हँसी की गूँज वहीं रह गई। आर्यन ने अपनी स्केचबुक दोबारा खोली। उसने हवेली का स्केच अधूरा छोड़ दिया और पन्ने के एक कोने पर अनजाने में एक आँख की आकृति बना दी—एक ऐसी आँख जिसमें पूरी दुनिया को समेट लेने की ज़िद थी।

शाम ढल चुकी थी, और झील का पानी अब गहरा नीला हो गया था। आर्यन को महसूस हुआ कि शायद इस शहर में वह अकेला नहीं रहने वाला। मीरा के जाने के बाद, आर्यन काफी देर तक वहीं बैठा रहा। हवा में अब थोड़ी ठंडक आ गई थी। उसने अपनी जैकेट के बटन बंद किए और अपनी स्केचबुक को बैग में रख लिया। वह उस लड़की के बारे में नहीं सोचना चाहता था, लेकिन उसके शब्द—*"पत्थरों को सही रोशनी में देखने की ज़रूरत होती है"*—उसके दिमाग में किसी पुराने गीत की तरह गूँज रहे थे। आर्यन अपने होटल 'द हेरिटेज विला' वापस पहुँचा। यह एक पुराना महल था जिसे अब एक बुटीक होटल में बदल दिया गया था। कमरा नंबर 304। कमरे में दाखिल होते ही उसने लाइट नहीं जलाई। उसे अंधेरा पसंद था; अंधेरा कुछ छुपाता नहीं है, बस सब कुछ ढक देता है।

उसने मेज पर रखे अपने लैपटॉप के बगल में एक पुरानी तस्वीर देखी। तस्वीर में वह एक ऊँची इमारत के सामने खड़ा था, और उसके साथ अनन्या थी। वह रिश्ता जो तीन साल पहले एक अधूरे वादे की तरह टूट गया था। आर्यन ने अपनी आँखें मूंद लीं। केंद्र-प्रस्थ में उसका सफल करियर, बड़ी गाड़ियाँ और नामी परियोजनाएं—सब कुछ था, पर अनन्या के जाने के बाद वह एक ऐसे ढांचे की तरह रह गया था जिसकी नींव खोखली हो गई हो।

नीलपुरा आने का उसका असली मकसद एक 'वेकेशन' नहीं था। उसे 'सूर्यगढ़ हवेली' को पुनर्जीवित करने का ठेका मिला था। यह हवेली सालों से बंद पड़ी थी और शहर के लोग कहते थे कि वहाँ की दीवारों में पुरानी रूहें बसती हैं। आर्यन रूहों पर विश्वास नहीं करता था, वह केवल ईंट और गारे पर विश्वास करता था। उसने एक लंबी सांस ली और खुद से कहा, "कल काम

शुरू होगा। कोई व्याकुलता नहीं, कोई मीरा नहीं।" दूसरी तरफ, शहर के एक छोटे और जीवंत कैफे 'द आर्टिस्ट्स नुक' में माहौल बिल्कुल अलग था। मीरा अपनी सहेली ज़ोया के साथ बैठी अपने कैमरे के शॉट्स चेक कर रही थी।

"दिखा तो सही, आज क्या जादुई क्लिक किया है तूने? " ज़ोया ने मीरा के कंधे से झाँकते हुए पूछा।

मीरा ने स्क्रीन पर वही फोटो दिखाई जो उसने आर्यन की ली थी। तस्वीर में आर्यन का चेहरा आधा अंधेरे में था, और उसकी आँखें झील के पानी की तरह गहरी और शांत लग रही थीं।

"वाह! कौन है यह 'एंग्री यंग मैन'? " ज़ोया ने चुटकी ली।

"पता नहीं, " मीरा ने मुस्कुराते हुए कहा, "लेकिन इसकी आँखों में एक कहानी है ज़ोया। एक ऐसी कहानी जो अधूरी छोड़ दी गई है। यह यहाँ की पुरानी इमारतों जैसा ही है—ऊपर से सख्त, पर अंदर से टूटता हुआ।"

मीरा एक फ्रीलांस फोटोग्राफर थी। उसने कभी एक जगह टिकना नहीं सीखा था। उसके पिता एक फौजी थे, इसलिए घूमना उसके खून में था। वह हर चेहरे में एक कविता ढूंढती थी और हर खामोशी में एक संगीत।

"कल से मैं सूर्यगढ़ हवेली का परियोजना शुरू कर रही हूँ," मीरा ने कॉफी का घूंट लेते हुए कहा। "मैगजीन वालों को उस हवेली के रेनोवेशन की पूरी 'बिफोर एंड आफ्टर' सीरीज चाहिए।"

"सावधान रहना मीरा," ज़ोया ने मजाक में कहा। "सुना है उस हवेली का मालिक और वहाँ का इतिहास दोनों ही थोड़े पेचीदा हैं।"

मीरा ने अपना कैमरा बैग पैक किया और आत्मविश्वास से बोली, "पेचीदा चीजें ही तो मुझे सबसे ज्यादा पसंद हैं।"

अगली सुबह सूरज की पहली किरण के साथ ही आर्यन सूर्यगढ़ हवेली के भारी लकड़ी के दरवाज़े पर खड़ा था। हाथ में नक्शे और गले में मेजरिंग टेप। हवेली धूल और जालों से ढकी थी, लेकिन उसकी नक्काशी आज भी अपनी भव्यता की गवाही दे रही थी।

जैसे ही उसने मुख्य द्वार का ताला खोला और अंदर कदम रखा, उसे किसी के गुनगुनाने की आवाज़ सुनाई दी।

"अजीब दास्तां है ये, कहाँ शुरू कहाँ ख़तम..."

आर्यन ठिठक गया। हवेली के बीचों-बीच बने चौक (Courtyard) में धूप छनकर आ रही थी। वहाँ धूल के गुबार के बीच, मीरा खड़ी थी। उसने अपनी जींस के पोंछे ऊपर चढ़ा रखे थे और एक पुराने झरोखे के पास लगे मकड़ी के जालों की फोटो ले रही थी।

"आप यहाँ क्या कर रही हैं?" आर्यन की आवाज़ खाली हॉल में गूँजी।

मीरा उछल पड़ी। "ओह! मिस्टर खड़ूस... मेरा मतलब है, मिस्टर आर्किटेक्ट! आप?"

"मेरा नाम आर्यन है और यह मेरी साइट है। यहाँ बाहरी लोगों का आना मना है," आर्यन ने सख्त लहजे में कहा।

मीरा ने बड़े आराम से अपना आई-कार्ड दिखाया। "मैं बाहरी नहीं हूँ। मैं 'एक्सप्लोर इंडिया' मैगजीन की ऑफिशियल फोटोग्राफर हूँ। मुझे इस हवेली के जीर्णोद्धार (Restoration) को कवर करने का कॉन्ट्रैक्ट मिला है।"

आर्यन ने कार्ड देखा और एक गहरी सांस ली। उसे अंदाजा नहीं था कि जिस व्याकुलता से वह बचना चाहता था, वह उसके काम का हिस्सा बन जाएगी।

"ठीक है," आर्यन ने कदम बढ़ाते हुए कहा, "लेकिन मेरे काम के बीच में मत आना। यह हवेली खतरनाक है, कहीं भी पैर धंस सकता है।"

मीरा उसके पीछे-पीछे चलने लगी। "चिंता मत कीजिए आर्यन। मैं गिरती नहीं हूँ, और अगर गिर भी जाऊं, तो मुझे खुद खड़ा होना आता है। वैसे, क्या हम आज इस धूल भरी शुरुआत को एक दोस्ती में बदल सकते हैं?"

आर्यन रुका, पीछे मुड़कर उसे देखा और बिना कुछ बोले आगे बढ़ गया। मीरा ने मुस्कुराते हुए उसका एक और कैंडिड शॉट लिया। उसे पता था कि यह पत्थर इतनी जल्दी नहीं पिघलेगा, लेकिन उसे तराशने का मज़ा ही कुछ और है।

अध्याय 2
गर्द, गुफ़्तगू और गिरते हुए मलबे

सूर्यगढ़ हवेली की सुबह शहर के बाकी हिस्सों से अलग थी। जहाँ बाहर की दुनिया ऑटो के हॉर्न और पर्यटकों के शोर से जागती थी, वहीं इस हवेली के भीतर केवल कबूतरों के पंखों की फड़फड़ाहट और पुरानी लकड़ी के चटकने की आवाजें थीं।

आर्यन सुबह छह बजे ही साइट पर पहुँच चुका था। उसके सफेद कुर्ते की आस्तीनें कोहनियों तक मुड़ी हुई थीं और माथे पर पसीने की बारीक बूंदें चमक रही थीं। वह हवेली के मुख्य दरबार हॉल में खड़ा होकर छत की नक्काशी का मुआयना कर रहा था। उसके हाथ में एक लेजर मेजरिंग टेप था, जिसकी लाल बिंदु दीवारों पर नाच रही थी।

"यह हिस्सा गिर सकता है," वह खुद से बुदबुदाया। उसने अपनी डायरी में नोट किया: 'उत्तर-पूर्वी कोना, बीम नंबर 4—गंभीर दरारें।'

तभी, हवेली के भारी लोहे के दरवाजे ने एक लंबी कराह भरी। आर्यन ने मुड़कर नहीं देखा। उसे पता था यह कौन है। इस वक़्त शहर में सिर्फ एक ही इंसान था जो इतना शोर मचाते हुए दाखिल हो सकता था।

"क्या आप हमेशा इतनी जल्दी उठ जाते हैं, या फिर आपको रात को नींद ही नहीं आती?" मीरा की खनकती आवाज़ हॉल के ऊंचे गुंबद से टकराकर वापस आई।

वह आज भी अपने चिर-परिचित अंदाज़ में थी—हाथ में एक पुराना सा कैमरा, गले में एक रंगीन स्कार्फ और चेहरे पर वह मुस्कान जो आर्यन को 'खतरनाक' लगती थी।

आर्यन: (तंज कसते हुए) “कल झील, आज हवेली। क्या तुमने मेरा पीछा करने का कॉन्ट्रैक्ट लिया है? या फिर 'घुसपैठ' तुम्हारी हॉबी है?"

मीरा: (अपनी पलकें झपकाते हुए) “मिस्टर आर्किटेक्ट, अपनी गलतफहमी का बोझ थोड़ा कम कीजिए। मैं यहाँ 'एक्सप्लोर इंडिया' के लिए आई हूँ। वैसे, इस धूल भरी जगह में आपकी ये साफ-सुथरी शर्ट बहुत जल्दी खराब होने वाली है। थोड़ा 'रफ एंड टफ' बनना सीखिए।"

आर्यन: “मुझे शर्ट की नहीं, सुरक्षा की चिंता है। ये छतें तुम्हारे उन नाजुक कैमरों की तरह नहीं हैं, ये कभी भी गिर सकती हैं।"

मीरा: “डरपोक! पत्थरों से डरते हैं या अपने उन पुराने यादों के मलबे से, जो आप कल झील किनारे साथ लेकर बैठे थे?"

आर्यन: “और यह कोई पिकनिक स्पॉट नहीं है, मीरा। आज यहाँ का स्ट्रक्चरल ऑडिट होना है। बेहतर होगा कि तुम अपने लेंस को इस मलबे से दूर रखो।”

मीरा ने एक छोटे से ऊंचे चबूतरे पर अपना बैग पटका और उसकी तरफ बढ़ी। “मिस्टर आर्किटेक्ट, आप शायद भूल रहे हैं कि मलबे में ही इतिहास छिपा होता है। और वैसे भी, जितनी मेहनत आप इन दीवारों को नापने में कर रहे हैं, अगर उतनी ही मेहनत इस शहर को जीने में करते, तो शायद आपके चेहरे पर यह ’12 बजे’ वाली शक्ल नहीं होती।”

आर्यन ने एक गहरी सांस ली और अपनी लेजर लाइट बंद की। वह उसकी तरफ घूमा और अपनी बाहें सिकोड़ लीं। “तुम्हें क्या लगता है मीरा यह सब एक खेल है? यह हवेली एक बार गिरना शुरू हुई तो इसके नीचे दबने वाले को यह नहीं पूछेगी कि वह कितनी अच्छी फोटोग्राफी करता है। यह जगह ’अनसेफ’ है।”

"ज़िंदगी भी अनसेफ है, आर्यन,” मीरा ने निडर होकर उसकी आँखों में देखा। “पर क्या हम जीना छोड़ देते हैं? चलिए, एक डील करते हैं। आप मुझे

वे हिस्से दिखाएँ जो सुरक्षित हैं, और मैं आपको वह दिखाती हूँ जो आपके ये नक्शे नहीं देख पा रहे।"

आर्यन कुछ कहने ही वाला था कि अचानक ऊपर से एक चरमराने की आवाज़ आई—चर्र-ररर। आर्यन की नज़रें ऊपर उठीं। एक भारी नक्काशीदार पत्थर मीरा के ठीक ऊपर से अलग हो रहा था। "मीरा, हटो!" आर्यन चिल्लाया और चीते जैसी फुर्ती से उसे अपनी ओर खींच लिया।

पत्थर जमीन पर गिरकर चकनाचूर हो गया। मीरा आर्यन की बाहों में थी, धूल के गुबार ने दोनों को ढक लिया था। आर्यन की धड़कनें मीरा के कान के पास सुनाई दे रही थीं।

आर्यन: (गुस्से और घबराहट में) "कहा था न! अगली बार फोटो के चक्कर में जान चली जाएगी, तो कौन सा फिल्टर लगाओगी उस पर?"

मीरा: (पहली बार शांत होकर) "आपकी धड़कनें बहुत तेज़ हैं आर्यन... शायद आप उतने पत्थर दिल नहीं हैं, जितना कल रात दिखा रहे थे।"

आर्यन ने उसका हाथ पकड़ा और उसे हॉल के सुरक्षित हिस्से की ओर खींच लिया।

उसका हाथ मीरा की कलाई पर मज़बूत था। मीरा ने महसूस किया कि आर्यन की हथेलियाँ सख्त थीं, शायद सालों तक साइट्स पर मेहनत करने का नतीजा। आर्यन को अचानक अपनी पकड़ का एहसास हुआ और उसने तुरंत हाथ छोड़ दिया। एक अजीब सी खामोशी उनके बीच छा गई।

"शुक्रिया," मीरा ने धीमी आवाज़ में कहा। उसके लहजे में पहली बार वह चुलबुलापन नहीं था।

"सावधान रहो," आर्यन ने अपनी नज़रें चुराते हुए कहा। "चलो, मैं तुम्हें ऊपर की गैलरी दिखाता हूँ। वहाँ की छत मज़बूत है, और वहाँ से तुम्हें शहर का अच्छा व्यू मिलेगा।"

वे दोनों हवेली की संकरी घुमावदार सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने लगे। सीढ़ियाँ इतनी तंग थीं कि हर कदम पर उनके कंधे एक-दूसरे से टकरा रहे थे। जितनी

बार मीरा की खुशबू—जो चमेली और पुरानी किताबों का मिश्रण थी—आर्यन तक पहुँचती, उसका ध्यान अपने काम से भटकने लगता।

ऊपर पहुँचकर, दृश्य वाकई जादुई था। पूरी नीलपुरा नगरी एक नीले और सफ़ेद कैनवास की तरह फैली हुई थी। दर्पण झील चांदी की तरह चमक रही थी।

"अद्भुत!" मीरा ने अपना कैमरा निकाला और फटाफट कुछ शॉट्स लिए। "आर्यन, देखो! उस तरफ की धूप कैसे खिड़कियों से अंदर आ रही है। क्या आप इसे अपने नक्शे में डाल सकते हैं?"

आर्यन ने दीवार के पास जाकर देखा। मीरा सही थी। एक विशिष्ट कोण से रोशनी अंदर आ रही थी जो हवेली के भीतर के अँधेरे को एक सुनहरी आभा दे रही थी।

"यह 'लाइट वेल' है," आर्यन ने प्रभावित होते हुए कहा। "पुराने कारीगर इसे रोशनी के लिए इस्तेमाल करते थे। मैं कोशिश करूँगा कि इसे रेनोवेशन के दौरान सुरक्षित रख सकूँ।"

मीरा ने उसकी तरफ देखा। "पता है, आप जब अपनी इमारतों के बारे में बात करते हैं, तो आपकी आँखें बदल जाती हैं। उनमें एक अलग तरह की चमक होती है। शायद आप इंसानों से ज़्यादा पत्थरों से प्यार करते हैं।"

आर्यन की मुस्कुराहट फीकी पड़ गई। "पत्थर धोखा नहीं देते, मीरा। वे वही रहते हैं जहाँ आप उन्हें छोड़कर जाते हैं। वे बदलते नहीं हैं, वे वादे नहीं तोड़ते।"

मीरा समझ गई कि यह बात आर्किटेक्चर के बारे में नहीं थी। यह आर्यन के किसी पुराने घाव के बारे में थी। उसने अपनी आवाज़ को कोमल किया। "इंसान भी पत्थर नहीं होते आर्यन। वे बढ़ते हैं, बदलते हैं, और कभी-कभी वे गलती भी करते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हर इंसान धोखा देगा।"

आर्यन ने एक लंबी सांस ली। उसे लगा जैसे हवा भारी हो गई हो। “क्या हम काम पर ध्यान दे सकते हैं? मुझे इस गैलरी की रेलिंग का माप लेना है।”

"बिल्कुल,” मीरा ने शरारत से कहा, “लेकिन पहले मेरा एक फोटो खींचिए... इस खिड़की के पास।”

"मैं यहाँ फोटोग्राफर बनने नहीं आया हूँ,” आर्यन ने आपत्ति जताई।

"सिर्फ एक! वरना मैं पूरे दिन आपको परेशान करती रहूँगी,” मीरा ने कैमरा उसकी तरफ बढ़ा दिया।

आर्यन ने अनिच्छा से कैमरा हाथ में लिया। उसने व्यूफाइंडर से देखा। फ्रेम में मीरा थी, और उसके पीछे पूरा नीलपुरा। लेकिन जैसे ही उसने फोकस सेट किया, उसे महसूस हुआ कि लेंस के पीछे से मीरा कितनी सुंदर लग रही थी। उसकी हँसी में एक ऐसी ईमानदारी थी जो आर्यन ने सालों से नहीं देखी थी।

उसने बटन दबाया। क्लिक।

"हो गया? दिखाइए!” मीरा उसकी ओर झपटी।

आर्यन ने कैमरा पीछे किया। “नहीं, पहले काम।”

“अरे! यह तो सरासर नाइंसाफी है!” मीरा उसका पीछा करने लगी, और तभी उसका पैर एक बार फिर सीढ़ी के किनारे पर फिसला।

इस बार आर्यन तैयार था। उसने अपनी बाहें उसकी कमर के चारों ओर लपेट दीं। मीरा सीधे उसके सीने से जा टकराई। हवा में धूल के कण ठिठक गए। आर्यन उसे देख रहा था, और मीरा की सांसें आर्यन के गले पर महसूस हो रही थीं।

"मैंने कहा था न,” आर्यन ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, “सावधान रहो।”

मीरा ने अपनी पलकें झुकाईं और फुसफुसाई, “शायद सावधान रहने का वक़्त निकल चुका है।”

अध्याय 3
तहखाने की गूँज और धूल भरे अहसास

हवेली की ऊपरी गैलरी में हुए उस संक्षिप्त, मगर गहरे क्षण के बाद आर्यन और मीरा के बीच एक अजीब सी खामोशी छा गई थी। वह खामोशी जो असहज नहीं थी, बल्कि भारी थी—उन शब्दों से भरी हुई जो कहे नहीं गए थे।

दोपहर की चिलचिलाती धूप अब ढलने लगी थी, लेकिन हवेली के भीतर की उमस कम होने का नाम नहीं ले रही थी। आर्यन ने खुद को व्यस्त दिखाने के लिए अपने औजारों को फिर से व्यवस्थित करना शुरू किया, जबकि मीरा ने अपनी जैकेट की धूल झाड़ी और दूर क्षितिज को देखने लगी।

"हमें नीचे चलना चाहिए," आर्यन ने अंततः कहा। उसकी आवाज़ में एक तरह की आधिकारिक खनक वापस आ गई थी, जैसे वह उस पल के असर को मिटाना चाहता हो।

मीरा ने बस सिर हिलाया। वह जानती थी कि आर्यन पीछे हट रहा है। वह एक ऐसा कछुआ था जो हल्का सा खतरा महसूस होते ही अपने खोल में वापस चला जाता था।

नीचे उतरते समय, आर्यन की नज़र मुख्य सीढ़ियों के पीछे एक छोटे, लकड़ी के दरवाज़े पर पड़ी। यह दरवाज़ा भारी नक्काशीदार सागवान का बना था, लेकिन इस पर सालों की गर्द जमी थी। नक्शे के अनुसार, यहाँ केवल एक छोटा स्टोररूम होना चाहिए था।

"नक्शे में यह हिस्सा थोड़ा अलग दिख रहा है," आर्यन ने रुकते हुए कहा। उसने अपनी टॉर्च निकाली और दरवाज़े की दरार से अंदर रोशनी डाली।

मीरा, जिसकी जिज्ञासा हमेशा उसकी सुरक्षा की भावना से बड़ी थी, तुरंत उसके बगल में आ खड़ी हुई। "क्या यह कोई गुप्त रास्ता है? जैसे पुरानी फिल्मों में होता है?"

"फिल्में देखना कम करो, मीरा। यह शायद सिर्फ एक पुराना गोदाम होगा," आर्यन ने जवाब दिया, लेकिन उसके हाथों में एक आर्किटेक्ट वाली उत्सुकता थी। उसने ज़ोर लगाकर दरवाज़े को धक्का दिया।

दरवाज़ा एक तीखी चरमराहट के साथ खुला, जैसे वह सालों की नींद से जागने पर शिकायत कर रहा हो। अंदर से ठंडी, सीलन भरी हवा का एक झोंका बाहर आया।

"अंदर मत जाना, मैं पहले चेक करता हूँ," आर्यन ने हिदायत दी, लेकिन मीरा पहले ही अपना कैमरा ऑन करके अंदर कदम रख चुकी थी। वह कोई स्टोररूम नहीं था। वह एक छोटा सा निजी पुस्तकालय या अध्ययन कक्ष (Study Room) था, जो ज़मीन से थोड़ा नीचे बना हुआ था। चारों ओर लकड़ी की अलमारियाँ थीं, जिनमें दीमकों की भेंट चढ़ चुकी कुछ किताबें और चमड़े के बाइंडिंग वाले रजिस्टर रखे थे।

कमरे के बीचों-बीच एक भारी मेज थी, जिस पर एक पीतल का दीपक और एक धूल से ढकी स्याही की दवात रखी थी।

"यह अद्भुत है!" मीरा ने फुसफुसाते हुए कहा। उसने टॉर्च की रोशनी में उड़ते धूल के कणों की एक फोटो ली। "आर्यन, देखो! ऐसा लग रहा है जैसे यहाँ वक़्त थम गया है। कोई यहाँ से बस अभी उठकर गया हो।"

आर्यन मेज के पास पहुँचा। उसकी उंगलियाँ मेज की सतह पर जमी धूल को सहलाने लगीं। उसने देखा कि मेज की दराज थोड़ी खुली हुई थी। जब

उसने उसे खींचा, तो अंदर कुछ पुराने कागज़ात और एक मखमली डिब्बी मिली।

"क्या मिला?" मीरा करीब आई, इतनी करीब कि आर्यन उसके बालों से आ रही चमेली की हल्की खुशबू को फिर से महसूस कर पा रहा था।

आर्यन ने वह डिब्बी खोली। अंदर एक पुरानी चांदी की घड़ी थी, जो बंद पड़ चुकी थी, और उसके नीचे एक मुड़ा हुआ कागज़ था। उसने कागज़ खोला—वह एक खत था, जिसकी स्याही वक़्त के साथ फीकी पड़ चुकी थी।

"अगर इन दीवारों को फिर से बनाया जाए, तो याद रखना कि प्रेम की नींव ईंटों से नहीं, भरोसे से होती है…"

आर्यन ने खत के उन शब्दों को पढ़ा और ठिठक गया। खत की आखिरी पंक्ति के नीचे, जहाँ स्याही थोड़ी फैली हुई थी, आर्यन को एक छोटा सा हाथ से बना 'नक्शा' (Symbol) दिखा। वह एक त्रिकोण था जिसके भीतर एक आँख बनी थी। आर्यन का माथा ठनका—यह वही चिन्ह था जो उसने 'प्रहरी' नाम की गुप्तचर एजेंसी की पुरानी फाइलों में देखा था। उसे लगा जैसे यह संदेश सीधा उसे संबोधित कर रहा हो।

"यह कितना रोमांटिक है," मीरा ने भावुक होकर कहा। "शायद यह इस हवेली के पुराने मालिक ने अपनी पत्नी के लिए लिखा होगा।"

"यह सिर्फ प्रेम पत्र नहीं है," आर्यन बुदबुदाया, "यह एक कोड है। लोग अक्सर प्यार के नाम पर ऐसी बातें करते हैं, और फिर एक दिन सब छोड़कर चले जाते हैं।"

मीरा ने उसे गौर से देखा। "आप हर चीज़ को इतना कड़वा क्यों बना देते हैं, आर्यन? क्या आप वाकई मानते हैं कि दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं है?"

आर्यन ने टॉर्च की रोशनी सीधे दीवार पर डाली। ''मैंने अपनी आँखों से शानदार इमारतों को गिरते देखा है, मीरा। और उन रिश्तों को भी, जिनके बारे में लोग कसमें खाते थे। ये इमारतें हमें धोखा देती हैं, मीरा। ये खड़ी तो रहती हैं, पर इनके भीतर की रूह कब की मर चुकी होती है... बिल्कुल हमारी यादों की तरह।"

"स्थिरता भ्रम नहीं है, आर्यन। आपकी हिम्मत कम है,'' मीरा ने निडर होकर कहा। ''आप डरते हैं कि अगर आपने किसी पर भरोसा किया और वह टूट गया, तो आप खुद को फिर से जोड़ नहीं पाएंगे। इसीलिए आप इन पत्थरों के पीछे छिपते हैं।''

आर्यन का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। ''तुम मेरे बारे में कुछ नहीं जानती। तुम बस एक घुमक्कड़ फोटोग्राफर हो जो कुछ दिनों के लिए यहाँ आई है। तुम्हें क्या पता कि जब आपकी पूरी दुनिया एक पल में ढह जाती है, तो कैसा महसूस होता है?''

"मुझे पता है!'' मीरा चिल्लाई। उसकी आवाज़ में एक ऐसी खनक थी जिसने आर्यन को खामोश कर दिया। ''मुझे पता है क्योंकि मैंने अपने पिता को खोया है। मैंने देखा है कि कैसे एक हँसता-खेलता घर एक मलबे में तब्दील हो जाता है। लेकिन मैंने भागना नहीं चुना। मैंने उन यादों के रंगों को अपने कैमरे में कैद करना चुना ताकि मैं आगे बढ़ सकूँ।''

तहखाने में सन्नाटा छा गया। केवल उनकी भारी सांसों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। आर्यन की सख्त नज़रों में पहली बार ग्लानी (Guilt) के भाव आए। उसने नहीं सोचा था कि उस हँसमुख लड़की के पीछे इतना बड़ा दुख छिपा होगा।

"मुझे माफ कर दो,'' आर्यन ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा। ''मेरा मतलब तुम्हें चोट पहुँचाना नहीं था।''

मीरा ने अपनी आँखों के कोने पोंछे और एक फीकी मुस्कान दी। ''कोई बात नहीं। कभी-कभी गुस्सा सच उगलवा देता है।''

वह मेज के किनारे बैठ गई और अपनी टांगें झुलाने लगी। ''पता है आर्यन, यह हवेली भी आपकी तरह ही है। बाहर से बहुत मज़बूत और डरावनी, लेकिन अंदर बहुत सारी कहानियाँ और कोमलता छिपाए हुए। बस ज़रूरत है तो एक सही रोशनी की।''

आर्यन उसके पास जाकर खड़ा हो गया। इस बार उसने दूरी बनाने की कोशिश नहीं की। उसने देखा कि मीरा के हाथ थोड़े कांप रहे थे। बिना कुछ सोचे, उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा।

"हम इस हवेली को फिर से वैसा ही बनाएंगे, जैसा यह कभी थी,'' आर्यन ने नरमी से कहा। ''मैं वादा करता हूँ।''

मीरा ने उसकी तरफ देखा, उसकी आँखों में चमक वापस आ रही थी। ''सिर्फ हवेली को? या खुद को भी?''

आर्यन मुस्कुराया—एक असली, छोटी सी मुस्कुराहट। ''कोशिश करूँगा।''

तभी, अचानक ऊपर से एक ज़ोरदार कड़कड़ाहट सुनाई दी। मौसम अचानक बदल गया था। नीलपुरा की मशहूर मानसून की बारिश शुरू हो चुकी थी। तहखाने की छोटी सी खिड़की से बारिश की बूंदों की आवाज़ संगीत की तरह गूँजने लगी।

"लगता है हम यहाँ कुछ देर के लिए फंस गए हैं,'' मीरा ने खिड़की की ओर देखते हुए कहा।

"शायद यह उतनी बुरी बात भी नहीं है,'' आर्यन ने खत को अपनी जेब में रखते हुए कहा।

अध्याय 4
बारिश की गूँज और भीगी हुई यादें

तहखाने की उस संकरी खिड़की से आती बारिश की सोंधी महक ने पूरी हवेली को अपनी आगोश में ले लिया था। हवेली की ऊँची छतों पर बारिश की बूंदें किसी युद्ध के नगाड़ों की तरह बज रही थीं। तहखाने की दीवारों से रिसता हुआ पानी मशाल की हल्की रोशनी में आंसुओं की तरह चमक रहा था। बाहर बिजली की हर कड़क के साथ हवेली के अंधेरे कोनों में डरावनी आकृतियाँ बनती और बिगड़ती थीं। आर्यन ने आग सुलझाई, जिसकी नारंगी लपटें मीरा के चेहरे पर नाच रही थीं, जिससे उसकी आँखों की चमक और गहरी लग रही थी। "लगता है आज प्रकृति ने तय कर लिया है कि हमें यहीं रुकना होगा," मीरा ने खिड़की से गिरती बूंदों को देखते हुए कहा।

आर्यन ने अपनी घड़ी देखी। "शाम के सात बज रहे हैं। इस मूसलाधार बारिश में सीढ़ियों से उतरना और शहर तक जाना खतरे से खाली नहीं है। ढलान वाली सड़कों पर पानी भर गया होगा।"

उसने तहखाने के एक कोने में रखे पुराने लकड़ी के बक्सों को झाड़कर बैठने लायक जगह बनाई। उसने अपनी जैकेट उतारकर मीरा की ओर बढ़ाई। "इसे पहन लो, यहाँ सीलन है, ठंड लग सकती है।"

मीरा ने बिना किसी बहस के जैकेट ले ली। आर्यन की जैकेट से तंबाकू की हल्की महक और किसी महंगे परफ्यूम की गंध आ रही थी—एक ऐसी महक जो सुरक्षा का एहसास कराती थी। हवेली की बिजली सालों पहले कट चुकी थी। आर्यन ने अपने बैग से एक इमरजेंसी लैंप निकाला और उसे मेज पर रख दिया। उसकी मद्धम पीली रोशनी ने कमरे की दीवारों पर लंबी-लंबी परछाइयां बना दीं।

"तुम्हें डर नहीं लगता?" आर्यन ने पूछा, जब उसने देखा कि मीरा बहुत शांति से उस पुराने खत को फिर से पढ़ रही है।

"किससे? अंधेरे से या खामोशी से?" मीरा ने सिर उठाकर पूछा। "डर तो तब लगता है जब आपके अंदर बहुत शोर हो। बाहर की दुनिया तो बस एक आईना है।"

आर्यन उसकी बात पर कुछ नहीं बोला। उसने तहखाने में बिखरी सूखी लकड़ियों और पुराने अखबारों का एक छोटा सा ढेर बनाया। अपनी लाइटर से उसने आग जलाई। आग की लपटें नाचने लगीं, जिससे कमरे में एक गर्माहट फैल गई।

वे दोनों आग के पास आमने-सामने बैठ गए। बाहर बारिश का शोर अब एक लयबद्ध संगीत बन चुका था।

"उस खत में क्या लिखा था, जो तुमने अपनी जेब में रखा?" मीरा ने धीरे से पूछा।

आर्यन थोड़ा हिचकिचाया, फिर उसने वह मुड़ा हुआ कागज़ निकाला। "यह प्यार के बारे में नहीं था मीरा, यह खोने के बारे में था। इसमें लिखा है कि कैसे इस हवेली को बनाने वाले ने इसे अपनी पत्नी की याद में बनाया था, जो इसे कभी देख ही नहीं पाई।"

वह रुका, आग की लपटों में खो गया। "मेरा अतीत भी कुछ ऐसा ही है। मैं इमारतें बनाता रहा, यह सोचकर कि एक दिन मैं और अनन्या उनमें अपना घर बनाएंगे। लेकिन जिस दिन मेरी पहली बड़ी बिल्डिंग का उद्घाटन था, उसी दिन उसने मुझे बताया कि वह किसी और के साथ शहर छोड़कर जा रही है।"

मीरा खामोश रही। उसे पता था कि इस वक़्त शब्द कम और मौजूदगी ज़्यादा मायने रखती है।

आर्यन: (आग की ओर शून्य में देखते हुए) "अनन्या कहती थी कि मैं एक 'परफेक्ट' नक्शा तो बना सकता हूँ, पर मैं एक अधूरा इंसान हूँ। उसे लगा

कि मेरे सीने में धड़कन नहीं, बल्कि कंक्रीट का कोई ब्लॉक है। शायद वह सही थी, मीरा... मैं जज़्बात नहीं, सिर्फ दीवारें बनाना जानता हूँ।"

मीरा: (उसका हाथ थामते हुए, कोमलता से) ''दीवारें इसलिए नहीं बनाई जातीं कि आप बाहर वालों को रोक सकें आर्यन, बल्कि इसलिए बनाई जाती हैं क्योंकि आप अंदर के किसी 'डर' को छिपाना चाहते हैं। अनन्या ने दीवार देखी, पर मैंने आज उस गिरते हुए पत्थर के नीचे आपकी वह धड़कन महसूस की है जो किसी को बचाने के लिए बेताब थी।"

आर्यन: (तंज के साथ, पर धीमी आवाज़ में) ''तुम फोटोग्राफर हो मीरा, साइकोलॉजिस्ट नहीं। तस्वीरों में रंग भरना आसान है, पर उजड़ी हुई ज़िंदगी में नहीं।''

मीरा ने आग में एक लकड़ी डाली। ''पता है आर्यन, मेरे पिता हमेशा कहते थे कि जो चीज़ें हम कहते नहीं हैं, वे हमारे अंदर जहर बन जाती हैं। जब वे बॉर्डर पर थे, तो हर रोज़ मेरी माँ को एक छोटी सी चिट्ठी लिखते थे। सिर्फ यह कहने के लिए कि 'मैं ठीक हूँ और तुम्हें याद करता हूँ'।''

उसकी आँखों में आँसू की एक पतली लकीर चमक उठी। ''जब वे शहीद हुए, तो माँ ने उन चिट्ठियों को जलाया नहीं। उन्होंने उन्हें एक बक्से में रखा और मुझसे कहा—'मीरा, इंसान चला जाता है, लेकिन उसके शब्द हमेशा घर की छत की तरह हमें सुरक्षा देते हैं'।''

मीरा ने आर्यन की तरफ देखा। ''मैं भागती नहीं हूँ आर्यन। मैं बस हर उस जगह को अपना घर बनाना चाहती हूँ जहाँ मैं जाती हूँ। क्योंकि मुझे पता है कि घर किसी पते का नाम नहीं, उस इंसान का नाम है जिसके साथ आप खामोश भी रह सकें।'' आर्यन ने पहली बार महसूस किया कि उसकी दुनिया कितनी छोटी थी। वह सिर्फ सफलताओं और असफलताओं के बीच जी रहा था, जबकि मीरा हर लम्हे को एक अनुभव की तरह जी रही थी।

उसने अपना हाथ धीरे से आगे बढ़ाया और मीरा की हथेली पर रख दिया। मीरा के हाथ ठंडे थे।

"तुमने कहा था कि पत्थरों को सही रोशनी में देखना चाहिए," आर्यन ने कहा। "आज मुझे लग रहा है कि शायद मैं अपनी ज़िंदगी को गलत रोशनी में देख रहा था।"

मीरा ने अपना हाथ नहीं हटाया। उसने अपनी उंगलियाँ आर्यन की उंगलियों में फंसा दीं। "अभी बहुत कुछ देखना बाकी है, आर्यन। यह हवेली, यह बारिश, और यह शहर… ये सब तुम्हें कुछ देना चाहते हैं। बस अपना हाथ बढ़ाकर उन्हें थाम लो।"

रात गहराती गई। बाहर बारिश थोड़ी धीमी हुई थी, लेकिन खत्म नहीं। तहखाने की उस छोटी सी दुनिया में, दो अजनबी अब अजनबी नहीं रहे थे। आर्यन को महसूस हुआ कि उसके दिल की वह सख्त दीवार, जिसे उसने सालों में बनाया था, अब धीरे-धीरे दरक रही थी।

"मीरा?" आर्यन ने पुकारा।

"हम्म?" मीरा ने उसकी जैकेट में खुद को समेटते हुए जवाब दिया।

"शुक्रिया। यहाँ मेरे साथ रुकने के लिए।"

मीरा ने मुस्कुराते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं। "मैंने कहा था न मिस्टर खड़ूस, नीलपुरा आपको बदलना जानता है।"

आर्यन भी मुस्कुरा दिया। उसने तय किया कि कल जब सूरज उगेगा, तो वह सूर्यगढ़ हवेली के नक्शे में कुछ नए बदलाव करेगा—कुछ ऐसी जगहें जहाँ रोशनी सीधे दिल तक पहुँच सके।

अध्याय 5
सुबह की ओस और पुराने साये

रात भर की बारिश के बाद, नीलपुरा की सुबह धुली-धुली सी और ताज़ा थी। सूर्यगढ़ हवेली की गीली दीवारों से भाप उठ रही थी। तहखाने की आग अब राख में बदल चुकी थी, लेकिन उस कमरे में अभी भी एक अनकही गर्माहट बाकी थी।

आर्यन की आँख खुली तो उसने देखा कि मीरा अभी भी उसकी जैकेट में लिपटी, मेज के सहारे सो रही थी। उसके चेहरे पर एक अजीब सी मासूमियत थी, जो उसकी दिन भर की चुलबुली बातों से बिल्कुल अलग थी। आर्यन ने उसे जगाना ठीक नहीं समझा। उसने चुपचाप उठकर खिड़की से बाहर देखा—सूरज की पहली किरण दर्पण झील पर सोने की परत चढ़ा रही थी।

उसने अपना फोन चेक किया। रात भर नेटवर्क गायब था, लेकिन अब सिग्नल्स वापस आ गए थे। जैसे ही फोन ऑन हुआ, नोटिफिकेशन्स की बाढ़ आ गई। लेकिन एक नाम देखकर आर्यन के हाथ ठिठक गए।

"अनन्या: 5 मिस्ड कॉल्स।"

आर्यन के चेहरे की सख़्ती वापस लौट आई। उसने फोन को ज़ोर से बंद किया और अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। तीन साल… तीन साल तक कोई खबर नहीं, और आज जब वह थोड़ा संभल रहा था, तो वह फिर से उसकी ज़िंदगी के दरवाजे पर दस्तक दे रही थी।

"इतनी जल्दी उठ गए?" मीरा की नींद भरी आवाज़ ने उसे वर्तमान में वापस खींचा।

आर्यन ने खुद को सामान्य दिखाने की कोशिश की। “हाँ, धूप निकल आई है। हमें यहाँ से निकलना चाहिए, इससे पहले कि मज़दूर और कॉन्ट्रैक्टर यहाँ पहुँचें।”

मीरा ने उसे गौर से देखा। “सब ठीक है? आपकी शक्ल ऐसी लग रही है जैसे आपने कोई भूत देख लिया हो।”

"मैं ठीक हूँ मीरा। चलो,” आर्यन का स्वर फिर से वही औपचारिक और ठंडा हो गया था जो उसने नीलपुरा आने के पहले दिन रखा था।

मीरा को बुरा लगा। कल रात की वह नज़दीकी, वह बातें... क्या वह सब सिर्फ उस बारिश का असर था? वह खामोशी से अपना कैमरा बैग उठाकर उसके पीछे चल दी।

हवेली के मुख्य द्वार पर पहुँचते ही उन्होंने देखा कि वहाँ एक सफेद रंग की एसयूवी खड़ी थी। गाड़ी के पास एक महिला खड़ी थी, जिसने पेस्टल पिंक कलर की फॉर्मल ड्रेस पहनी थी और आँखों पर बड़े सनग्लासेस थे। वह फोन पर किसी से ऊंची आवाज़ में बात कर रही थी।

आर्यन के कदम वहीं रुक गए।

"आर्यन?” वह महिला मुड़ी और उसकी आँखों से चश्मा हट गया।

वह अनन्या थी।

मीरा ने आर्यन की तरफ देखा और फिर उस महिला की तरफ। अनन्या की खूबसूरती में एक शहरी चमक थी, एक ऐसा आत्मविश्वास जो किसी को भी प्रभावित कर दे। लेकिन आर्यन की आँखों में उसके लिए सिर्फ शून्य था।

"अनन्या? तुम यहाँ क्या कर रही हो?” आर्यन की आवाज़ में नफरत से ज़्यादा थकान थी।

"मैं अपनी फर्म ’क्रिएटिव स्पेसेस’ की तरफ से आई हूँ, आर्यन। मुझे पता चला कि सूर्यगढ़ हवेली का परियोजना तुम्हें मिला है,” अनन्या ने मुस्कुराते

हुए कहा, जैसे उनके बीच कुछ हुआ ही न हो। “क्लाइंट ने हमारी फर्म को ’इंटीरियर और लैंडस्केपिंग’ के लिए हायर किया है। अब हम इस परियोजना पर साथ काम करेंगे।”

आर्यन को लगा जैसे किसी ने उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली हो। ”यह मुमकिन नहीं है। मैंने अकेले काम करने की शर्त रखी थी।”

"बोर्ड मीटिंग में फैसले बदल जाते हैं, आर्यन। और वैसे भी, हम पुराने पार्टनर्स हैं, काम बेहतर होगा,” अनन्या ने फिर मीरा की तरफ देखते हुए पूछा, “और ये? तुम्हारी नई असिस्टेंट?”

आर्यन कुछ बोलता, उससे पहले मीरा आगे बढ़ी। उसने अनन्या की आँखों में सीधे देखते हुए हाथ बढ़ाया। “मेरा नाम मीरा है। मैं इस परियोजना की लीड विज़ुअल डॉक्यूमेंटेशन एक्सपर्ट हूँ। और आर्यन का काम इतना शानदार है कि उसे किसी ’असिस्टेंट’ की ज़रूरत नहीं पड़ती, शायद इसीलिए क्लाइंट ने उन्हें चुना।”

अनन्या की मुस्कान थोड़ी फीकी पड़ गई। उसने मीरा से हाथ नहीं मिलाया, बस एक सरसरी निगाह उसपर डाली। “इंटरेस्टिंग! खैर, आर्यन! हमें बहुत कुछ डिस्कस करना है। क्या हम कहीं बैठकर बात कर सकते हैं? अकेले में?”

आर्यन ने मीरा की तरफ देखा। मीरा की आँखों में उसे एक उम्मीद दिखी, शायद वह चाहती थी कि आर्यन उसे मना कर दे। लेकिन आर्यन के अंदर का आर्किटेक्ट और उसका टूटा हुआ अतीत उसे उलझा रहा था।

"मीरा, तुम होटल जाओ। मैं शाम को मिलता हूँ,” आर्यन ने अपनी नज़रें झुकाते हुए कहा।

मीरा का दिल जैसे डूब गया। उसने बस एक बार सिर हिलाया और बिना पीछे मुड़े वहाँ से तेज़ी से चली गई। उसे लगा जैसे उस बारिश वाली रात का

जादू एक पल में टूट गया हो। हवेली के उसी हॉल में जहाँ कल मीरा के साथ हँसी-मजाक हुआ था, अब आर्यन और अनन्या आमने-सामने थे।

"क्यों आई हो तुम यहाँ, अनन्या?", आर्यन ने दीवार की तरफ पीठ करके पूछा।

"सच कहूँ, तो मैं देखना चाहती थी कि तुम अभी भी उस पुराने ज़ख्म को लेकर बैठे हो या आगे बढ़ गए...", अनन्या ने उसके करीब आते हुए कहा। "मैंने गलती की थी आर्यन, मैं मानती हूँ। पर क्या हम एक नई शुरुआत नहीं कर सकते? यह परियोजना हमारे लिए एक मौका है!"

"यह परियोजना मेरे लिए सिर्फ काम है, अनन्या... और तुम्हारे लिए यह शायद सिर्फ एक बिज़नेस डील है!", आर्यन ने मुड़कर उसे देखा, "पर याद रखना, मैं अब वह आर्यन नहीं हूँ जिसे तुम जानती थी"।

उधर मीरा झील के किनारे बैठी अपने कैमरे के लेंस को साफ कर रही थी। उसकी आँखें गीली थीं। उसे गुस्सा खुद पर था किउसने एक ऐसे पत्थर से दिल लगाने की कोशिश ही क्यों की, जिसका अतीत अभी भी उसके वर्तमान पर हावी था।

अध्याय 6
बिसात और बेबसी

नीलपुरा की हवा में अब वह सोंधी महक नहीं थी, जो कल तक मीरा को सुकून दे रही थी। आज सुबह की धूप उसे चुभ रही थी। सूर्यगढ़ हवेली के बरामदे में खड़े होकर वह दूर से आर्यन और अनन्या को देख रही थी। वे दोनों नक्शों पर सिर झुकाए कुछ चर्चा कर रहे थे। अनन्या का हाथ बात-बात पर आर्यन के कंधे को छू जाता और आर्यन... आर्यन ने एक बार भी उसे मना नहीं किया।

अनन्या एक सधी हुई खिलाड़ी थी। वह जानती थी कि आर्यन को कैसे प्रभावित करना है। लंच ब्रेक के दौरान जब मीरा अपना कैमरा बैग समेट रही थी, अनन्या उसके पास आई।

"तुम्हारी तस्वीरें अच्छी हैं, मीरा!", अनन्या ने अपने आईफोन की स्क्रीन देखते हुए कहा। उसकी आवाज़ में बनावटी तारीफ थी, ''लेकिन आर्यन को 'परफेक्शन' पसंद है, 'इमोशन्स' नहीं। उसे लगता है कि तुम्हारी फोटोग्राफी थोड़ी... बचकानी है! उसने आज सुबह मुझसे कहा कि उसे इस परियोजना के लिए किसी प्रोफेशनल केंद्र-प्रस्थ बेस्ड फोटोग्राफर को बुलाना चाहिए था"।

मीरा का हाथ ठिठक गया, "आर्यन ने ऐसा कहा?"

"बुरा मत मानना", अनन्या ने कंधा उचकाया, "वह काम को लेकर बहुत सख्त है। हम जब केंद्र-प्रस्थ में साथ थे, तब भी वह ऐसा ही था। वैसे भी, पुराने रिश्ते कभी पूरी तरह खत्म नहीं होते, है न?" उसने अपनी अँगुली की उस अँगूठी को घुमाया, जिसे आर्यन ने कभी उसे दिया था। दोपहर के वक़्त

अनन्या ने आर्यन के फोन से खेल शुरु किया। जब आर्यन साइट के दूसरे हिस्से में था, अनन्या ने उसके फोन से मीरा को एक मैसेज भेजा —

"मीरा, मुझे लगता है तुम्हें आज का शूट कैंसिल कर देना चाहिए। मैं अनन्या के साथ कुछ निजी फाइल्स पर काम कर रहा हूँ। तुम्हारी मौजूदगी अभी डिस्टर्बिंग हो सकती है"।

मीरा ने जब यह मैसेज पढ़ा, तो उसे लगा जैसे किसी ने उसके सीने पर पत्थर रख दिया हो। कल रात जो इंसान कह रहा था कि ’मैं कोशिश करूँगा’, आज वह उसे ’डिस्टर्बिंग’ कह रहा था? शाम के धुंधलके में अनन्या ने आर्यन को हवेली के पिछले हिस्से में बुलाया, ”आर्यन, देखो यहाँ दरारें पड़ रही हैं”।

शाम के वक़्त मीरा अपनी सहेली ज़ोया के पास जाने के लिए निकली, लेकिन अपना एक लेंस हवेली के पिछले कमरे में भूल गई थी। जब वह वापस पहुँची, तो उसने जो देखा उसने उसका दिल तोड़ दिया। उसने देखा कि आर्यन ने अनन्या को थामा हुआ है। उसे आर्यन के चेहरे का वह भाव नहीं दिखा, जो अनन्या को दूर धकेलना चाह रहा था, उसे सिर्फ उनकी नज़दीकी दिखी।

मीरा के हाथ से लेंस का कैप गिर गया। आर्यन चौंका, उसकी नज़र मीरा से मिली।

आर्यन: ”मीरा! यह वह नहीं है, जो तुम सोच रही हो…"

लेकिन मीरा नहीं रुकी। वह तेज़ी से मुड़ी और अँधेरे गलियारे में ओझल हो गई।

अनन्या (आर्यन के कान में फुसफुसाते हुए): “जाने दो उसे, आर्यन! वह तुम्हारे लायक कभी थी ही नहीं। तुम और मैं… हम एक जैसे हैं”।

आर्यन ने झटके से अनन्या को पीछे हटाया। उसकी आँखों में इस बार खौफ नहीं, नफरत थी, “तुमने सब बर्बाद कर दिया, अनन्या.... सबकुछ!”

वह मीरा के पीछे भागा, लेकिन बाहर केवल बारिश की आवाज़ थी और मीरा की जीप के टायरों के निशान, जो धीरे-धीरे पानी में मिट रहे थे। आर्यन को अंदाज़ा भी नहीं था कि उसके पीछे क्या खेल रचा जा रहा है। वह अनन्या से दूरी बनाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन काम की मजबूरियाँ उसे बाँध रही थीं।

"अनन्या, प्लीज! हम यहाँ सिर्फ काम के लिए हैं", आर्यन ने उसे खुद से दूर करते हुए कहा।

"आर्यन, तुम उस लड़की (मीरा) की वजह से मुझसे दूर भाग रहे हो? वह तुम्हें नहीं जानती, आर्यन! वह सिर्फ तुम्हारी कामयाबी से प्यार करती है। मैं तुम्हारी तकलीफ जानती हूँ...", अनन्या ने उसके दिमाग में ज़हर घोलना जारी रखा।

रात को आर्यन ने मीरा को कई बार फोन किया, लेकिन मीरा ने फोन नहीं उठाया। वह दर्पण झील के उसी किनारे बैठी थी, जहाँ वे पहली बार मिले थे। लेकिन आज दर्पण का पानी शांत नहीं था, उसमें मीरा के आँसुओं की लहरें थीं।

तभी ज़ोया का फोन आया, ''मीरा, तू कहाँ है? आर्यन का फोन आया था, वह परेशान लग रहा है"।

"उसे परेशान रहने दो, ज़ोया!", मीरा ने रुँधे हुए गले से कहा, ''उसने अपनी 'परफेक्ट' दुनिया चुन ली है। मैं तो बस उस पुरानी हवेली की धूल की तरह थी, जिसे उसने झाड़कर साफ कर दिया"।अगली सुबह आर्यन जब हवेली पहुँचा, तो उसे मीरा नहीं मिली। मेज पर एक छोटा-सा नोट रखा था और मीरा का आई-कार्ड।

नोट में लिखा था — "पत्थरों को सही रोशनी में देखना चाहिए, आर्यन! लेकिन शायद मेरी रोशनी आपकी दीवारों के लिए बहुत कम थी। गुडबाय।!"

आर्यन ने गुस्से में अनन्या की तरफ देखा, जो कोने में खड़ी मुस्कुरा रही थी। उसे समझ आ गया था कि कुछ बहुत गलत हो गया है।

अध्याय 7
टूटे हुए नक्शे और अधूरी तस्वीरें

नीलपुरा की वह रात सामान्य नहीं थी। हवा में एक भारीपन था, जैसे शहर की झीलें भी आज किसी का शोक मना रही हों। सूर्यगढ़ हवेली, जो कल तक उम्मीदों की नई रोशनी से नहा रही थी, आज फिर से अपने पुराने अँधेरों में डूब गई थी।

आर्यन अपने होटल के कमरे में था, लेकिन कमरा उसे किसी जेल की कोठरी जैसा महसूस हो रहा था। उसने लाइट नहीं जलाई थी। मेज पर रखा लैंप हल्की पीली रोशनी दे रहा था, जो उसके चेहरे की लकीरों को और गहरा दिखा रही थी।

आर्यन के दिमाग में एक युद्ध चल रहा था। एक तरफ अनन्या की वह धूर्त मुस्कान थी और दूसरी तरफ मीरा की वह नम आँखें, जिनमें उसने अपने लिए नफरत और तिरस्कार देखा था। उसने अपनी आँखें मूँद लीं, तो उसे अतीत के डरावने सपने फिर से घेरने लगे। उसे याद आया केंद्र-प्रस्थ का वह आखिरी दिन, जब अनन्या ने उससे कहा था, ”आर्यन, तुम एक बहुत अच्छे आर्किटेक्ट हो सकते हो, पर तुम एक सफल इंसान कभी नहीं बन सकते क्योंकि तुम भावनाओं के बोझ तले दबे हो”।

उसे लगा, जैसे वह फिर से उसी मलबे में दब रहा है। उसने अचानक मेज पर रखे उन नक्शों की ओर देखा जिन्हें उसने और मीरा ने मिलकर 'सूर्यगढ़ हवेली' के लिए फाइनल किया था। उन नक्शों में मीरा ने सुझाव दिया था कि कहाँ खिड़कियाँ होनी चाहिए, ताकि सुबह की पहली किरण सीधे आँगन में गिरे।

"सब झूठ है…!" — आर्यन गुर्राया।

उसने एक नक्शा उठाया और उसे बीच से फाड़ दिया। कागज के फटने की आवाज़ सन्नाटे को चीर गई। उसने एक के बाद एक सारे ब्लूप्रिंट्स उठाए और उन्हें टुकड़ों-टुकड़ों में तब्दील कर दिया। उसके हाथ काँप रहे थे। वह उन यादों को मिटाना चाहता था, जो मीरा के साथ जुड़ी थीं क्योंकि उसे लग रहा था कि वह मीरा के लायक कभी था ही नहीं।

"तुमने उसे जाने क्यों दिया, आर्यन?", उसने खुद से सवाल किया और गुस्से में मेज पर हाथ दे मारा। नक्शों के टुकड़े फर्श पर ऐसे बिखरे पड़े थे, जैसे किसी टूटे हुए दिल के अवशेष हों। उसे लगा कि वह जितनी कोशिश कर रहा है खुद को सँवारने की, अतीत उसे उतना ही गहरा खींच रहा है।

उधर, दर्पण झील के किनारे गणगौर घाट की सीढ़ियों पर मीरा अकेली बैठी थी। उसके गले में अभी भी वह कैमरा लटका था, जो उसकी दुनिया था। झील का पानी आज काला लग रहा था। बारिश थम चुकी थी, पर पत्तों से टपकती बूँदें मीरा के गालों पर गिर रहे आँसुओं से मुकाबला कर रही थीं।

उसने काँपते हाथों से अपना कैमरा ऑन किया। गैलरी खुलते ही सबसे पहली तस्वीर आर्यन की आई। वह तस्वीर, जो उसने हवेली की गैलरी में ली थी — आर्यन धूल के बीच खड़ा था, उसकी आँखों में एक अजीब-सी चमक थी।

मीरा का अँगूठा 'डिलीट' बटन पर गया — "हटा दो इसे, मीरा! वह भी वैसा ही निकला, जैसा तुमने सोचा था", उसने खुद को फुसफुसाकर कहा।

उसकी अँगुली बटन पर ठिठक गई। उसने आर्यन के चेहरे को ज़ूम किया। उसे वह पल याद आया जब आर्यन ने उसका हाथ पकड़कर उसे गिरने से बचाया था — " क्या वह स्पर्श भी झूठा था? क्या वह खत जो उन्होंने साथ पढ़ा था, वह भी एक इत्तेफाक था?"

उसने फिर से कोशिश की। “Are you sure you want to delete this photo?” — स्क्रीन पर फ्लैश हुआ। मीरा की हिचकी निकल गई। वह नहीं कर पा रही थी। आर्यन की वह तस्वीर उसके पास आखिरी सबूत थी कि उसने किसी पर भरोसा करने की हिम्मत की थी। उसने कैमरा अपनी छाती से लगा लिया और घुटनों में सिर देकर फूट-फूटकर रोने लगी।

उसे लगा कि नीलपुरा ने उसे बदला तो ज़रूर, पर शायद वह बदलाव उसे और अधिक तन्हा कर गया।

जब आर्यन और मीरा अपनी-अपनी तबाही का दुःख मना रहे थे, शहर के दूसरे हिस्से में एक आलीशान रेस्टोरेंट के अंधेरे कोने में अनन्या बैठी थी। उसके चेहरे पर एक ऐसी चमक थी, जो केवल किसी शिकार को फँसाने के बाद आती है।

उसने अपना फोन निकाला और एक अज्ञात नंबर डायल किया। कुछ रिंग्स के बाद दूसरी तरफ से एक भारी आवाज़ आई —

"हेलो...!”

अनन्या की आवाज़ में चाशनी जैसी मिठास थी, पर लहजा बर्फीला था — ”काम हो गया! आर्यन और उस फोटोग्राफर लड़की के बीच अब कभी कुछ ठीक नहीं होगा। मैंने बीज बो दिए हैं और फसल कटने को तैयार है”।

दूसरी तरफ से धीमी हँसी सुनाई दी — ”शानदार! लेकिन क्या तुम्हें यकीन है कि आर्यन शक नहीं करेगा?”

"आर्यन…?”, अनन्या ने अपनी शराब का गिलास घुमाया, ”वह अभी अपने अपराधबोध (guilt) और अतीत के बोझ तले दबा हुआ है। वह सोच रहा है कि मीरा उसे छोड़कर चली गई क्योंकि वह बुरा है। उसे सच कभी पता नहीं चलेगा। अब सूर्यगढ़ हवेली का परियोजना पूरी तरह हमारे हाथ में है। जैसा हमने तय किया था, रिटर्न में मुझे फर्म के 30% शेयर्स और इस हवेली का मालिकाना हक चाहिए!”

"तुम्हें मिल जाएगा! बस यह सुनिश्चित करो कि आर्किटेक्चरल अथॉरिटी से साइन आर्यन के ही हों, ताकि कल को अगर कुछ गलत हो, तो ज़िम्मेदार वह हो"।

"चिंता मत करो!", अनन्या ने फोन काटते हुए ठंडी मुस्कान दी, "आर्यन को बर्बाद करना मेरा पुराना शौक है और इस बार मैं इसमें मुनाफ़ा भी कमा रही हूँ"। रात और गहरी हो गई। आर्यन अपने बिखरे हुए नक्शों के बीच फर्श पर ही सो गया था। उसकी हथेलियों पर अभी भी कागज के रेशे चिपके थे। मीरा अभी भी झील के किनारे थी, उसकी आँखें सूज चुकी थीं और कैमरा बंद हो चुका था।

अनन्या ने अपनी जीत की अगली चाल चल दी थी। उसे नहीं पता था कि प्यार में टूटे हुए लोग जब सँभलते हैं, तो वे और भी खतरनाक हो जाते हैं। लेकिन अभी के लिए, सूर्यगढ़ हवेली के खंडहर गवाह थे कि कैसे एक खूबसूरत शुरुआत को एक सोची-समझी साज़िश ने निगल लिया था।

अध्याय 8
रेत के महल और ढलता सूरज

नीलपुरा की सुबह आज वैसी नहीं थी, जैसी मीरा को पसंद थी। सूरज की किरणों में वह गर्माहट नहीं थी, जो दिल को सुकून दे बल्कि एक ऐसी तपिश थी, जो घावों को और हरा कर रही थी। होटल के कमरे में बिखरे हुए नक्शों के टुकड़ों के बीच आर्यन की नींद टूटी। उसका सिर भारी था और गला सूखा हुआ। जैसे ही उसकी नज़र फर्श पर पड़े उन फटे हुए कागजों पर पड़ी, उसे रात की अपनी हरकत पर शर्मिंदगी महसूस हुई।

उसने काँपते हाथों से एक टुकड़ा उठाया। यह वह कोना था, जिसपर मीरा ने पेंसिल से एक छोटी-सी चिड़िया बनाई थी और लिखा था — "यहाँ से आसमान साफ दिखेगा!”

आर्यन की आँखों में अचानक बिजली-सी कौंधी — “अनन्या! कल शाम अनन्या का वह गिरना, उसका वह फोन कॉल और मीरा का ठीक उसी वक़्त वहाँ आना... क्या यह सब वाकई महज़ एक इत्तेफाक था?” उसने अपने फोन को उठाकर गौर से देखा। उसे याद आया कि उसने मीरा को कोई मैसेज नहीं भेजा था, फिर मीरा ने कल उसे ’डिस्टर्बिंग’ क्यों कहा था?

उसने अपना ’सेंड’ बॉक्स चेक किया। वहाँ एक मैसेज था, जो उसने कभी लिखा ही नहीं था। उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। अनन्या ने उसके फोन का इस्तेमाल किया था। उसने अनन्या के साथ बिताए उन तीन सालों को याद किया — वह हमेशा से ऐसी ही थी। लोगों के रिश्तों की नींव हिलाकर अपनी इमारत खड़ी करना उसकी पुरानी फितरत थी।

"मैं कितना बड़ा बेवकूफ हूँ!", आर्यन दहाड़ा। उसने अपनी जैकेट उठाई और पागलों की तरह बाहर की ओर भागा। उसे समझ आ गया था कि उसने एक असली इंसान को एक पुरानी परछाई के चक्कर में खो दिया है। उधर 'आर्टिस्ट्स नुक' के छोटे से कमरे में मीरा अपना सूटकेस पैक कर रही थी। उसके कपड़े तरतीब से नहीं, बल्कि बेतरतीब ढंग से भरे हुए थे, बिल्कुल उसकी मानसिक स्थिति की तरह।

ज़ोया उसके पास खड़ी थी, उसकी आँखों में फिक्र थी — "मीरा, एक बार उससे बात तो कर ले। ऐसे भागना क्या सही है?"

"यह भागना नहीं है, ज़ोया! यह खुद को और टूटने से बचाना है", मीरा ने बिना मुड़े कहा। उसकी आवाज़ सपाट थी, जैसे सारी भावनाएँ कल रात झील में बह गई हों,"मैंने यहाँ की दीवारों को सुनने की कोशिश की, लेकिन मैं इंसान की फितरत पढ़ना भूल गई। आर्यन अपनी पुरानी दुनिया में खुश है और मैं उसकी दुनिया का कोई हिस्सा नहीं बनना चाहती।"

उसने अपना कैमरा बैग उठाया। एक पल के लिए वह रुकी, कैमरे को देखा और फिर उसे मेज पर ही छोड़ दिया।

"इसे रख ले, ज़ोया! मैं इसे साथ नहीं ले जाना चाहती। इसकी हर फोटो में अब सिर्फ वही दिखता है"।

"मीरा, तू पागल हो गई है? यह कैमरा तेरी जान है!", ज़ोया चिल्लाई।

"अब नहीं!", मीरा ने अपना बैग उठाया और बाहर खड़ी टैक्सी की ओर चल दी। उसने एक बार भी पीछे मुड़कर उस शहर को नहीं देखा, जिसे उसने अपना घर मानने की गलती की थी। आर्यन अपनी कार तेज़ी से शहर की गलियों में दौड़ा रहा था। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। वह मीरा के कैफे पहुँचा, लेकिन वहाँ ताला लटका था। उसने ज़ोया को फोन किया,

"ज़ोया! मीरा कहाँ है? मुझे उसे सब बताना होगा! अनन्या ने…"।

"देर कर दी तुमने, आर्यन!", ज़ोया की आवाज़ में कड़वाहट थी, ''वह नीलपुरा छोड़ रही है। वह स्टेशन के लिए निकल चुकी है और शायद वह तुम्हें कभी माफ न करे क्योंकि तुमने उसके भरोसे का नहीं, उसकी मासूमियत का कत्ल किया है!"

आर्यन ने फोन फेंका और एक्सीलरेटर पर पैर दबा दिया। उसके दिमाग में सिर्फ एक ही बात घूम रही थी — मीरा का वह आखिरी नोट। वह उसे जाने नहीं दे सकता था। उसे.... उस 'खड़ूस आर्किटेक्ट' को फिर से उस 'बेपरवाह मीरा' की ज़रूरत थी।

रास्ते में उसे वही पुराना मोड़ दिखा, जहाँ उसने पहली बार मीरा को देखा था। सूरज ढलने को था और आसमान का रंग वैसा ही गहरा लाल था, जैसा मीरा के कुर्ते का रंग हुआ करता था। स्टेशन पर शोर था, लेकिन आर्यन को सिर्फ अपनी धड़कनें सुनाई दे रही थीं। वह पागलों की तरह प्लेटफार्म नंबर-2 की ओर भागा। सामने 'मार्तंड एक्सप्रेस' खड़ी थी, जो बस चलने ही वाली थी।

उसकी नज़रें भीड़ को चीरती हुई उस नीले कुर्ते को ढूँढ रही थीं। तभी उसने देखा कि खिड़की के पास मीरा बैठी थी। उसकी नज़रें बाहर की ओर थीं, लेकिन आँखों में कोई चमक नहीं थी।

"मीरा...!", आर्यन चिल्लाया।

ट्रेन ने लंबी सीटी बजाई और धीरे-धीरे सरकने लगी। मीरा ने आवाज़ सुनी। उसने खिड़की से बाहर देखा। आर्यन ट्रेन के साथ-साथ दौड़ रहा था। उसके चेहरे पर पसीना था और आँखों में वे आँसू जिन्हें उसने सालों से छुपा कर रखा था।

"मीरा, रुक जाओ! अनन्या ने वह मैसेज भेजा था, मैंने नहीं! मुझे एक मौका दो!", आर्यन हाँफते हुए चिल्ला रहा था।

मीरा ने उसे देखा। एक पल के लिए उसकी आँखों में वही पुरानी गहराई लौटी, लेकिन फिर उसने अपनी नज़रें फेर लीं और खिड़की का शीशा नीचे गिरा दिया।

ट्रेन की रफ्तार बढ़ गई। आर्यन प्लेटफॉर्म के कोने तक दौड़ता रहा और फिर रुक गया। वह वहीं घुटनों के बल बैठ गया, जबकि ट्रेन उसे धुएँ और सन्नाटे के पीछे छोड़कर दूर निकल गई। आर्यन अभी भी प्लेटफॉर्म पर बैठा था, जब उसके फोन पर एक नोटिफिकेशन आया। यह अनन्या का नहीं था। यह मीरा का एक शेड्यूल किया हुआ ईमेल था, जो उसने स्टेशन पहुँचते ही भेजा था।

ईमेल का विषय था — ''सूर्यगढ़ हवेली का आखिरी शॉट!"

आर्यन ने काँपते हाथों से ईमेल खोला। उसमें एक अटैचमेंट था — एक तस्वीर। वह आर्यन की तस्वीर नहीं थी, बल्कि हवेली के उस पुराने तहखाने की थी जिसे उन्होंने साथ खोजा था। लेकिन उस तस्वीर में मीरा ने एक एडिटिंग की थी... उसने तस्वीर के नीचे एक छोटा-सा कोना खाली छोड़ दिया था और वहाँ लिखा था —

"इमारत तो बन जाएगी, आर्यन! पर उस घर का क्या करोगे जिसकी रूह को तुमने खुद ही बेदखल कर दिया?''

आर्यन ने अपना सिर हाथों में थाम लिया। ट्रेन जा चुकी थी और उसके साथ वह 'रोशनी' भी, जिसकी तलाश में वह नीलपुरा आया था।

अध्याय 9
वक़्त की धूल और नई दीवारें

छह महीने बीत चुके थे। समय के बारे में सबसे क्रूर और सबसे अच्छी बात यही है कि यह रुकता नहीं। नीलपुरा की गलियों में अब मानसून की विदाई हो चुकी थी और सर्दियों की हल्की गुलाबी ठंड ने दस्तक दे दी थी। लेकिन आर्यन और मीरा के लिए, दुनिया अब वह नहीं थी, जो छह महीने पहले हुआ करती थी।

केंद्र-प्रस्थ के एक पॉश ऑफिस की 14वीं मंजिल पर आर्यन खड़ा था। बाहर शहर की कंक्रीट की दुनिया फैली हुई थी, लेकिन आर्यन का कमरा अब बदला हुआ था। उसकी मेज पर अब केवल नक्शे नहीं थे, बल्कि कुछ गमले थे जिनमें छोटे-छोटे पौधे पनप रहे थे — एक आदत जो उसने मीरा से सीखी थी।

इन छह महीनों में आर्यन ने खुद को पूरी तरह काम में झोंक दिया था, पर एक अलग अंदाज़ में। उसने ’सूर्यगढ़ हवेली’ की परियोजना पूरा कर ली थी, लेकिन अनन्या के फर्म के साथ नहीं। उसने अनन्या की साजिशों के सबूत क्लाइंट्स को सौंप दिए थे, जिससे अनन्या का करियर ढलान पर आ गया था।

आर्यन अब ’खड़ूस आर्किटेक्ट’ नहीं रहा था। वह अपनी साइट्स पर मज़दूरों के साथ बैठकर चाय पीता, उनकी कहानियाँ सुनता। उसने महसूस किया था कि इमारतें केवल ईंटों से नहीं, उनमें रहने वाले और उन्हें बनाने वाले लोगों की रूह से बनती हैं। उसकी आँखों की वह सख़्ती अब एक शांत गहराई में बदल चुकी थी। उसने अपनी मेज की दराज में आज भी मीरा का

वह आखिरी ईमेल सहेज कर रखा था। वह हर रात उसे पढ़ता, मानो वह उसका 'नैतिक कम्पास' (moral compass) हो।

नीलपुरा से सैकड़ों मील दूर, मोक्षपुरी की तंग गलियों और गंगा के घाटों के बीच मीरा अपनी एक नई पहचान बना रही थी। उसने फोटोग्राफी नहीं छोड़ी थी, बल्कि उसे एक नया मकसद दे दिया था।

अब वह 'ग्लैमर' या 'मैगजीन' के लिए फोटो नहीं खींचती थी। वह 'अस्तित्व (Existence)' नाम से एक परियोजना पर काम कर रही थी, जिसमें वह घाटों पर रहने वाले उन लोगों की तस्वीरें लेती थी जिन्हें दुनिया भूल चुकी थी। उसने अपना पुराना कैमरा ज़ोया के पास ही रहने दिया था, अब उसके हाथ में एक नया कैमरा था, जो केवल वही देखता था जो वर्तमान में था।

मीरा अब पहले से ज्यादा शांत थी। उसकी हँसी में अब वह अल्हड़पन तो नहीं था, पर एक गहरा ठहराव था। वह अब किसी का इंतज़ार नहीं करती थी। उसने सीख लिया था कि अकेले चलना भी एक कला है। लेकिन कभी-कभी, जब वह दशाश्वमेध घाट पर शाम की आरती देख रही होती, तो दीयों की रोशनी में उसे दर्पण झील की वह शाम याद आ जाती। वह एक पल के लिए अपनी आँखें मूँद लेती और फिर एक गहरी साँस लेकर आगे बढ़ जाती।

एक सुबह मीरा अपनी गैलरी में बैठी थी। उसने अपनी तस्वीरों की एक छोटी-सी प्रदर्शनी लगाई थी। तभी उसकी नज़र एक लिफाफे पर पड़ी। वह एक निमंत्रण पत्र था — "नेशनल आर्किटेक्चर एंड हेरिटेज अवार्ड्स।"

अंदर एक नोट था — ''सूर्यगढ़ हवेली को 'बेस्ट रिस्टोरेशन परियोजना' का अवार्ड मिला है। मुख्य आर्किटेक्ट आर्यन खन्ना ने विशेष रूप से अनुरोध किया है कि इस परियोजना की ऑफिशियल फोटोग्राफर को भी सम्मानित किया जाए''।

मीरा का दिल एक पल के लिए तेज़ी से धड़का। छह महीने...! छह महीनों तक कोई संपर्क नहीं... और अब यह?” उसने कार्ड को किनारे रख दिया। उसका मन कह रहा था कि न जाए, पर उसकी आत्मा कह रही थी कि यह उसके काम का सम्मान है, किसी एहसान का नहीं।

केंद्र-प्रस्थ के उस अवार्ड फंक्शन की शाम में हॉल रोशनी से जगमगा रहा था। आर्यन स्टेज पर खड़ा था, उसके हाथ में ट्रॉफी थी। जब उसे बोलने का मौका मिला, तो उसने माइक सँभाला और पूरी भीड़ के सामने कहा —

"यह अवार्ड मेरा नहीं है। यह उस नज़रिए का है जिसने मुझे सिखाया कि पत्थरों को सही रोशनी में कैसे देखा जाता है। यह अवार्ड उस फोटोग्राफर के नाम है, जिसने इस हवेली की रूह को मुझसे पहले पहचान लिया था”।

मीरा हॉल के सबसे पीछे वाले कोने में खड़ी थी। उसने आर्यन को देखा। वह बदल गया था। उसकी बॉडी लैंग्वेज में अब वह अहंकार नहीं था। तभी आर्यन की नज़रें भीड़ को चीरती हुई सीधे मीरा से जा टकराईं।

हॉल की तालियों की गूँज उनके बीच के सन्नाटे को नहीं भर पा रही थी। आर्यन स्टेज से नीचे उतरा और सीधा मीरा की तरफ बढ़ने लगा। लोग रास्ता देते गए। मीरा अपनी जगह पर जमी रही। उसके पास भागने का विकल्प था, लेकिन आज उसने रुकना चुना।

आर्यन उसके सामने आकर रुका। उसने कोई माफी नहीं माँगी, कोई सफाई नहीं दी। उसने बस अपनी जेब से वह फटा हुआ नक्शा निकाला जिसे उसने छह महीने पहले फाड़ा था, लेकिन अब उसे टेप से जोड़ दिया गया था।

"तुमने कहा था कि पत्थरों को मोड़ने की ज़रूरत नहीं होती, बस सही रोशनी चाहिए”, आर्यन ने धीमी आवाज़ में कहा, ”मैंने वह रोशनी ढूँढ ली है, मीरा! क्या तुम मुझे एक बार फिर से उन आँखों से देखना चाहोगी?”

मीरा ने उस जुड़े हुए नक्शे को देखा और फिर आर्यन को। उसकी आँखों में एक आँसू तैर आया, पर इस बार वह दुख का नहीं था। मीरा ने अपना हाथ

बढ़ाया और उस नक्शे को छुआ, ''नक्शा तो जुड़ गया आर्यन, पर क्या तुम्हें लगता है कि टूटी हुई रूहें भी इतनी आसानी से जुड़ जाती हैं?''

आर्यन ने मुस्कुराते हुए कहा, ''आसानी से नहीं... पर अगर नींव मज़बूत हो, तो हम दोबारा निर्माण कर सकते हैं!''

तभी दूर से अनन्या की आवाज़ सुनाई दी, जो सुरक्षाकर्मियों से बहस कर रही थी, उसे अंदर आने की अनुमति नहीं थी। पर आर्यन और मीरा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी दुनिया अब उस अतीत से आगे बढ़ चुकी थी।

अध्याय 10
बिसात के मोहरे और अदृश्य दुश्मन

अवार्ड्स फंक्शन की वह चकाचौंध भरी रात आर्यन के लिए जितनी सुकूनदेह हो सकती थी, उससे कहीं ज्यादा वह एक आने वाले तूफान का संकेत बन गई। मीरा ने जब उसका हाथ छुआ था, तो आर्यन को लगा था कि उसने आधी जंग जीत ली है। पर उसे क्या पता था कि असली बिसात तो अब बिछी है, जहाँ मोहरे वह खुद और मीरा हैं।

अगली सुबह जब केंद्र-प्रस्थ में सूरज की पहली किरण आर्यन के अपार्टमेंट की खिड़की से टकराई, तो वह एक नई उम्मीद के साथ उठा। उसने मन ही मन तय कर लिया था कि वह आज ही मोक्षपुरी जाएगा और मीरा से माफी माँगकर उसे वापस लाएगा। लेकिन जैसे ही उसने अपने घर का मुख्य दरवाजा खोला, सामने दो पुलिस अधिकारी और एक वकील खड़े थे।

"मिस्टर आर्यन खन्ना?", वकील ने ठंडे लहजे में पूछा।

"जी, मैं ही हूँ! क्या बात है?", आर्यन का दिल बैठ गया।

"मैं 'मार्तंड हेरिटेज ट्रस्ट' का कानूनी सलाहकार हूँ। हमारे पास आपके खिलाफ एक गैर-जमानती वारंट और एफआईआर (FIR) की कॉपी है। आप पर सूर्यगढ़ हवेली के रेनोवेशन के दौरान वहाँ के गुप्त तहखाने से 15वीं शताब्दी की 'अष्टधातु' की प्राचीन मूर्तियाँ और बेशकीमती गहने चोरी करने का आरोप है"।

आर्यन के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। ''यह पागलपन है! मैंने कुछ चोरी नहीं की। मैंने तो उस हवेली को पुनर्जीवित किया है!''

"वह आप कोर्ट में कहिएगा, " पुलिस ऑफिसर ने सख्त लहजे में कहा। ''हमारे पास गवाह हैं जिन्होंने आपको और आपकी टीम को उन मूर्तियों को ट्रक में लोड करते देखा था... और ताज्जुब की बात यह है कि उन कागजात पर आपके ही हस्ताक्षर हैं, जिनमें उन मूर्तियों को 'मलबे' के रूप में बाहर भेजने की अनुमति दी गई है''।

आर्यन को अचानक अनन्या की वह मुस्कान याद आई। उसे समझ आ गया कि अनन्या ने उसके और मीरा के बीच सिर्फ दरार नहीं डाली थी, बल्कि उसे पूरी तरह बर्बाद करने का जाल बुना था।

मोक्षपुरी के सप्तधारा घाट पर मीरा अपनी सुबह की चाय पी रही थी। उसने कल रात आर्यन को जो जवाब दिया था, वह उसके दिल पर पत्थर रखने जैसा था। तभी उसके फोन पर एक न्यूज़ नोटिफिकेशन फ्लैश हुआ —

"प्रसिद्ध आर्किटेक्ट आर्यन खन्ना पर करोड़ों की प्राचीन कलाकृतियों की चोरी का आरोप। नीलपुरा पुलिस की केंद्र-प्रस्थ में दबिश!''

मीरा के हाथ से चाय का कुल्हड़ गिरकर चकनाचूर हो गया। वह काँपने लगी — ''नहीं… यह मुमकिन नहीं है!''

उसे तुरंत वह दिन याद आया, जब उसने और आर्यन ने उस तहखाने में वह पुरानी घड़ी और खत देखा था। आर्यन ने उन चीज़ों को कितनी पवित्रता से छुआ था। वह इंसान चोर नहीं हो सकता। मीरा ने तुरंत अपना लैपटॉप खोला और उन तस्वीरों को खंगालना शुरु किया, जो उसने उस गुप्त कमरे में ली थीं।

उसने देखा कि तस्वीरों के 'मेटाडाटा (Metadata)' में वह तारीख और समय दर्ज था, जब मूर्तियाँ अपनी जगह पर सही-सलामत थीं। तभी उसकी नज़र एक धुँधली परछाई पर पड़ी, जो एक तस्वीर के कोने में दिख रही थी। वह आर्यन नहीं था। वह कोई और था, जो हाथ में एक लेजर मार्कर लिए उन मूर्तियों पर निशान लगा रहा था।

शहर के एक अंधेरे केबिन में अनन्या बैठी थी। उसके सामने एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति बैठा था, जिसके चेहरे पर एक गहरा निशान था। यह 'विक्रम मार्तंड' था, जो मार्तंड परिवार का वह सदस्य था जिसे सालों पहले जायदाद से बेदखल कर दिया गया था।

"आर्यन अब जेल जाएगा!" अनन्या ने सिगरेट का धुआँ छोड़ते हुए कहा। "अब हवेली का वह हिस्सा, जहाँ असल खज़ाना छिपा है, उसे खोदने का रास्ता साफ है"।

"लेकिन वह फोटोग्राफर लड़की?", विक्रम ने पूछा, "उसके पास उन कमरों की तस्वीरें हैं!"

"उसे मैं सँभाल लूँगी!", अनन्या की आँखों में क्रूरता थी, "वह अभी मोक्षपुरी में है। अगर उसने ज़्यादा शोर मचाया, तो मोक्षपुरी की गलियाँ बहुत सँकरी हैं, विक्रम! वहाँ हादसे बहुत आसानी से हो जाते हैं..."।

यहाँ से यह साफ हो गया कि यह सिर्फ एक ईर्ष्यालु प्रेमिका की कहानी नहीं थी। यह एक सुनियोजित डकैती और उस हवेली के नीचे दबे एक ऐसे राज की तलाश थी, जो मीरा के पिता की मौत से भी जुड़ा था।

मीरा ने अपना बैग पैक किया। इस बार उसके चेहरे पर आँसू नहीं, बल्कि एक योद्धा जैसा संकल्प था। उसने ज़ोया को फोन किया।

"ज़ोया, मैं नीलपुरा आ रही हूँ। आर्यन मुश्किल में है और मेरे पास वह सबूत हैं, जो उसे बचा सकते हैं। लेकिन मुझे शक है कि मेरे पीछे कोई लगा है। तुम स्टेशन पर कुछ भरोसेमंद लोगों के साथ आना!"

मीरा स्टेशन की ओर भागी। उसे महसूस हो रहा था कि कोई उसका पीछा कर रहा है। जैसे ही वह ट्रेन में चढ़ी, उसने देखा कि एक आदमी काली जैकेट पहने उसे घूर रहा था।

नीलपुरा की सेंट्रल जेल के एक अँधेरे सेल में आर्यन बैठा था। उसका सारा मान-सम्मान मिट्टी में मिल चुका था। तभी उसे बताया गया कि उसका वकील आया है।

जब वह मिलने वाले कमरे में पहुँचा, तो वहाँ वकील के बजाय मीरा खड़ी थी। उसने वकील के भेस में अंदर आने का जोखिम उठाया था।

"मीरा...?", आर्यन की आवाज़ रुँध गई।

"चुप रहो, आर्यन!", मीरा ने काँच के पीछे से कहा। उसका चेहरा सख्त था, ''मैंने कहा था न कि पत्थर धोखा नहीं देते, इंसान देते हैं। तुमने अनन्या पर भरोसा किया, पर मैं तुम पर भरोसा कर रही हूँ। मेरे पास तस्वीरें हैं। उस रात तहखाने में कोई और भी था''।

आर्यन की आँखों में उम्मीद की चमक लौटी, ''मीरा, तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था। वे लोग खतरनाक हैं!''

"अब बहुत देर हो चुकी है, आर्यन! अब यह सिर्फ तुम्हारी बेगुनाही की लड़ाई नहीं है। मुझे पता चला है कि मेरे पिता की जो फाइल गायब हुई थी, उसका कनेक्शन इसी हवेली के उस गुप्त तहखाने से है। हम मिलकर इस रहस्य को सुलझाएँगे।"

अध्याय 11
परछाइयों का पीछा और पहला सुराग

जेल की उस तंग और सीलन भरी मुलाकाती खिड़की के आर-पार जब आर्यन और मीरा की नज़रें मिलीं, तो मानो वक़्त ठहर गया। बीच में लगी काँच की मोटी दीवार न केवल उनकी भौतिक दूरियों का प्रतीक थी, बल्कि पिछले छह महीनों में जमा हुई कड़वाहट और गलतफहमियों की भी। लेकिन आज मीरा की आँखों में वह पुरानी नाराज़गी नहीं थी, वहाँ एक आग थी, एक दृढ़ संकल्प था, जिसने आर्यन के भीतर बुझती हुई उम्मीद को फिर से प्रज्ज्वलित कर दिया।

"तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था, मीरा!", आर्यन ने फटी हुई आवाज़ में कहा। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और आँखों के नीचे काले घेरे साफ बता रहे थे कि इन कुछ दिनों में उसने कितना मानसिक टॉर्चर झेला है, "बाहर मीडिया है, पुलिस है.... और अनन्या भी... वह तुम्हें भी नहीं छोड़ेगी!"

मीरा ने अपना टैबलेट काँच से सटा दिया, "अपनी चिंता छोड़ो, मिस्टर खड़ूस! मैंने तुम्हें एक बार कहा था कि पत्थरों को सही रोशनी में देखना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम उस 'अँधेरे' को देखें, जिसने हमें इस दलदल में धकेला है!"

उसने टैबलेट की स्क्रीन पर एक धुँधली तस्वीर ज़ूम की। यह वही तस्वीर थी, जिसे मीरा ने महीनों पहले उस गुप्त तहखाने में अनजाने में खींचा था।

"इसे देखो, आर्यन!", मीरा ने फुसफुसाते हुए कहा, "यह तस्वीर उस रात की है, जब हम पहली बार उस गुप्त तहखाने में गए थे। मैंने गलती से 'बर्स्ट

मोड' में कुछ शॉट्स लिए थे। इस परछाई को देखो। यह कोई मामूली साया नहीं है।"

आर्यन ने अपनी आँखें सिकोड़कर उस डिजिटल इमेज को गौर से देखा — "यह… यह तो वही कोना है, जहाँ पुरानी घड़ियाँ रखी थीं!"

"बिल्कुल…!", मीरा ने डिजिटल पेन से एक बिंदु को हाइलाइट किया, "इस आदमी के हाथ में जो छोटी-सी हरी रोशनी दिख रही है, वह लेजर मार्कर नहीं है। मैंने ज़ोया के भाई से पूछा है। वह जियोलॉजिस्ट है। यह एक 'जियो-स्कैनर' है, इसका इस्तेमाल मिट्टी या दीवारों के भीतर दबी बेशकीमती धातुओं का पता लगाने के लिए किया जाता है। इसका मतलब, उस रात जब हम ऊपर बारिश का मज़ा ले रहे थे, नीचे कोई और भी था जिसे पता था कि हम वहाँ हैं। वह चोर नहीं था, वह एक शिकारी था जो किसी बड़ी चीज़ की तलाश में था"।

आर्यन के चेहरे पर पसीना आ गया, "इसका मतलब मूर्तियाँ उस रात भी वहीं थीं। किसी ने उन्हें चुराया नहीं, बल्कि उनकी लोकेशन मार्क की थी... और अनन्या ने उस आदमी के साथ मिलकर मुझे फँसाने के लिए जाली पेपर तैयार किए...!"

मीरा ने अपने वकील पिता के पुराने संपर्कों का इस्तेमाल किया था। चूँकि एफआईआर में मूर्तियों के गायब होने का समय और मीरा की तस्वीरों का 'मेटाडाटा' मेल नहीं खा रहा था, कोर्ट ने आर्यन को 48 घंटे की 'शर्तिया पैरोल' दे दी।

जैसे ही आर्यन जेल के भारी लोहे के दरवाजे से बाहर निकला, नीलपुरा की ठंडी हवा ने उसका स्वागत किया। सामने मीरा अपनी धूल भरी जीप के पास खड़ी थी। उसके बाल हवा में उड़ रहे थे और उसके चेहरे पर वही आत्मविश्वास था, जो आर्यन को पहली बार दर्पण झील के किनारे दिखा था।

"हमारे पास सिर्फ 48 घंटे हैं, आर्यन!", मीरा ने जीप स्टार्ट करते हुए कहा। ''इससे पहले कि पुलिस या अनन्या के गुर्गे हमें ट्रैक करें, हमें उस परछाईं का असली चेहरा ढूँढना होगा!"

"हम कहाँ जा रहे हैं?", आर्यन ने सीट बेल्ट बाँधते हुए पूछा।

"वहाँ, जहाँ से इस शहर का इतिहास शुरु होता है — सिटी आर्काइव्स!", मीरा ने एक्सीलरेटर पर पैर दबा दिया।

नीलपुरा सिटी आर्काइव्स की इमारत पुरानी और शांत थी। वहाँ की हवा में पुरानी किताबों और कागजों की एक विशिष्ट गंध थी। घंटों तक धूल भरी अलमारियों को खँगालने के बाद आर्यन की नज़र एक पुरानी 'क्राइम रिपोर्ट' पर पड़ी, जो 1980 के दशक की थी।

"मीरा, यहाँ देखो," आर्यन ने एक पुरानी ब्लैक-एंड-व्हाइट तस्वीर दिखाई। वह सूर्यगढ़ हवेली के मुख्य द्वार की फोटो थी लेकिन उसके नीचे एक अजीब-सा लोगो बना हुआ था — एक फैला हुआ पंखों वाला 'बाज (The Falcon)'।

"यही निशान....!", मीरा चिल्लाई, ''उस धुंधली तस्वीर में जो आदमी था, उसकी कलाई पर भी यही टैटू था। मैंने ज़ूम करके देखा था!"

आर्यन ने रिपोर्ट के पन्ने पलटे, ''यह 'बाज (The Falcon)' एक अंतरराष्ट्रीय तस्कर गिरोह का कोडनेम था। वे लोग ऐतिहासिक स्मारकों से मूर्तियाँ चुराकर विदेशों में बेचते थे। रिपोर्ट कहती है कि इस गिरोह का मास्टरमाइंड कोई स्थानीय व्यक्ति था, जिसे कभी पकड़ा नहीं जा सका"।

तभी मीरा को एक दस्तावेज़ मिला जिसे देखकर उसके हाथ काँपने लगे। वह उसके पिता के हस्ताक्षर वाली एक पुरानी फाइल थी, ''आर्यन... मेरे पिता! वे अपनी मौत से पहले इसी 'बाज गिरोह' के बारे में छानबीन कर रहे थे। उन्हें शक था कि सूर्यगढ़ हवेली के नीचे कोई ऐसी प्राचीन चीज़ है, जो पूरे मेवाड़ के इतिहास को बदल सकती है..."।

अब यह लड़ाई केवल आर्यन को जेल से बचाने की नहीं रह गई थी। यह मीरा के पिता की अधूरी जाँच और उनकी शहादत का जवाब ढूँढने की लड़ाई बन चुकी थी।

आर्काइव्स से बाहर निकलते ही उन्हें महसूस हुआ कि सन्नाटा कुछ ज़्यादा ही कृत्रिम है। शाम ढल रही थी और आसमान में चीलें मंडरा रही थीं। जैसे ही मीरा ने जीप स्टार्ट की, दो काली पल्सर बाइक उनकी ओर तेज़ी से बढ़ीं।

"मीरा.... झुको!", आर्यन चिल्लाया।

एक पत्थर जीप के पिछले शीशे को तोड़ता हुआ अंदर आया। मीरा ने फुर्ती से गियर बदला और जीप को एक सँकरी गली में डाल दिया। बाइक सवारों के चेहरे ढके हुए थे, लेकिन उनकी जैकेट पर वही 'बाज' का निशान चमक रहा था।

"वे हमें मारना चाहते हैं, आर्यन!", मीरा ने स्टीयरिंग को मजबूती से पकड़ते हुए कहा।

"नहीं, वे बस डरा रहे हैं ताकि हम उस सबूत तक न पहुँचें, जो उनके पास है", आर्यन ने पीछे मुड़कर देखा। एक बाइक सवार ने लोहे की रॉड से जीप पर हमला किया। आर्यन ने अपना हाथ बाहर निकाला और अपनी पूरी ताकत से उस सवार का संतुलन बिगाड़ दिया।

हाथापाई के दौरान बाइक सवार का संतुलन बिगड़ा और उसकी बाइक फिसल गई। गिरने से पहले उसकी जेब से एक छोटी-सी मुड़ी हुई पर्ची सड़क पर गिर गई। मीरा ने तेज़ी से जीप रोकी, आर्यन कूदा और उस पर्ची को उठाकर वापस अंदर आ गया।

"चलो यहाँ से! पुलिस आती ही होगी!", आर्यन ने कहा।

कुछ दूर जाकर वे एक पुराने खंडहरनुमा मंदिर के पास रुके। आर्यन ने अपनी हाँफती हुई साँसों को काबू किया और उस पर्ची को खोला। वह एक हाथ से बना हुआ कच्चा नक्शा था।

नक्शे पर कुछ अंक लिखे थे, जो जीपीएस को-ऑर्डिनेट्स की तरह लग रहे थे — ”24.52, 73.68 - कक्ष संख्या-9"

"यह कहाँ का पता है?”, मीरा ने अपना फोन निकाला और ग्लोबल-आई पर उन अंकों को टाइप किया।

सर्च रिजल्ट ने उन्हें हैरान कर दिया। वह जगह कोई और नहीं, बल्कि दर्पण झील के बीचोबीच बना एक पुराना, जलमग्न (submerged) शिव मंदिर था, जो सालों से बंद पड़ा था। लोग वहाँ जाने से डरते थे।

"कक्ष संख्या-9…", आर्यन ने फुसफुसाते हुए कहा, ”मीरा, तुम्हें याद है? सूर्यगढ़ हवेली के ब्लूप्रिंट में भी एक रूम नंबर-9 था, जो हमने कभी नहीं खोजा क्योंकि वह दीवार के पीछे छिपा था”।

मीरा की आँखों में बिजली-सी कौंधी, ”इसका मतलब है कि वे मूर्तियाँ चुराई नहीं गई हैं। उन्हें हवेली से निकालकर इस जलमग्न मंदिर के गुप्त कमरे में रखा गया है। और शायद… शायद वही वह आखिरी सुराग भी है, जो मेरे पिता ढूँढ रहे थे!”

रात गहरा गई थी। वे एक छोटे से ढाबे पर रुके। आर्यन के माथे पर एक छोटी-सी चोट लगी थी जिससे से खून बह रहा था। मीरा ने फर्स्ट-एड किट निकाली और बहुत कोमलता से उसके घाव को साफ करने लगी।

"सॉरी, मीरा!”, आर्यन ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, ”मेरी वजह से तुम इस खतरे में पड़ गई हो!”

मीरा रुकी। उसने रुमाल नीचे रखा और आर्यन का चेहरा अपने हाथों में ले लिया, ”तुमने छह महीने पहले मुझे अपनी दुनिया से बाहर निकाला था,

आर्यन.... लेकिन आज मैं अपनी मर्ज़ी से यहाँ हूँ। हम इस इमारत को फिर से बनाएँगे, पर इस बार इसकी नींव ‘सच’ पर होगी!”

आर्यन ने उसका हाथ पकड़ लिया, ”अगर हम कल सुबह तक वह मंदिर नहीं पहुँचे, तो पुलिस मुझे वापस ले जाएगी.... और अनन्या जीत जाएगी!”

"वह नहीं जीतेगी!”, मीरा ने दृढ़ता से कहा, ”कल सुबह का सूरज उन मूर्तियों पर नहीं, बल्कि ’बाज’ की सच्चाई पर पड़ेगा”। जैसे ही वे जीप की ओर बढ़े, आर्यन के फोन पर एक मैसेज आया। वह अनन्या का था।

"पैरोल मुबारक हो, आर्यन! लेकिन याद रखना, पानी की गहराई में अक्सर राज़ और लाशें, दोनों दफन हो जाती हैं। मंदिर मत जाना!”

आर्यन और मीरा एक-दूसरे को देखने लगे। उन्हें पता था कि अनन्या उनपर नज़र रख रही है। लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि ’कक्ष संख्या-9’ में केवल मूर्तियाँ नहीं, बल्कि एक ऐसा पारिवारिक राज दबा है, जो मीरा और आर्यन के परिवारों को एक खूनी अतीत से जोड़ता है।

अध्याय 12
जलमग्न मंदिर की पुकार

दर्पण झील की लहरें आज रात किसी ठंडी, काली चादर की तरह बिछी हुई थीं। चाँदनी की मद्धम लकीरें पानी की सतह पर ऐसे नाच रही थीं जैसे कोई अदृश्य अँगुलियाँ सितार बजा रही हों। लेकिन संगीत के बजाय वहाँ केवल एक डरावना सन्नाटा था। झील के बीचोबीच स्थित वह प्राचीन शिव मंदिर, जिसे स्थानीय लोग 'पाताल महादेव' कहते थे, एक खंडहर नहीं बल्कि किसी सोए हुए राक्षस की तरह लग रहा था। वह मंदिर साल के अधिकांश समय आधा डूबा रहता था। नीलपुरा के लोग कहते थे कि उसकी जर्जर दीवारों के पीछे सदियों पुराने राज दफ़न हैं, जिन्हें छेड़ने का साहस समय ने भी नहीं किया।

आर्यन और मीरा एक छोटी-सी पुरानी लकड़ी की नाव में सवार थे। पतवार के पानी से टकराने की 'छप-छप' की आवाज़ इस खामोशी को और भी गहरा बना रही थी। आर्यन नाव चला रहा था, उसके हाथों की नसें तनाव के कारण उभरी हुई थीं। हर बार जब वह पतवार खींचता, उसकी कलाई घड़ी की टिक-टिक उसे याद दिलाती कि पैरोल के कीमती घंटे रेत की तरह फिसल रहे हैं।

"मीरा! अगर वहाँ कुछ नहीं मिला, तो...?", आर्यन ने अचानक खामोशी तोड़ी। उसकी आवाज़ में वह सख़्ती नहीं थी, जो कभी उसकी पहचान हुआ करती थी। उसमें एक भय था — हारने का भय नहीं, बल्कि उस उम्मीद के टूटने का भय, जो मीरा ने उसके भीतर जगाई थी।

मीरा ने टॉर्च की रोशनी मंदिर की ओर घुमाई — ''हकीकत पत्थरों जैसी सख्त होती है, आर्यन! तुमने ही ये कहा था। आज उन्हीं पत्थरों ने हमें यहाँ

बुलाया है। कुछ-न-कुछ तो वहाँ ज़रूर है, जो हमारे वर्तमान को हमारे अतीत से जोड़ता है"।

मीरा का चेहरा चाँदनी में दूधिया चमक रहा था, लेकिन उसकी आँखों में एक अजीब-सी बेचैनी थी। वह बार-बार अपने पिता की उन अधूरी फाइलों को याद कर रही थी — "क्या उसके पिता इसी 'कक्ष संख्या-9' की तलाश में अपनी जान गँवा बैठे थे? क्या यह मंदिर उनके जीवन का आखिरी पड़ाव था?"

जैसे ही नाव मंदिर के चबूतरे से टकराई, एक भारी गूँज पैदा हुई, जो पानी की सतह के नीचे मीलों दूर तक गई होगी। मंदिर की सीढ़ियाँ काई (moss) से भरी और बेहद फिसलन भरी थीं। आर्यन ने पहले उतरकर मीरा को हाथ दिया। उस ठंडे, गीले पत्थर पर पैर रखते ही दोनों को एक सिहरन महसूस हुई, जैसे किसी ने उनकी आत्मा को छू लिया हो।

मंदिर के मुख्य गर्भ गृह में प्रवेश करते ही एक अजीब-सी गंध उनके नथुनों से टकराई — धूल, पुरानी अगरबत्ती और सड़ती हुई काई की महक। वहाँ की दीवारों पर उकेरी गई मूर्तियाँ खंडित थीं, जैसे वक़्त के साथ-साथ इंसानी लालच ने भी उन्हें जख्म दिए हों।

"नक्शा क्या कहता है?", मीरा ने फुसफुसाते हुए पूछा। उसकी आवाज़ मंदिर के गुंबद में गूँज उठी।

आर्यन ने वह मुड़ी हुई पर्ची निकाली, "24.52, 73.68… यह को-ऑर्डिनेट्स इसी मुख्य लिंगम के ठीक नीचे इशारा कर रहे हैं। लेकिन 'कक्ष संख्या-9'… यहाँ कोई कमरा नहीं दिख रहा..."।

मीरा ने टॉर्च को चारों ओर घुमाया। अचानक उसकी नज़र एक कोने में पड़ी दीवार पर ठिठक गई। वहाँ की नक्काशी बाकी दीवारों से अलग थी। अन्य दीवारों पर देवी-देवताओं के चित्र थे, लेकिन इस विशेष दीवार पर एक

’बाज’ की आकृति बनी थी, जिसके पंजों में एक चाबी जैसा निशान खुदा था।

"आर्यन, यहाँ देखो! ’बाज’ का निशान!”

आर्यन करीब आया। उसने अपने आर्किटेक्ट वाले अनुभव का इस्तेमाल किया। उसने दीवार को थपथपाया। एक जगह आवाज़ ’खोखली (hollow)’ थी। उसने गौर किया कि बाज की आँखों में दो छोटे छेद थे।

"मीरा, अपना वह पेन देना,,,”, आर्यन ने कहा। उसने बाज की आँखों में दबाव डाला और एक विशिष्ट कोण पर उसे घुमाया। अचानक मंदिर के भीतर एक गड़गड़ाहट हुई। सदियों से जमा हुआ कचरा और धूल गिरने लगी। वह दीवार एक भारी दरवाज़े की तरह धीरे-धीरे पीछे की ओर सरकने लगी।

दीवार के पीछे एक सँकरा रास्ता था, जो सीढ़ियों के ज़रिए नीचे की ओर जा रहा था। यह रास्ता पानी के स्तर से भी नीचे था। जैसे-जैसे वे नीचे उतरे, हवा और भी भारी और ठंडी होती गई। टॉर्च की रोशनी में उन्होंने देखा कि वे एक वर्गाकार कमरे में पहुँच गए थे।

यही था ‘कक्ष संख्या-9’।

कमरे के बीचोबीच वही ’अष्टधातु’ की मूर्तियाँ रखी थीं, जो सूर्यगढ़ हवेली से गायब हुई थीं। वे मूर्तियाँ टॉर्च की रोशनी में ऐसी चमक रही थीं, मानो उनमें जान हो। लेकिन मूर्तियों के बगल में कुछ और भी था — एक पुराना लोहे का संदूक।

मीरा का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। संदूक पर एक मुहर लगी थी, जिसे देखते ही उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह उसके पिता की मुहर थी।

"यह मेरे पिता का है...!”, मीरा ने लड़खड़ाते हुए कहा, ”वे यहाँ तक पहुँचे थे। उन्होंने इसे ढूँढ लिया था!”

उसने जैसे ही संदूक को छूने के लिए हाथ बढ़ाया, पीछे से एक ठंडी, जानी-पहचानी आवाज़ गूँजी —

"बहुत खूब! वाकई, तुम दोनों की केमिस्ट्री काबिले-तारीफ है!"

आर्यन और मीरा झटके से मुड़े। मंदिर की सीढ़ियों पर अनन्या खड़ी थी। उसके बाल बिखरे हुए थे और उसकी आँखों में एक पागलपन जैसी चमक थी। उसके हाथ में एक पिस्तौल थी, जो सीधे आर्यन के सीने की ओर तनी थी। उसके पीछे दो नकाबपोश आदमी थे, जिनके हाथों में ऑटोमैटिक हथियार थे।

"अनन्या! तुम यहाँ कैसे पहुँची?", आर्यन ने चिल्लाकर पूछा।

"ओह... आर्यन... तुम आज भी उतने ही मासूम हो....", अनन्या ने हँसते हुए कहा, "तुम्हारे फोन का जीपीएस केवल तुम्हें लोकेशन नहीं दिखाता, वह मुझे भी तुम्हारी पल-पल की जानकारी दे रहा था। मुझे पता था कि तुम मुझे सीधे उस चीज़ तक ले जाओगे जिसे मेरे पिता और विक्रम मार्तंड सालों से ढूँढ रहे थे..."

"विक्रम मार्तंड!", मीरा ने नफरत से पूछा।

"हाँ, मीरा.... तुम्हारे पिता ने उस राज को अपनी जान देकर छुपाया था लेकिन आज वह राज मेरा होगा!" अनन्या ने संदूक की ओर इशारा किया, "वह संदूक मेवाड़ के उस खजाने की चाबी है जिसे कभी आधिकारिक रिकॉर्ड में दर्ज ही नहीं किया गया। ये मूर्तियाँ तो बस एक पर्दा थीं..."।

आर्यन ने आगे बढ़ने की कोशिश की, पर अनन्या ने हवाई फायर कर दिया। गोली की आवाज़ उस तंग कमरे में कान फाड़ देने वाली थी।

"बस! अब वह संदूक मुझे दे दो, वरना दर्पण की गहराई में दो और लाशें बढ़ जाएँगी..."।

अचानक मंदिर में एक ज़ोरदार कंपन हुआ। शायद उस धमाके की गूँज ने मंदिर की कमज़ोर नींव को हिला दिया था। दीवारों से पानी रिसना शुरु हो गया। देखते ही देखते, कक्ष संख्या-9 में टखनों तक पानी भर गया।

"पानी बढ़ रहा है...!", मीरा चिल्लाई।

अनन्या के चेहरे पर घबराहट दिखी पर लालच अभी भी बड़ा था। "जल्दी करो! संदूक उठाओ!", उसने अपने गुर्गों को आदेश दिया।

आर्यन ने इस मौके का फायदा उठाया। उसने मीरा को इशारा किया और पास रखे एक भारी पत्थर को उन गुर्गों की ओर धकेल दिया। हाथापाई शुरु हो गई। आर्यन ने एक नकाबपोश को पानी में पटक दिया। मीरा ने संदूक को अपने सीने से लगा लिया और सीढ़ियों की ओर भागने की कोशिश की, पर अनन्या ने मीरा का रास्ता रोक लिया, "संदूक छोड़ दो, मीरा!"

"कभी नहीं!", मीरा ने चीखकर कहा।

उसी वक़्त, मंदिर की छत का एक बड़ा हिस्सा गिर पड़ा। मंदिर और भी तेज़ी से पानी में डूबने लगा। पानी अब उनकी कमर तक आ चुका था। आर्यन ने मीरा का हाथ पकड़ा, "हमें यहाँ से निकलना होगा, वरना हम सब डूब जाएँगे!"

अनन्या ने एक आखिरी कोशिश की और संदूक पर झपट्टा मारा। खींचतान में संदूक खुल गया। अंदर से कुछ दस्तावेज़ और एक प्राचीन सोने का सिक्का बाहर गिरकर पानी में बहने लगा। अनन्या उस सिक्के के पीछे भागी, जबकि आर्यन मीरा को लेकर ऊपर की ओर चढ़ने लगा।

ऊपर पहुँचते ही उन्होंने देखा कि मुख्य मंदिर का आधा हिस्सा झील में समा चुका था। वे जैसे-तैसे नाव तक पहुँचे। पीछे मुड़कर देखा, तो अनन्या मंदिर के भीतर कहीं गायब हो चुकी थी।

जब वे तट पर पहुँचे, तो दोनों बुरी तरह हाँफ रहे थे। मीरा के हाथ में संदूक तो था, पर उसका आधा हिस्सा और कुछ कीमती दस्तावेज़ पानी में बह चुके थे।

आर्यन ने काँपती हुई मीरा के कंधे पर हाथ रखा, ''तुम ठीक हो?''

मीरा ने बस सिर हिलाया। उसने संदूक के अंदर बचे हुए एक गीले दस्तावेज़ को निकाला। वह एक नक्शा था, पर वह सूर्यगढ़ हवेली का नहीं था। वह नीलपुरा के पास स्थित एक पुरानी पहाड़ी — 'नीलगिरि की पहाड़ियों' का नक्शा था।

"यह खत्म नहीं हुआ है, आर्यन!'', मीरा ने संदूक की गहराई में देखते हुए कहा, ''यह तो बस एक पहेली का हिस्सा था। असली 'बाज' अभी भी आज़ाद है.... और अनन्या... वह मरी नहीं होगी!''

आर्यन ने आसमान की ओर देखा। पैरोल के अब केवल 10 घंटे बचे थे। उसके पास मूर्तियाँ तो नहीं थीं, पर एक ऐसा सच था जो उसे आज़ाद भी करा सकता था और हमेशा के लिए खत्म भी।

अध्याय 13
नीलगिरि के साये और रक्त-रंजित अतीत

दर्पण झील के उस जलमग्न मंदिर से बच निकलने के बाद की रात आर्यन और मीरा के लिए केवल एक शारीरिक थकान नहीं, बल्कि एक मानसिक प्रलय जैसी थी। जीप नीलपुरा की सुनसान सड़कों पर दौड़ रही थी। हेडलाइट की पीली रोशनी सड़क पर जमी धुँध को चीर रही थी, लेकिन उनके भविष्य पर छाई धुँध और भी गहरी थी। मीरा के हाथों में वह लोहे का संदूक था, जो अब उनके जीवन का सबसे भारी बोझ बन चुका था।

जीप के भीतर सन्नाटा इतना गहरा था कि इंजन की आवाज़ भी किसी शोर की तरह लग रही थी। आर्यन के माथे से पसीना और खून का मिश्रण सूखकर एक कत्थई निशान बना चुका था। उसने स्टीयरिंग व्हील को इतनी ज़ोर से पकड़ रखा था कि उसकी अँगुलियाँ सफेद पड़ गई थीं। वह बार-बार रियर-व्यू मिरर में देख रहा था, उसे लग रहा था कि अनन्या की वह ठंडी हँसी और उन नकाबपोशों की परछाइयाँ अभी भी उनका पीछा कर रही हैं।

"मीरा, उस संदूक में और क्या है?", आर्यन ने अपनी सूखी आवाज़ में पूछा।

मीरा ने संदूक के गीले ढक्कन को धीरे से खोला। अंदर कुछ पुराने सिक्के थे, जो मार्तंडी रियासत के समय के लग रहे थे, लेकिन मीरा की नज़र उन कागज़ों पर थी जो पानी से भीगकर आपस में चिपक गए थे। उसने बहुत सावधानी से एक पन्ना अलग किया। वह उसके पिता मेजर विक्रम प्रताप सिंह की हैंडराइटिंग थी।

"यह मेरे पिता की डायरी का एक हिस्सा है, आर्यन!", मीरा की आवाज़ काँपी, "14 मार्च, 1998… यह उनकी शहादत से ठीक एक महीने पहले की तारीख है। इसमें उन्होंने लिखा है — बाज केवल एक तस्कर नहीं है, वह एक वंशावली है। सूर्यगढ़ हवेली का रहस्य उस सोने में नहीं है जो वहाँ छिपा है, बल्कि उस दस्तावेज़ में है जो यह साबित करता है कि आज का राजघराना जिस नींव पर खड़ा है, वह धोखे की है"।

आर्यन ने झटके से ब्रेक मारा। जीप सड़क के किनारे एक चीख के साथ रुकी, "धोखा? मीरा, तुम समझ रही हो इसका मतलब? अगर यह सच है, तो यह केवल मूर्तियों की चोरी का मामला नहीं है, यह एक रियासत के वजूद को हिला देने वाला राज है। इसीलिए वे लोग तुम्हें और मुझे खत्म करना चाहते हैं..."।

नीलपुरा की सीमा पार करते ही गिरि-शिखर की श्रृंखलाएँ शुरु हो गई थीं। नीलगिरि की पहाड़ियाँ, जो स्थानीय किंवदंतियों में 'शापित' मानी जाती थीं, अब उनके सामने काली दीवारों की तरह खड़ी थीं। आर्यन ने नक्शा देखा। संदूक में मिला वह नक्शा उन्हें एक पुरानी गुफा की ओर ले जा रहा था, जिसे 'अँधेरी कंदरा' कहा जाता था।

जैसे-जैसे वे ऊँचाई पर बढ़ रहे थे, तापमान गिर रहा था। हवा में चीड़ के पेड़ों की तीखी गंध और गीली मिट्टी की महक भर गई थी। अचानक जीप के टायर के नीचे कुछ ज़ोर से फटा। जीप अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे एक पेड़ से टकराई।

"मीरा! बाहर निकलो!", आर्यन चिल्लाया।

वे जीप से बाहर कूदे ही थे कि पहाड़ियों के ऊपर से पत्थरों की बारिश शुरु हो गई। यह प्राकृतिक भूस्खलन नहीं था, यह एक हमला था। अँधेरे में उन्हें कुछ आकृतियाँ ऊपर की ओर हलचल करती दिखीं।

"वे यहाँ भी पहुँच गए!", मीरा ने संदूक को अपने सीने से लगाया और आर्यन का हाथ पकड़कर घने जंगलों की ओर दौड़ पड़ी।

जंगल के बीच एक पुरानी शिकारी झोपड़ी में शरण लेने के बाद मीरा ने उन कागज़ों को सुखाने की कोशिश की। जैसे-जैसे अक्षर साफ हुए, मीरा के चेहरे का रंग उड़ता गया। उसने एक ऐसा पन्ना पढ़ा जिसने उसकी पूरी दुनिया पलट दी।

"आर्यन… यह नहीं हो सकता!", मीरा फफक कर रो पड़ी।

आर्यन उसके पास बैठा, ''क्या हुआ मीरा?''

"मेरे पिता… डायरी में लिखा है कि उन्हें 'बाज' गिरोह को पकड़ने के लिए नहीं भेजा गया था। उन्हें उस राज को हमेशा के लिए दफन करने के लिए भेजा गया था। लेकिन जब उन्हें पता चला कि वह राज क्या है, तो उन्होंने विद्रोह कर दिया। डायरी का यह हिस्सा देखो —मुझे अपनी वर्दी और अपने ज़मीर के बीच चुनाव करना है। अगर मैं यह राज़ बाहर लाता हूँ, तो देश में अस्थिरता फैल सकती है और अगर इसे दबाता हूँ, तो मैं उन गद्दारों का साथ दे रहा हूँ जिन्होंने इस ज़मीन को बेचा है"।

आर्यन स्तब्ध रह गया, ''इसका मतलब तुम्हारे पिता को किसी दुश्मन ने नहीं, बल्कि अपनों ने ही मरवाया था?''

तभी झोपड़ी का दरवाज़ा एक झटके से खुला। वहाँ अनन्या नहीं थी, वहाँ एक लंबा, रौबदार व्यक्ति खड़ा था जिसके सफेद बाल और आँखों में एक बर्फीली ठंडक थी। वह नीलपुरा का मौजूदा 'कलेक्टर' और आर्यन का पुराना पारिवारिक मित्र, दिग्विजय सिंह था।

"तुम बिल्कुल सही कह रही हो, मीरा...", दिग्विजय ने अपनी पिस्तौल तानते हुए कहा, ''तुम्हारे पिता ने बहुत बड़ी गलती की थी। उन्होंने वह राज़ जान लिया था जिसे जानने की कीमत केवल मौत है.... और आज तुम दोनों वही गलती दोहरा रहे हो!''

आर्यन को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। दिग्विजय सिंह वही इंसान था जिसने आर्यन को पहला बड़ा परियोजना दिलाने में मदद की थी, ”दिग्विजय अंकल? आप… आप ’बाज’ हैं?”

"बाज एक इंसान नहीं है, आर्यन! यह एक ओहदा है!” दिग्विजय ने ठंडी मुस्कान के साथ कहा, ”सूर्यगढ़ हवेली के नीचे जो राज़ दफन है, वह मेवाड़ के शाही खजाने की चाबी है, जिसका उपयोग हम जैसे लोग इस व्यवस्था को चलाने के लिए करते हैं। अनन्या तो बस एक मोहरा थी, जिसे मैंने तुम्हारी जासूसी के लिए भेजा था…”।

मीरा ने संदूक को पीछे छुपाया, ”आप कभी सफल नहीं होंगे... सच्चाई बाहर आएगी!”

"सच्चाई वही होती है जो इतिहास लिखता है, मीरा!”, दिग्विजय ने अपने गुर्गों को इशारा किया, ”और आज रात तुम दोनों का इतिहास यहीं समाप्त होता है!”

तभी अँधेरे में एक गोली चली लेकिन वह दिग्विजय की पिस्तौल से नहीं निकली थी। दिग्विजय के एक गुर्गे के कंधे में गोली लगी। झोपड़ी की खिड़की से एक नकाबपोश व्यक्ति अंदर कूदा। उसने बिजली की तेज़ी से दिग्विजय के हाथ से पिस्तौल छीन ली,

"भागो! यहाँ से निकलो!”, उस नकाबपोश ने आर्यन और मीरा की ओर देखते हुए कहा। उसकी आवाज़ में एक अजीब-सी खनक थी।

आर्यन और मीरा जंगल की ढलानों की ओर भागे। पीछे गोलियों की आवाज़ें गूँज रही थीं। कुछ देर दौड़ने के बाद वे एक झरने के पास रुके। वह नकाबपोश भी उनके पीछे पहुँच गया।

जब उसने अपना नकाब हटाया, तो मीरा की चीख निकल गई। वह ज़ोया थी, लेकिन वह वैसी नहीं थी जैसी मीरा उसे जानती थी। उसके हाथ में

एक अत्याधुनिक हथियार था और उसका लहजा किसी पेशेवर एजेंट जैसा था।

"ज़ोया? तुम यहाँ?", मीरा ने हक्का-बक्का होकर पूछा।

"मेरा असली नाम ज़ोया नहीं है, मीरा!", उसने ठंडी लाँस लेकर कहा, "मैं NIS (National Intelligence Squad) से हूँ। मैं पिछले पाँच साल से इस 'बाज' गिरोह का पीछा कर रही हूँ। तुम्हारे पिता मेरे गुरु थे, मीरा.... और उन्होंने मरने से पहले मुझे एक ज़िम्मेदारी दी थी — तुम्हारी और उस राज़ की रक्षा करने की जिम्मेदारी।"

झरने के पास की गुफा में, जहाँ पानी की गिरती बूँदों की आवाज़ किसी कालचक्र की टिक-टिक जैसी लग रही थी, मीरा लगातार ज़ोया को देख रही थी। वह ज़ोया, जिसके साथ उसने नीलपुरा की गलियों में कॉफी पी थी, जिसके साथ उसने अपने दिल के राज साझा किए थे, वह अब एक अजनबी की तरह खड़ी थी। उसके हाथ में मौजूद 'बेरेटा' पिस्तौल और उसकी आँखों में छाई वह ठंडी पेशेवर चमक मीरा को डरा रही थी।

"पाँच साल, ज़ोया....", मीरा की आवाज़ फटी हुई थी, "पाँच साल तक तुमने मुझसे झूठ बोला? तुमने मेरी दोस्ती का इस्तेमाल किया ताकि तुम मेरे पिता के राज तक पहुँच सको?"

ज़ोया ने अपनी बंदूक की मैगजीन चेक की और मीरा की नज़रों से नज़रें नहीं मिलाईं, "इस्तेमाल एक गलत शब्द है, मीरा! 'सुरक्षा' कहना बेहतर होगा। जब तुम्हारे पिता ने मुझे चुना था, तब मैं एकेडमी में सबसे होनहार थी। उन्होंने मुझसे कहा था — 'मेरी बेटी कभी इस अँधेरे की दुनिया का हिस्सा नहीं बननी चाहिए, लेकिन अगर वह अँधेरा उसके पास आए, तो तुम्हें उसकी ढाल बनना होगा'। मैं बस अपना फर्ज निभा रही थी..."।

आर्यन, जो अब तक खामोश था, आगे बढ़ा। उसके माथे का घाव अब फिर से रिसने लगा था, "फर्ज?... और अनन्या?... क्या तुम्हें पता था कि वह

दिग्विजय सिंह का मोहरा थी? क्या तुम्हें पता था कि वह मुझे जेल भिजवाने वाली थी?”

ज़ोया ने पहली बार आर्यन की ओर देखा, ”अनन्या का आना हमारे प्लान में नहीं था। वह एक ’वेरिएबल’ थी जिसे दिग्विजय ने खुद चुना था। वह जानती थी कि तुम मीरा की कमज़ोरी बन सकते हो, आर्यन! दिग्विजय बहुत शातिर है। वह जानता है कि इंसानी जज्बात सबसे कमज़ोर नींव होते हैं। उसने तुम्हें और मीरा को प्यादों की तरह इस्तेमाल किया ताकि वह उस ’कक्ष संख्या-9’ तक पहुँच सके, जहाँ सुरक्षा घेरा इतना मज़बूत था कि कोई भी सरकारी अधिकारी वहाँ नहीं जा सकता था, ”जैसे-जैसे रात गहरा रही थी, ज़ोया ने उस राज की परतें खोलनी शुरु कीं, जो ’बाज गिरोह’ और दिग्विजय सिंह के इर्द-गिर्द बुना गया था।

"बाज कोई एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक पुराना ’कॉर्टेल’ है जिसे मेवाड़ के उन सामंतों ने शुरु किया था जिन्होंने आज़ादी के समय अपना सब कुछ खो दिया था”, ज़ोया ने एक नक्शा बिछाते हुए बताया, ”दिग्विजय के पिता उस गिरोह के पहले सरगना थे। वे लोग ऐतिहासिक स्मारकों से मूर्तियाँ नहीं चुराते थे, वे ’इतिहास’ चुराते थे। सूर्यगढ़ हवेली के नीचे जो खज़ाना है, वह केवल सोना-चाँदी नहीं है। वहाँ ’ताम्रपत्र (copper plates)’ का एक संग्रह है, जो यह साबित करता है कि वर्तमान मार्तंड परिवार असली वंशज नहीं, बल्कि वह एक गोद लिया हुआ बच्चा था जिसने ब्रिटिश काल में असली वारिस की हत्या कर दी थी”।

मीरा का गला सूख गया, ”और मेरे पिता? उन्हें यह कैसे पता चला?”

"तुम्हारे पिता को उस समय के तत्कालीन गवर्नर ने एक गुप्त मिशन पर भेजा था। उन्हें लगा कि एक फौजी कभी सवाल नहीं पूछेगा। लेकिन मेजर विक्रम प्रताप सिंह ने न केवल सवाल पूछे, बल्कि उन्होंने उन ताम्रपत्रों को ढूँढ निकाला। उन्होंने जब यह राज खोलना चाहा, तो सिस्टम के अंदर बैठे ’बाज’ के मोहरों ने उन्हें गद्दार घोषित कर दिया। सियाचिन के उस

तथाकथित एनकाउंटर में उन्हें दुश्मनों ने नहीं, बल्कि अपनों ने पीछे से गोली मारी थी!"

आर्यन ने गुस्से में एक पत्थर दीवार पर दे मारा, "...और आज भी वही हो रहा है! आज भी ये लोग उसी राज को दबाने के लिए किसी भी हद तक जा रहे हैं...!"। अचानक गुफा के बाहर जंगल के परिंदे एक साथ उड़ने लगे। ज़ोया तुरंत सतर्क हो गई। उसने टॉर्च बंद कर दी।

"वे आ गए हैं", उसने फुसफुसाते हुए कहा, "दिग्विजय ने 'थर्मल स्कैनर्स' का इस्तेमाल किया है। नीलगिरि की ये पहाड़ियाँ अब हमारे लिए कोई छिपने की जगह नहीं, बल्कि एक मौत का कुआँ बन चुकी हैं..."।

बाहर से मेगाफोन पर एक आवाज़ गूँजी। वह दिग्विजय सिंह था —

"आर्यन, मीरा... बाहर आ जाओ। ज़ोया, मुझे पता है तुम वहाँ हो। एक इंटेलिजेंस ऑफिसर होकर तुम इन अपराधियों का साथ दे रही हो? यह देशद्रोह है। सरेंडर कर दो, शायद तुम्हारी जान बख्श दी जाए।"

आर्यन ने मीरा का हाथ थाम लिया - "हम सरेंडर नहीं करेंगे।

"हमें इस झरने के पीछे वाले रास्ते से निकलना होगा," ज़ोया ने इशारा किया"। वहाँ एक सँकरी गुफा है, जो सीधे 'नीलगिरि की चोटी' की ओर जाती है। वहाँ पुरानी 'सिग्नल पोस्ट' है। अगर हम वहाँ पहुँच गए, तो मैं हेडक्वार्टर को सिग्नल भेज सकती हूँ"। जैसे ही वे झरने के ठंडे पानी को पार कर सँकरी गुफा में घुसे, उन्हें पीछे से गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। दिग्विजय के गुर्गे अब गुफा के मुहाने तक पहुँच चुके थे।

चढ़ाई कठिन थी। ऑक्सीजन कम हो रही थी और आर्यन की चोट उसे कमज़ोर कर रही थी। मीरा ने उसे सहारा दिया। इस शारीरिक संघर्ष के बीच दोनों के बीच एक अनकहा संवाद चल रहा था। आर्यन को महसूस हो रहा था कि जिस 'परफेक्शन' के पीछे वह केंद्र-प्रस्थ में भाग रहा था, वह कितना खोखला था। असली ताकत उस संदूक को बचाने में नहीं, बल्कि मीरा के

उस विश्वास को बचाने में थी जो अब फिर से डगमगा रहा था। ”आर्यन!”, मीरा ने रुकते हुए कहा। उसकी साँसें फूल रही थीं। ”अगर हम यहाँ से नहीं निकल पाए, तो वह संदूक इसी गुफा में छिपा देना। दुनिया को पता चलना चाहिए कि मेरे पिता गद्दार नहीं थे”।

"हम निकलेंगे, मीरा!,” आर्यन ने उसे अपने करीब खींचते हुए कहा। ”मैं अब तुम्हें फिर से किसी ’नक्शे’ से बाहर नहीं जाने दूँगा”। गुफा के ऊपरी छोर पर पहुँचते ही, जहाँ से नीलगिरि की चोटी साफ दिख रही थी, उनका सामना एक ऐसी परछाई से हुआ जिससे उन्हें उम्मीद नहीं थी।

वहाँ अनन्या खड़ी थी। वह घायल थी, उसका एक हाथ पट्टी से बंधा था और उसके चेहरे पर वह पुरानी सुंदरता नहीं, बल्कि एक डरावनी विरूपता थी। उसके हाथ में एक रिमोट था।

"अनन्या?”, आर्यन ठिठक गया।

"आर्यन… दिग्विजय ने मुझे इस्तेमाल किया”, वह पागलों की तरह हंसने लगी। ”उसने मंदिर में मुझे मारने की कोशिश की। उसने सोचा कि मैं उन पत्थरों के नीचे दब गई हूँ, लेकिन मैं बच गई। और अब अगर यह खज़ाना मेरा नहीं हो सकता, तो यह किसी का नहीं होगा”।

उसने रिमोट की ओर इशारा किया।”इस पूरी चोटी के नीचे डायनामाइट लगा है। दिग्विजय के आदमी ऊपर आ रहे हैं। जैसे ही मैं बटन दबाऊँगी, यह पूरी पहाड़ी मलबे में तब्दील हो जाएगी। तुम, मीरा, ज़ोया और दिग्विजय… सब इसी इतिहास का हिस्सा बन जाओगे”।

ज़ोया ने अपनी बंदूक तानी - ”रिमोट नीचे रखो, अनन्या!”

"देर हो चुकी है, एजेंट साहिबा!,” अनन्या की आँखों में एक अजीब सा सूनापन था। उसने आर्यन की ओर देखा, ”आर्यन, काश तुमने मुझे उस दिन नहीं छोड़ा होता। शायद आज मैं यह नहीं होती”।

तभी पीछे से दिग्विजय के आदमियों ने गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। एक गोली अनन्या के कंधे पर लगी। वह लड़खड़ाई और उसका अंगूठा रिमोट के बटन पर दब गया। एक कान फाड़ देने वाला धमाका हुआ। नीलगिरि की चोटी का एक हिस्सा ताश के पत्तों की तरह ढहने लगा। पत्थरों का सैलाब नीचे की ओर आने लगा।

"कूद जाओ!”, ज़ोया चिल्लाई।

आर्यन ने मीरा को अपनी बाहों में लपेटा और वे उस ढलान से नीचे की ओर कूद गए, जहाँ सिवाए अंधेरे और धूल के कुछ नहीं दिख रहा था। अनन्या की चीख उस मलबे में कहीं दब गई और दिग्विजय की सेना उस तबाही के नीचे दफन हो गई। धमाका इतना तीव्र था कि आवाज़ ने जैसे सुनने की शक्ति छीन ली थी। चारों ओर सिर्फ धूल का एक घना, दमघोंटू बादल था और गिरते हुए पत्थरों की गड़गड़ाहट। जब आर्यन की आँखें खुलीं, तो उसे कुछ पल के लिए लगा कि वह मर चुका है। उसका पूरा शरीर पत्थरों के एक छोटे से टीले के नीचे दबा था, लेकिन सौभाग्य से एक बड़ी चट्टान ऊपर की ओर अटक गई थी, जिसने उसके लिए एक संकरा ’एयर पॉकेट’ बना दिया था।

"मीरा...", आर्यन की आवाज़ एक दबी हुई सिसकी जैसी निकली। उसके फेफड़ों में धूल भरी थी और हर साँस के साथ सीने में जलन हो रही थी।

उसने अपने हाथ-पैर हिलाने की कोशिश की। बाईं बाहु में असहनीय दर्द था, शायद हड्डी टूट चुकी थी। उसने अंधेरे में हाथ मारा, तो उसे रेशमी बालों का स्पर्श मिला। वह मीरा थी। वह बेहोश थी, लेकिन उसकी नब्ज चल रही थी।

"मीरा! जागो, मीरा!”, आर्यन ने उसे झकझोरा।

मीरा ने धीरे से आँखें खोलीं और दर्द से कराह उठी — ''आर्यन? हम… हम कहाँ हैं?''

"नीलगिरि ने हमें निगल लिया है, मीरा... लेकिन हम जीवित हैं'', आर्यन ने ऊपर की चट्टानों को देखा। वे किसी भी क्षण ढह सकती थीं। उनके पास बहुत कम समय था। कुछ ही दूरी पर पत्थरों के खिसकने की आवाज़ आई। टॉर्च की एक धुंधली रोशनी चमकी। वह ज़ोया थी। वह भी सुरक्षित थी लेकिन उसका पैर एक भारी पत्थर के नीचे दब गया था।

"आर्यन, मीरा… मेरी बात ध्यान से सुनो'', ज़ोया की आवाज़ में एक अजीब-सा ठहराव था, ''मेरे पास एक 'लोकेटर' है, जो NIS (National Intelligence Squad) को सिग्नल भेज रहा है। वे यहाँ पहुँच रहे होंगे लेकिन तुम दोनों को यहाँ से तुरंत निकलना होगा। यह गुफा का हिस्सा कमज़ोर है''।

मीरा, ज़ोया की ओर रेंगते हुए गई, ''हम तुम्हें छोड़कर नहीं जाएँगे, ज़ोया''।

"तुम्हें जाना होगा!'', ज़ोया चिल्लाई। ''दिग्विजय सिंह के बैकअप दस्ते ऊपर पहुँच रहे होंगे। अगर वे तुम्हें यहाँ ढूंढ लेते हैं, तो यह संदूक कभी दुनिया के सामने नहीं आ पाएगा। मीरा, मैंने तुम्हारे साथ जो झूठ बोला, वह मेरी नौकरी थी लेकिन आज जो मैं कह रही हूँ, वह मेरा सच है। तुम्हारे पिता ने मुझे एक 'सुरक्षा' (Legacy) सौंपी थी, आज वह लेगेसी तुम हो और यह संदूक है''।

ज़ोया ने अपने जैकेट से एक छोटा-सा इलेक्ट्रॉनिक की-कार्ड निकाला और मीरा के हाथ में थमा दिया, ''यह मेरे पर्सनल लॉकर की चाबी है। नीलपुरा के पुराने डाकखाने में एक और फाइल है… वह फाइल, जो तुम्हारे पिता ने अपनी आखिरी रात को मुझे सौंपी थी''। जैसे-जैसे पानी और धूल नीचे बैठ रहे थे, मीरा ने संदूक के भीतर से वह आखिरी चीज़ निकाली, जो उसे मंदिर में मिली थी — एक भारी, पीतल की शाही मुहर।

"यह मुहर... यह केवल पहचान के लिए नहीं है, आर्यन", मीरा ने मुहर के पिछले हिस्से को गौर से देखते हुए कहा। उसने देखा कि मुहर के नीचे एक छोटा सा पेंच था। जब उसने उसे घुमाया, तो मुहर का निचला हिस्सा खुल गया।

अंदर एक छोटा-सा माइक्रोफिल्म रोल था।

"यह क्या है?", आर्यन ने पूछा।

"यह वह सबूत है, जिसे मिटाने के लिए दिग्विजय और 'बाज' के पूर्वजों ने पीढ़ियों तक कत्लेआम किया", ज़ोया ने हाँफते हुए बताया। "मार्तंड प्रदेश के उस समय के राजा ने एक गुप्त 'वसीयत' बनाई थी। इस माइक्रोफिल्म में उस वसीयत की प्रति है। इसमें लिखा है कि सूर्यगढ़ हवेली के नीचे जो खज़ाना है, वह किसी व्यक्ति का नहीं, बल्कि नीलपुरा की जनता का ट्रस्ट है। और सबसे बड़ी बात... इसमें उन लोगों के नाम हैं जिन्होंने आज़ादी के समय गद्दारी की थी। दिग्विजय के परिवार का नाम उस सूची में सबसे ऊपर है"।

आर्यन के रोंगटे खड़े हो गए। यह केवल संपत्ति की लड़ाई नहीं थी, यह एक खानदान के 'सम्मान' के उस मुखौटे को उतारने की लड़ाई थी जिसे उन्होंने पिछले 70 सालों से पहन रखा था। अचानक गुफा के ऊपर से भारी बूटों की आवाज़ सुनाई दी। दिग्विजय के आदमी आ चुके थे।

" वहाँ नीचे देखो! मलबा अभी भी गर्म है!", ऊपर से एक आवाज़ गूँजी।

आर्यन ने मीरा को एक छोटी-सी दरार की ओर धकेला - "मीरा, जाओ! मैं और ज़ोया इन्हें रोकते हैं"।

"नहीं आर्यन! मैं तुम्हें फिर से नहीं खोऊँगी!", मीरा की आँखों में आँसू थे।

ठीक उसी क्षण, आसमान में हेलीकॉप्टर्स की गूँज सुनाई दी। NIS (National Intelligence Squad) की 'क्विक रिएक्शन टीम (QRT)'

पहुँच चुकी थी। गुफा की छत से रस्सी के सहारे कमांडो नीचे उतरने लगे। चारों ओर से गोलियों की तड़तड़ाहट गूँज उठी। दिग्विजय के गुर्गे, जो अब तक शिकारी थे, अब खुद शिकार बन रहे थे।

दिग्विजय सिंह, जो ऊपर की चोटी से यह सब देख रहा था, समझ गया कि खेल खत्म हो चुका है। उसने अपनी पिस्तौल निकाली और उसे अपनी कनपटी पर रख लिया। लेकिन इससे पहले कि वह ट्रिगर दबाता, ज़ोया के एक साथी ने उसे पीछे से दबोच लिया। जब सूरज की पहली किरण नीलगिरि की पहाड़ियों पर पड़ी, तो नज़ारा हृदय विदारक था। पहाड़ी का एक हिस्सा गायब हो चुका था। आर्यन और मीरा को स्ट्रेचर पर ले जाया जा रहा था।

ज़ोया का पैर बुरी तरह ज़ख्मी था, लेकिन वह मुस्कुरा रही थी। उसने मीरा की ओर देखा और एक छोटा-सा ’सैल्यूट’ किया। मीरा ने भी धुंधली आँखों से अपना हाथ उठाया। उनकी दोस्ती अब पहले जैसी नहीं हो सकती थी, पर एक नया सम्मान उनके बीच पैदा हो चुका था।

आर्यन ने मीरा का हाथ थाम लिया। वे एम्बुलेंस में लेटे हुए थे।

"इमारत बन गई, मीरा", आर्यन ने धीमे से कहा, ”नींव थोड़ी टेढ़ी थी, पर अब यह ‘सच’ पर खड़ी है"।

मीरा ने संदूक को कसकर पकड़ा, ”अभी तो बस नींव खुदी है, आर्यन। अभी तो उस सच की पूरी इमारत खड़ी करनी है, जो मेरे पिता ने शुरु की थी"।

एम्बुलेंस नीलपुरा की ओर बढ़ चली। ’बाज’ गिरोह का अंत हो चुका था लेकिन उस माइक्रोफिल्म में जो राज थे, वे अभी पूरी दुनिया के सामने आने बाकी थे। अनन्या का शरीर मलबे में नहीं मिला, जो एक नए खतरे का संकेत था।

अध्याय 14
सत्य की अग्निपरीक्षा

नीलगिरि की पहाड़ियों से जो धूल उठी थी, वह अब नीलपुरा के जिला अस्पताल के सफेद गलियारों में बैठ रही थी। हवा में फिनाइल की तीखी गंध और मशीनरी की ’बीप-बीप’ की आवाज़ें एक अलग ही तरह का सन्नाटा पैदा कर रही थीं। आर्यन बेड पर लेटा हुआ था। उसकी बाईं बाँह पर प्लास्टर था और चेहरे पर पट्टियाँ लेकिन उसकी आँखें छत को नहीं, बल्कि उस सुरक्षा घेरे को देख रही थीं जो कमरे के बाहर तैनात था। आर्यन का दिमाग एक थिएटर की तरह चल रहा था। उसे बार-बार वह धमाका याद आता और अनन्या का वह विक्षिप्त चेहरा... दिग्विजय सिंह की वह बर्फीली आँखें और मीरा का वह काँपता हुआ हाथ। वह अब एक ’आरोपी’ नहीं था लेकिन एक ’गवाह’ भी नहीं बन पाया था। NIS (National Intelligence Squad) के अधिकारियों ने उसे सख्त हिदायत दी थी कि जब तक चार्जशीट दायर नहीं होती, वह किसी से बात नहीं करेगा।

तभी कमरे का दरवाज़ा धीरे से खुला। मीरा अंदर आई। उसने सफेद कुर्ता पहन रखा था, जो नीलगिरि की मिट्टी से अभी भी थोड़ा मटमैला लग रहा था। उसके हाथ में वही संदूक नहीं था, बल्कि एक छोटी-सी डिजिटल फाइल थी।

"ज़ोया कैसी है?”, आर्यन ने अपनी सूखी आवाज़ में पूछा।

"खतरे से बाहर है, पर उसका पैर ठीक होने में वक़्त लगेगा”, मीरा ने उसके पास बैठकर उसका हाथ थाम लिया, ”दिग्विजय सिंह को केंद्र-प्रस्थ ले जाया गया है। NIS (National Intelligence Squad) उसे ’बाज’ गिरोह के अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन्स के लिए इंटरोगेट कर रही है”। मीरा ने

अपना लैपटॉप खोला, ”आर्यन, जो हमने माइक्रोफिल्म में देखा था, वह तो सिर्फ एक ट्रेलर था। ज़ोया ने मुझे वह फाइल दे दी है, जो मेरे पिता ने छोड़ी थी। इसमें उन सभी बेनामी संपत्तियों का ब्यौरा है जिन्हें ’बाज’ ने पिछले तीस सालों में बनाया था। इसमें सूर्यगढ़ हवेली की उस गुप्त वसीयत की मूल प्रति का डिजिटल स्कैन भी है”।

आर्यन ने स्क्रीन की ओर देखा। वसीयत की भाषा पुरानी मार्तंडी और अंग्रेज़ी का मिश्रण थी - "मैं, महाराजा रतन सिंह, यह घोषणा करता हूँ कि मेरी मृत्यु के पश्चात सूर्यगढ़ हवेली का उपयोग केवल जनहित के लिए होगा। यदि कोई भी व्यक्ति इस पर निजी अधिकार का दावा करता है, तो वह अवैध माना जाएगा। इस हवेली के नीचे सुरक्षित खज़ाना मेवाड़ की धरोहर है, किसी परिवार की जागीर नहीं”। “आर्यन, अगर यह वसीयत सार्वजनिक होती है, तो वर्तमान मार्तंड ट्रस्ट, जिसने तुम्हें यह परियोजना दिया था, वह पूरी तरह अवैध घोषित हो जाएगा... और दिग्विजय सिंह का परिवार, जो इस ट्रस्ट का मुख्य संरक्षक है, वह बेघर हो जाएगा”, मीरा ने गंभीर स्वर में कहा।

उसी शाम नीलपुरा की सेशन कोर्ट में एक विशेष सुनवाई रखी गई। आर्यन पर लगे चोरी के आरोपों को रद्द करने की याचिका डाली गई थी। लेकिन यहाँ एक नया ट्विस्ट आया। दिग्विजय सिंह के वकीलों ने कोर्ट में यह दलील दी कि नीलगिरि में हुआ धमाका आर्यन और मीरा ने खुद किया था ताकि वे सबूतों को मिटा सकें। अदालत का माहौल गरमाया हुआ था। सरकारी वकील, जो दिग्विजय के प्रभाव में था, चिल्लाया — "जनाब, ये लोग केवल आर्किटेक्ट और फोटोग्राफर नहीं हैं, ये लोग एक अंतरराष्ट्रीय गिरोह का हिस्सा हैं, जो भारत की सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं!” आर्यन बॉक्स में खड़ा था। उसका स्वाभिमान उसे चिल्लाने के लिए कह रहा था, पर उसकी नज़रें मीरा पर थीं। मीरा ने गैलरी में बैठे-बैठे उसे एक शांत इशारा किया। वह सही समय का इंतज़ार कर रही थी। अचानक कोर्ट का दरवाज़ा खुला और एक व्हीलचेयर पर ज़ोया अंदर आई। उसके साथ NIS (National Intelligence Squad) के दो वरिष्ठ अधिकारी थे। "जनाब, मैं

NIS (National Intelligence Squad) की ऑफिसर ज़ोया सिद्दीकी, कोर्ट की अनुमति से कुछ नए दस्तावेज़ पेश करना चाहती हूँ", ज़ोया की आवाज़ ने कोर्ट में सन्नाटा फैला दिया। कोर्ट का दृश्य अब पूरी तरह बदल चुका था। ज़ोया ने जो सबूत पेश किए, वे केवल आर्यन की बेगुनाही के नहीं थे, बल्कि उस पूरे 'इकोसिस्टम' के खिलाफ थे जिसे 'बाज' ने बनाया था। ज़ोया ने दिग्विजय सिंह और अनन्या के बीच हुई एक कॉल रिकॉर्डिंग प्ले की। "अनन्या, आर्यन को खत्म करना ज़रूरी है। वह वसीयत के बहुत करीब पहुँच गया है। अगर मीरा को पता चला कि उसके पिता को हमने कैसे मारा, तो वह तबाही मचा देगी"। हॉल में फुसफुसाहट शुरु हो गई। दिग्विजय के वकील के पसीने छूटने लगे। आर्यन ने देखा कि कैसे न्याय की तराजू अब धीरे-धीरे सच की ओर झुक रही थी। जज ने आदेश दिया कि दिग्विजय सिंह को तुरंत कोर्ट में पेश किया जाए, भले ही वह NIS (National Intelligence Squad) की कस्टडी में हो। जब मीरा गवाह के कटघरे में खड़ी हुई, तो उसकी आवाज़ में एक ऐसी गूँज थी जिसने जजों को भी हिला दिया। उसने अपने पिता की वह डायरी निकाली और उसके कुछ पन्ने पढ़े, "मेरे पिता मेजर विक्रम प्रताप सिंह ने अपनी आखिरी साँस तक इस वसीयत की रक्षा की। उन्हें गद्दार कहा गया, उनकी वर्दी पर दाग लगाया गया लेकिन आज मैं यहाँ केवल आर्यन खन्ना को बचाने नहीं आई हूँ, मैं यहाँ उस सच को स्थापित करने आई हूँ जिसके लिए एक ईमानदार फौजी को अपनी जान देनी पड़ी"। उसने वह माइक्रोफिल्म और वसीयत की कॉपी जज के सामने पेश की। सूर्यगढ़ हवेली का रहस्य कोई सोना-चाँदी नहीं है। इसका रहस्य वह गद्दारी है, जो 1947 के समय कुछ परिवारों ने इस मिट्टी के साथ की थी। दिग्विजय सिंह का परिवार ब्रिटिश एजेंट था और यह हवेली उन्हें उसी वफादारी के इनाम में मिली थी, जबकि असली राजा ने इसे जनता को सौंपा था। जज ने फैसला सुनाया — "आर्यन खन्ना पर लगे सभी आरोप तत्काल प्रभाव से हटाए जाते हैं"। मार्तंड ट्रस्ट की सभी संपत्तियाँ फ्रीज कर दी गईं और दिग्विजय सिंह पर राजद्रोह और हत्या की साजिश का मुकदमा चलाने का आदेश दिया गया। जैसे ही आर्यन और मीरा कोर्ट के बाहर निकले,

मीडिया के कैमरों ने उन्हें घेर लिया। आर्यन ने मीडिया की ओर देखा और बस इतना कहा — "इमारत की सुंदरता उसकी ऊँचाई में नहीं, उसकी नींव की सच्चाई में होती है। आज इस शहर की नींव साफ़ हो गई है"। कोर्ट के आदेश के बाद सूर्यगढ़ हवेली का नियंत्रण सरकार ने अपने हाथ में ले लिया और आर्यन को फिर से इसका 'मुख्य रिस्टोरेशन आर्किटेक्ट' नियुक्त किया गया। इस बार उसके पास पूरी आज़ादी थी।

शाम को आर्यन और मीरा, हवेली के उसी ऊँचे बुर्ज पर खड़े थे जहाँ से नीलपुरा की झीलें और शहर की रोशनी एक सपने जैसी लग रही थीं। "सब खत्म हो गया, मीरा", आर्यन ने राहत की साँस ली। "नहीं आर्यन", मीरा ने दूर पहाड़ियों की ओर देखते हुए कहा, "अनन्या का शव अभी तक नहीं मिला है। नीलगिरि के उस मलबे में उसे सबने मरता हुआ माना, पर पुलिस की रिपोर्ट कहती है कि वहाँ केवल तीन शव मिले थे और अनन्या उनमें नहीं थी। "आर्यन को याद आया कि अनन्या ने धमाके से पहले कुछ कहा था। वह रात को हवेली के उसी 'कक्ष संख्या 9' में गया, जो अब पूरी तरह साफ हो चुका था। वहाँ की दीवारों को छूते हुए उसे महसूस हुआ कि कुछ और भी है। फर्श की एक दरार में उसे एक जला हुआ कागज़ मिला। यह दिग्विजय सिंह का नहीं था। यह किसी 'तीसरे पक्ष' का था। कागज़ पर लिखा था — "बाज केवल एक परिंदा था। असली शिकारी तो अभी सो रहा है। 'सूर्यास्त' का इंतज़ार करो"। "उसी रात नीलपुरा के एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर एक महिला खड़ी थी। उसने अपना चेहरा एक शॉल से ढका हुआ था। उसके चेहरे का आधा हिस्सा जल चुका था लेकिन उसकी आँखों में प्रतिशोध की आग थी। उसने पीसीओ से एक फोन किया,

"हेलो… काम पूरा नहीं हुआ। आर्यन और मीरा अभी भी जीवित हैं लेकिन मेरे पास वह 'अंतिम चाबी' है जो वे कभी नहीं ढूँढ पाए। मुझे 'नींव' को हिलाने के लिए आपकी मदद चाहिए"। दूसरी तरफ से एक भारी आवाज़ आई — "धैर्य रखो, अनन्या। सूर्यास्त होने वाला है"।

अध्याय 15
सूर्यास्त का उदय और वैश्विक बिसात

नीलपुरा की सुबह अब वैसी नहीं रही थी, जैसी छह महीने पहले थी। जहाँ एक ओर सूर्यगढ़ हवेली के रिस्टोरेशन का काम फिर से शुरू हुआ था, वहीं दूसरी ओर एक अदृश्य जाल बुना जा रहा था। कहानी अब गिरि-शिखर की पहाड़ियों से निकलकर स्विट्ज़रलैंड के जिनेवा शहर के एक आलीशान, ठंडे बोर्ड रूम में पहुँच चुकी थी। जिनेवा की एक निजी बैंक की तिजोरी में, जिसे 'सिग्मा ट्रस्ट' कहा जाता था, एक व्यक्ति बैठा था। उसने काले रंग का सूट पहना था और उसकी कलाई पर 'बाज' नहीं, बल्कि एक 'डूबते हुए सूरज' (The Sunset) का प्रतीक बना हुआ था। उसके सामने की मेज पर आर्यन और मीरा की तस्वीरें थीं। ''तो दिग्विजय सिंह विफल रहा?'', उस व्यक्ति ने एक गहरी आवाज़ में पूछा। ''जी सर!'', उसके सामने खड़े सहायक ने जवाब दिया। ''लेकिन अनन्या जीवित है। वह हमारे संपर्क में है। उसने 'शाही वसीयत' के उस हिस्से का ज़िक्र किया है जिसे आर्यन और मीरा अभी तक डिकोड नहीं कर पाए हैं'', उस व्यक्ति ने एक फाइल खोली, जिसपर 'परियोजना सूर्यास्त: 1947' लिखा था। यह फाइल भारत की आज़ादी के समय की उन गुप्त संधियों के बारे में थी, जिन्हें इतिहास की किताबों से मिटा दिया गया था। 'सूर्यास्त (The Sunset)' कोई मामूली अपराधी गिरोह नहीं था, यह एक अंतरराष्ट्रीय सिंडिकेट था जो दुनिया भर की पुरानी रियासतों की गुप्त संपत्तियों और उनके राजनैतिक रहस्यों को नियंत्रित करता था। इधर नीलपुरा में, आर्यन हवेली के बेसमेंट में काम कर रहा था। कोर्ट से क्लीन चिट मिलने के बाद वह और भी बारीकी से नक्शों का अध्ययन कर रहा था। उसे महसूस हुआ कि 'कक्ष संख्या 9' सिर्फ एक अंत नहीं था, बल्कि एक 'प्रवेश द्वार' था। "मीरा, इधर देखो'', आर्यन ने

दीवारों की थर्मल स्कैनिंग रिपोर्ट दिखाते हुए कहा, ''हवेली की नींव पत्थरों पर नहीं, बल्कि एक खोखले 'वॉल्ट (Vault)' पर टिकी है... और यह वॉल्ट किसी भी भारतीय तकनीक से नहीं बना है, यह 19वीं सदी की ब्रिटिश मिलिट्री इंजीनियरिंग का नमूना है।''मीरा ने गौर से देखा, ''इसका मतलब दिग्विजय सिंह को भी पूरी सच्चाई नहीं पता थी? वह सिर्फ मूर्तियों के पीछे था, लेकिन इसके नीचे कुछ और भी है?'' आर्यन ने सिर हिलाया, ''मूर्तियाँ सिर्फ एक बहाना थीं ताकि लोग खुदाई करते रहें और असली राज तक पहुँचने का रास्ता साफ़ हो जाए। अनन्या और उसके नए आका जानते हैं कि इस वॉल्ट के अंदर क्या है।'' अचानक, आर्यन का पूरा सर्वर क्रैश हो गया। ऑफिस की लाइट्स टिमटिमाईं और स्क्रीन पर एक ही संदेश फ्लैश होने लगा — "The sun sets for everyone. Do not dig deeper. "उसी पल मीरा के फोन पर एक वीडियो आया। वह वीडियो जिनेवा की उसी तिजोरी का था, जहाँ मीरा के पिता की एक पुरानी, खून से सनी हुई 'आर्मी बैज' रखी थी। मीरा के पैर कांपने लगे। इसका मतलब उसके पिता की मौत के तार केवल नीलपुरा के स्थानीय कलेक्टर से नहीं, बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र से जुड़े थे। हवेली की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी, लेकिन खतरा अब शारीरिक से ज्यादा तकनीकी और मानसिक हो चुका था। तभी मीरा को लंदन से एक कूरियर मिला। अंदर एक पुरानी डायरी थी और एक पत्र था। पत्र भेजने वाला कोई 'एडवर्ड थॉमसन' था, जो ब्रिटिश राज के समय के एक अधिकारी का पोता था। पत्र में लिखा था — ''सूर्यगढ़ हवेली का नक्शा अधूरा है। असली नक्शा लंदन के 'इंडिया हाउस' की लाइब्रेरी में सुरक्षित है। मेरे दादाजी ने 'परियोजना सूर्यास्त' को रोकने की कोशिश की थी, लेकिन वे मारे गए। अब आपकी बारी है।'' मीरा ने आर्यन को वह पत्र दिखाया, ''आर्यन, हमें लंदन जाना होगा। यहाँ रहकर हम सिर्फ बचाव कर रहे हैं, हमें हमला करना होगा''। उधर, नीलपुरा के बाहरी इलाके में एक पुराने गोदाम में अनन्या बैठी थी। उसके चेहरे का जलना अब उसके प्रतिशोध को और भी भयानक बना चुका था। उसने एक विदेशी डॉक्टर से अपना चेहरा ठीक करवाया था लेकिन उसने अपनी आँखों की नफरत को नहीं बदला। "सूर्यास्त

के लोग तैयार हैं,'' अनन्या ने फोन पर कहा। ''आर्यन और मीरा लंदन जाने की योजना बना रहे हैं। उन्हें जाने दो। वहाँ वे हमारे जाल में और भी आसानी से फँस जाएँगे। 'ऑपरेशन सूर्यास्त' का अंतिम चरण वहीं शुरु होगा''। ज़ोया, जो अभी भी अस्पताल में रिकवर कर रही थी, उसने आर्यन और मीरा को बुलाया, ''सुनो, 'द सनसेट' कोई छोटा गिरोह नहीं है। यह दुनिया की सबसे पुरानी 'सीक्रेट सोसाइटीज' में से एक है। वे इतिहास को अपनी मर्जी से बदलते हैं। अगर तुम लंदन जा रहे हो, तो याद रखना कि वहाँ हर दीवार के कान हैं।'' उसने उन्हें एक छोटा-सा 'एन्क्रिप्शन डिवाइस' दिया।'' इसका उपयोग तब करना, जब तुम्हें लगे कि कोई रास्ता नहीं बचा है। यह सीधे NIS (National Intelligence Squad) के ग्लोबल डेस्क से जुड़ा है''। आर्यन और मीरा ने नीलपुरा छोड़ा। जाते समय उन्होंने एक आखिरी बार हवेली को देखा। हवेली अब उन्हें एक रक्षक नहीं, बल्कि एक राज़दार लग रही थी। "हमें वापस आना है, आर्यन लेकिन हवेली का काम पूरा करने के लिए नहीं, बल्कि इसके राज़ को हमेशा के लिए दफन करने के लिए'', मीरा ने कहा। आर्यन ने उसका हाथ थाम लिया, ''हम आएँगे... और इस बार हम मोहरे नहीं, खिलाड़ी होंगे''। लंदन पहुँचते ही उन्हें एहसास हुआ कि वे यहाँ भी अकेले नहीं हैं। एयरपोर्ट से ही एक काली जगुआर उनका पीछा कर रही थी। होटल पहुँचते ही उन्हें एक लिफाफा मिला, जिसमें उनके कमरे की चाबी के साथ एक छोटा-सा सोने का सिक्का था, वही सिक्का जो जलमग्न मंदिर में दिखा था। सिक्के पर लिखा था — "Welcome to the end!"

अध्याय 16
टेम्स के किनारे मौत की दस्तक

लंदन की सर्दियाँ वैसी नहीं थीं, जैसी नीलपुरा की गुलाबी ठंड। यहाँ की ठंड हड्डियों को चीर देने वाली थी और ऊपर से छाई हुई पीली धुंध (The London Fog) शहर को एक रहस्यमयी पर्दे में लपेटे हुए थी। आर्यन और मीरा ने दक्षिण लंदन के एक पुराने, लेकिन सुरक्षित समझे जाने वाले बुटीक होटल में कमरा लिया था। आर्यन खिड़की के पास खड़ा था, बाहर की पीली लाइट्स को देख रहा था, जो धुंध में डूब रही थीं। उसके हाथ में वह सोने का सिक्का था, जो उन्हें होटल पहुँचते ही मिला था। उसपर ’द सनसेट’ का प्रतीक उभरा हुआ था — एक डूबता हुआ सूरज, जो विनाश का संकेत था।

"वे हमें यहाँ भी ढूँढ चुके हैं, मीरा,” आर्यन ने धीमी आवाज़ में कहा। ”लंदन में हमारे कदम रखते ही उन्हें खबर हो गई, इसका मतलब ’सूर्यास्त’ का नेटवर्क ब्रिटिश इंटेलिजेंस या एयरपोर्ट अथॉरिटी के भीतर भी है”। मीरा बेड पर बैठी थी, उसके सामने एडवर्ड थॉमसन की भेजी हुई पुरानी डायरी खुली थी। ”आर्यन, डरने का समय जा चुका है। अगर वे हमें मारना चाहते, तो एयरपोर्ट पर ही मार देते। वे हमें डरा रहे हैं क्योंकि उन्हें डर है कि हम ’इंडिया हाउस’ की उस सीक्रेट लाइब्रेरी तक पहुँच जाएँगे, जहाँ ‘परियोजना सूर्यास्त’ का असली नक्शा रखा है”, उसने डायरी का एक पन्ना दिखाया, जिसपर टेम्स नदी के पास स्थित एक पुराने गोदाम का पता लिखा था। ”हमें कल सुबह ’इंडिया हाउस’ जाने से पहले इस पते पर जाना होगा। एडवर्ड के दादाजी ने यहाँ कुछ छुपाया था”। अचानक कमरे की लाइट्स एक झटके से बंद हो गईं। होटल के कॉरिडोर में ’फायर अलार्म’ गूँज उठा।

"आर्यन!" मीरा चिल्लाई। "शांत रहो, यह पैनिक पैदा करने के लिए है", आर्यन ने मीरा का हाथ पकड़ा और उसे फर्श पर बैठने का इशारा किया। तभी कमरे के दरवाज़े पर एक ज़ोरदार प्रहार हुआ। दरवाज़ा टूटा नहीं, लेकिन दरार पड़ गई। आर्यन ने पास रखा एक भारी लैंप उठाया। दरवाज़े के नीचे से एक छोटा-सा गैस कैनिस्टर (Gas Canister) अंदर फेंका गया। सफ़ेद धुआँ तेज़ी से कमरे में फैलने लगा।

"मास्क लगाओ!", आर्यन ने अपना मफलर मीरा के चेहरे पर बाँधा। वे खिड़की के रास्ते 'फायर एस्केप' सीढ़ियों की ओर भागे। पीछे से गोलियों की आवाज़ आई। दो लंबे, काले ओवरकोट पहने हमलावर उनके पीछे थे। उनकी कलाई पर वही 'सूर्यास्त' का टैटू था। आर्यन ने सीढ़ियों का दरवाज़ा अंदर से लॉक किया और वे नीचे की ओर भागे। लंदन की बारिश और धुंध ने उन्हें गलियों में ओझल होने में मदद की, लेकिन खतरा अभी टला नहीं था। अगली सुबह, जब शहर जाग रहा था, आर्यन और मीरा भेष बदलकर 'इंडिया हाउस' पहुँचे। यह एक ऐतिहासिक इमारत थी, जहाँ भारत से जुड़े गुप्त दस्तावेज़ रखे गए थे। एडवर्ड थॉमसन ने उन्हें एक 'एक्सेस कोड' दिया था। लाइब्रेरी की गहराई में, जहाँ पुरानी किताबों की गंध और सन्नाटा था, वे 'सेक्शन 14-B' में पहुँचे। वहाँ रखी फाइलें 1947 के विभाजन के समय की थीं। आर्यन ने वह संदूक वाली 'शाही मुहर' निकाली। उसे एक विशेष स्लॉट में फिट किया गया। अचानक एक गुप्त दराज खुली। अंदर एक बड़ा, मखमली नक्शा था। यह सूर्यगढ़ हवेली का वह हिस्सा था जो भारत में मौजूद नक्शों में कभी था ही नहीं। "आर्यन, देखो!", मीरा ने नक्शे पर अंगुली रखी। "हवेली के नीचे केवल एक वॉल्ट नहीं है, वहाँ एक 'केमिकल चैंबर' का ज़िक्र है। 'परियोजना सूर्यास्त' का असली मकसद खज़ाना नहीं था... यह एक रासायनिक हथियार (Chemical Weapon) था, जिसे ब्रिटिश सेना ने दूसरे विश्व युद्ध के दौरान वहाँ छुपाया था!" आर्यन के रोंगटे खड़े हो गए, "इसका मतलब 'सूर्यास्त' गिरोह उस पुराने वायरस या गैस को हासिल करना चाहता है ताकि वे दुनिया को ब्लैकमेल कर सकें? यह तो खजाने से भी ज़्यादा

खतरनाक है"। तभी लाइब्रेरी के दूसरे छोर से हील्स की आवाज़ आई — 'टिक-टिक-टिक'। धुंधली रोशनी में एक आकृति उभरी। उसका आधा चेहरा एक सुंदर मास्क से ढका था लेकिन उसकी आँखें वही पुरानी नफरत उगल रही थीं। "अनन्या!", मीरा की आवाज़ में सिहरन थी। "लंदन बहुत छोटा है, है न?", अनन्या ने एक परिष्कृत पिस्तौल तानते हुए कहा। उसके पीछे 'सूर्यास्त' के चार पेशेवर कमांडो थे। "तुमने सोचा कि नीलगिरि के पत्थरों ने मुझे खत्म कर दिया? नहीं! उन्होंने मुझे नया जन्म दिया। अब वह नक्शा मुझे दे दो, वरना इस लाइब्रेरी की राख के साथ तुम्हारा इतिहास भी जल जाएगा!" आर्यन ने नक्शे को अपने कोट के अंदर छुपाया, "तुम पागल हो चुकी हो, अनन्या! तुम एक ऐसा हथियार दुनिया पर छोड़ने जा रही हो, जो सबको खत्म कर देगा"। "विनाश में ही नया निर्माण होता है, आर्यन! 'सूर्यास्त' के आका यही चाहते हैं", अनन्या ने ट्रिगर पर अंगुली कसी।

लाइब्रेरी में धुआँ फैलाकर आर्यन और मीरा पिछले दरवाज़े से बाहर निकले। बाहर एक काली जगुआर उनका इंतज़ार कर रही थी, लेकिन वह 'सूर्यास्त' की नहीं थी। वह एडवर्ड थॉमसन था। "जल्दी अंदर आओ!", एडवर्ड चिल्लाया।

गाड़ी लंदन की सड़कों पर 120 की रफ्तार से दौड़ने लगी। पीछे अनन्या की गाड़ियाँ लगी थीं। यह एक हाई-प्रोफाइल 'चेस (Chase)' बन गया था। लंदन की गलियों से होते हुए वे टेम्स नदी के किनारे 'वेस्टमिंस्टर ब्रिज' तक पहुँचे।

"नक्शा सुरक्षित है?", एडवर्ड ने पूछा।

"हाँ, पर अनन्या के पास बैकअप है", मीरा ने पीछे देखते हुए कहा।

अचानक एक हेलीकॉप्टर ऊपर मँडराने लगा। वह 'सूर्यास्त' का था। उन्होंने कार पर फायरिंग शुरु कर दी। एडवर्ड ने कार को एक पुराने गोदाम की ओर मोड़ा, जो सीधे नदी में खुलता था। गोदाम के अंदर पहुँचते ही एडवर्ड ने

कार रोकी। लेकिन यहाँ एक नया ट्विस्ट आया। एडवर्ड ने अपनी बंदूक निकाली और आर्यन की ओर तान दी।

"एडवर्ड? तुम क्या कर रहे हो?", आर्यन स्तब्ध रह गया।

"सॉरी आर्यन, पर ’सूर्यास्त’ के आका बहुत शक्तिशाली हैं। उन्होंने मेरे परिवार को बंधक बना रखा है। मुझे यह नक्शा उन्हें सौंपना ही होगा", एडवर्ड की आँखों में पछतावा था, पर हाथ स्थिर थे। तभी गोदाम की छत फाड़कर कुछ कमांडो नीचे उतरे। लेकिन वे न तो ’सूर्यास्त’ के थे और न ही पुलिस के। उनके सूट पर एक ’गोल्डन ईगल (The Golden Eagle)’ का निशान था। उन्होंने पलक झपकते ही एडवर्ड को निहत्था कर दिया और अनन्या की टीम को बाहर ही रोक दिया। उनका लीडर आगे बढ़ा। उसने अपना हेलमेट उतारा। वह एक प्रभावशाली उम्रदराज़ महिला थी।"मिस्टर खन्ना, मिस मीरा… मैं ’ऑर्डर ऑफ द ईगल’ से हूँ। हम सदियों से ’सूर्यास्त’ को रोकने का काम कर रहे हैं। आप हमारे सुरक्षित हाथों में हैं"। आर्यन और मीरा को एक प्राइवेट जेट की ओर ले जाया गया। नक्शा अब सुरक्षित था, लेकिन अब उन्हें पता चला कि यह लड़ाई केवल नीलपुरा की एक हवेली की नहीं, बल्कि मानवता को बचाने की है।

"हमें वापस भारत जाना होगा", उस महिला ने कहा। "हवेली के नीचे जो चैंबर है, उसे एक्टिवेट करने का काउंटडाउन शुरु हो चुका है। अनन्या और उसके आका वहाँ पहुँच चुके हैं"। आर्यन ने मीरा की ओर देखा, "अब यह सिर्फ हमारी लड़ाई नहीं रही, मीरा!" मीरा ने नक्शे को देखा। "यह अंत नहीं है, आर्यन! यह उस ’सूर्यास्त’ को रोकने की आखिरी सुबह है"।

अध्याय 17
घर वापसी और मृत्यु कक्ष की गूँज

लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट से उड़ा 'ऑर्डर ऑफ द ईगल' का वह प्राइवेट जेट जब नीलपुरा के मार्तंड देव हवाई अड्डे पर उतरा, तो आसमान में काले बादल छाए हुए थे। आर्यन और मीरा जब विमान से बाहर निकले, तो उनके चेहरे पर वह थकान नहीं थी जो एक लंबी यात्रा के बाद होती है, बल्कि एक ऐसा तनाव था जो केवल उन लोगों के चेहरे पर होता है जो जानते हैं कि वे तबाही के मुहाने पर खड़े हैं।

नीलपुरा की हवा में हमेशा एक मिठास होती थी, लेकिन आज आर्यन को उसमें गंधक (sulphur) की तीखी गंध महसूस हो रही थी। एयरपोर्ट पर 'गोल्डन ईगल' की लीडर, एलिजाबेथ ने उन्हें एक सुरक्षित काफिले में बिठाया।

"मिस्टर खन्ना! याद रहे... हम यहाँ एक 'विदेशी सेना' की तरह काम नहीं कर सकते", एलिजाबेथ ने गम्भीर स्वर में कहा, "भारत की स्थानीय पुलिस और सेना को इस बायो-वेपन के बारे में कुछ नहीं पता। अगर खबर फैली, तो भगदड़ मच जाएगी। हमें 'सूर्यास्त' के आकाओं को उसी हवेली के भीतर रोकना होगा"।

मीरा ने अपने पास रखे उस 'लंदन वाले नक्शे' को कसकर पकड़ लिया, "हवेली अब एक घर नहीं रही, वह एक टाइम-बम बन चुकी है। आर्यन, हमें उस चैंबर तक पहुँचने के लिए उसी पुराने रास्ते का इस्तेमाल करना होगा जिसे हमने पहली बार खोजा था"। जब वे सूर्यगढ़ हवेली के मुख्य द्वार पर पहुँचे, तो नज़ारा बदला हुआ था। चारों ओर सुरक्षा घेरा था, लेकिन आर्यन

को महसूस हुआ कि पहरा देने वाले कई चेहरे 'अनजान' थे। क्या 'सूर्यास्त' ने पुलिस की वर्दी में अपने गुर्गे वहाँ तैनात कर दिए थे?

हवेली के भीतर कदम रखते ही आर्यन को वही पुरानी धूल भरी गंध आई, लेकिन आज उसमें एक 'धात्विक (metallic)' गूँज थी। निर्माण कार्य रुका हुआ था। नक्शे और औज़ार बिखरे पड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे हवेली किसी का इंतज़ार कर रही हो। आर्यन, मीरा और एलिजाबेथ की एक छोटी टीम गुप्त तहखाने में उतरी। 'कक्ष संख्या 9' जहाँ से मूर्तियाँ मिली थीं, वह अब एक साधारण कमरा लग रहा था, लेकिन लंदन के नक्शे के अनुसार उस कमरे के फर्श के नीचे एक और यांत्रिक संरचना थी।

आर्यन ने फर्श की उन काली टाइलों को हटाया जिन्हें उसने कभी नहीं छुआ था। नीचे एक भारी, पीतल का पहिया (Lever) था। ''इसे घुमाने के लिए तीन लोगों की ताकत चाहिए'', आर्यन ने हाँफते हुए कहा।

जैसे ही उन्होंने लीवर घुमाया, हवेली की दीवारें काँपने लगीं। फर्श के ठीक बीच में एक छेद हुआ और एक लोहे का लिफ्ट जैसा ढाँचा ऊपर आया। यह ब्रिटिश मिलिट्री इंजीनियरिंग का 80 साल पुराना चमत्कार था।

"यह हमें 'डेथ चैंबर' तक ले जाएगा'', मीरा ने टॉर्च की रोशनी नीचे डालते हुए कहा, जहाँ गहरा अंधेरा और सीलन भरी हवा थी। लिफ्ट जैसे ही नीचे रुकी, उनके सामने एक विशाल हॉल खुला। वहाँ काँच के बड़े-बड़े कंटेनर्स थे जिनमें पीली गैस और कुछ अजीब से जैविक नमूने (Biological Samples) रखे थे। दीवारों पर बड़े अक्षरों में लिखा था — "PROJECT SUNSET: 1944. DESTROY UPON RETREAT (परियोजना सूर्यास्त: 1944. वापसी पर इसे नष्ट कर दें")।

"यह वह गैस है, आर्यन!,'' एलिजाबेथ ने अपने सूट का सेंसर ऑन करते हुए कहा। ''इसे 'प्रोटोकॉल-एक्स' कहा जाता है। यह हवा के संपर्क में आते ही इंसानी तंत्रिका तंत्र (Nervous System) को जाम कर देती है। अगर यहाँ एक भी कंटेनर टूटा, तो पूरा नीलपुरा 30 मिनट के भीतर एक कब्रिस्तान

बन जाएगा"। तभी अंधेरे से तालियों की एक गूँज सुनाई दी। "शानदार! आपने मेरा आधा काम आसान कर दिया। मुझे वह गुप्त दरवाज़ा खोलने का कोड नहीं मिल रहा था"।

हॉल की दूसरी ओर से अनन्या बाहर आई, लेकिन वह अकेली नहीं थी। उसके साथ एक व्यक्ति था जिसे देखकर आर्यन के पैर जम गए। वह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि मार्तंड ट्रस्ट के हेड, कर्नल प्रताप सिंह थे — वही व्यक्ति जिन्होंने आर्यन को यह परियोजना सौंपी थी।

"कर्नल? आप?", आर्यन चिल्लाया, "आप तो देश की रक्षा की बात करते थे!"

कर्नल प्रताप ने एक कुटिल मुस्कान दी, "रक्षा? आर्यन, इतिहास विजेताओं द्वारा लिखा जाता है। ब्रिटिश सरकार ने यह हथियार मेरे परिवार को सौंपा था ताकि हम ज़रूरत पड़ने पर इसे सौदेबाज़ी के लिए इस्तेमाल कर सकें। 'सूर्यास्त गिरोह' के साथ मिलकर हम इस गैस को एक वैश्विक बाज़ार में बेचने वाले हैं। तुम जैसे छोटे आर्किटेक्ट को तो मैंने बस खुदाई पूरी करवाने के लिए बुलाया था।"

अनन्या, जिसका चेहरा मास्क के नीचे अब और भी डरावना लग रहा था, एक कंटेनर के पास खड़ी थी। उसके हाथ में एक छोटा-सा रिमोट था"। आर्यन, तुमने मुझे छोड़कर मीरा को चुना। आज मैं तुम्हें वह विदाई दूँगी, जिसे दुनिया याद रखेगी। जैसे ही कर्नल अपनी डील फाइनल करेंगे, मैं यह रिमोट दबाऊँगी। हवेली का यह हिस्सा सील हो जाएगा और तुम सब इसी गैस में घुट-घुट कर मरोगे"।

मीरा ने धीरे से अपना कैमरा बैग खोला, "तुम यह नहीं करोगी, अनन्या। अगर तुमने यह किया, तो तुम भी नहीं बचोगी"।

"मैं तो पहले ही मर चुकी हूँ, मीरा। नीलगिरि की पहाड़ियों में जो बची थी, वह केवल राख थी", अनन्या की आँखें विक्षिप्त लग रही थीं। अचानक

कर्नल प्रताप ने एक बटन दबाया। भारी लोहे के दरवाजे ’क्लैंक’ की आवाज़ के साथ बंद हो गए। ’गोल्डन ईगल’ के कमांडो बाहर ही रह गए। अब अंदर केवल आर्यन, मीरा, एलिजाबेथ, अनन्या और कर्नल थे।

"डील शुरु हो चुकी है”, कर्नल ने एक सैटेलाइट फोन पर बात करते हुए कहा। ’’खरीदार पहुँच रहे हैं... और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, आर्यन… ’डेथ चैंबर’ में तुम्हारा स्वागत है!”

हॉल के कोनों से धीरे-धीरे पीली धुँध निकलनी शुरु हो गई थी। अलार्म बजने लगा था।

"आर्यन, हमारे पास केवल 15 मिनट हैं इस गैस को न्यूट्रलाइज करने के लिए”, एलिजाबेथ ने अपना मास्क पहनते हुए कहा।

आर्यन ने मीरा की ओर देखा, ’’मीरा! वह लंदन वाला नक्शा… उसमें इस चैंबर को ’फ्लश (Flush)’ करने का कोई रास्ता ज़रूर होगा!”

बाहर बारिश और तेज़ हो गई थी, वहीं यहाँ ज़मीन के नीचे नीलपुरा की रूह को बचाने की जंग भी शुरु हो चुकी थी।

अध्याय 18
दम घोंटती नफरत और आखिरी प्रायश्चित

हवेली के पाताल में स्थित उस ’डेथ चैंबर’ के लोहे के दरवाजे जब एक भयानक गूँज के साथ बंद हुए, तो ऐसा लगा मानो नियति ने आर्यन और मीरा के लिए आखिरी फैसला सुना दिया हो। कर्नल प्रताप सिंह और उसके दो सशस्त्र अंगरक्षक ऊँचे सुरक्षा काँच के पीछे सुरक्षित थे, जहाँ से वे इन लोगों को तड़पते हुए देख सकते थे।

कोनों में लगे नोजल्स से ’प्रोटोकॉल-एक्स’ गैस रिसने लगी थी। वह पीली, गंधहीन मौत धीरे-धीरे फर्श पर बिछ रही थी। एलिजाबेथ ने तुरंत अपने और आर्यन-मीरा के लिए पोर्टेबल ऑक्सीजन मास्क निकाले।

"हमारे पास केवल 15 मिनट का ऑक्सीजन है”, एलिजाबेथ ने गम्भीर स्वर में कहा, ”...लेकिन समस्या ऑक्सीजन की नहीं है। यह गैस त्वचा के छिद्रों से भी शरीर में प्रवेश कर सकती है। हमें इस लीकेज को अंदर से बंद करना होगा”।

आर्यन ने काँच की दीवार की ओर देखा, जहाँ कर्नल प्रताप खड़ा मुस्कुरा रहा था, ”कर्नल! आप अपनी ही विरासत को ज़हर दे रहे हैं! अगर यह गैस लीक हुई, तो ऊपर शहर में कोई नहीं बचेगा, आपका परिवार भी नहीं!”

कर्नल ने एक सिगार जलाया और ठंडे स्वर में बोला,”विरासतें खून माँगती हैं, आर्यन... और जहाँ तक मेरे परिवार का सवाल है, वे इस वक़्त दुबई के लिए उड़ान भर चुके हैं। तुम दोनों ने बहुत जानें ली थीं, अब इस ज्ञान

को अपने साथ कब्र में ले जाओ"। मीरा घुटनों के बल बैठकर लंदन वाले नक्शे को देख रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे, पर हाथ स्थिर थे, "आर्यन, यहाँ देखो! चैंबर के ठीक बीच में एक 'सेंट्रल वेंट' है। अगर हम गैस के बहाव को उल्टा (Reverse) कर सकें, तो यह गैस वापस उन कंटेनर्स में चली जाएगी। लेकिन उसके लिए किसी को उस चैंबर के अंदर जाना होगा, जहाँ गैस की डेंसिटी सबसे ज़्यादा है"। अनन्या, जो रिमोट थामे एक कोने में खड़ी थी, पागलों की तरह हँस रही थी, "देखो मीरा! अंत में तुम्हारी बहादुरी काम नहीं आई। तुम और तुम्हारा यह आर्किटेक्ट प्रेमी, दोनों इसी गैस के साये में खत्म हो जाओगे। मैंने जो खोया है, आज तुम भी वही खोओगी"।

मीरा ने अपना मास्क हटाया, "अनन्या! मेरी ओर देखो!"

"मास्क लगाओ, मीरा! तुम मर जाओगी!", आर्यन चिल्लाया।

पर मीरा नहीं रुकी। वह अनन्या के करीब गई, "अनन्या, तुम मुझसे नफरत करती हो क्योंकि तुम्हें लगता है कि मैंने तुम्हारा प्यार छीना। पर सच तो यह है कि कर्नल प्रताप ने तुम्हें कभी प्यार नहीं किया। तुम्हें पता है कि नीलगिरि के उस धमाके में तुम्हें मारने का आदेश किसने दिया था? आर्यन ने नहीं, कर्नल ने! उसने डायनामाइट पहले ही सेट कर दिया था क्योंकि तुम उसके लिए एक गवाह बन चुकी थी"।

अनन्या का हाथ काँपने लगा, "झूठ! कर्नल ने मुझे बचाया था..."।

"उसने तुम्हें बचाया नहीं, तुम्हें 'री-प्रोग्राम' किया ताकि तुम उसके लिए जान दे सको, " मीरा ने अनन्या की आँखों में झाँका। "तुम एक कलाकार थी, अनन्या। तुम सुंदर थी। देखो आईने में... उन्होंने तुम्हें क्या बना दिया — एक हथियार!"

अनन्या ने अपने चेहरे के मास्क को छुआ। उसे वह पल याद आया जब आग की लपटों ने उसे घेरा था और कर्नल के आदमी उसे बचाने के बजाय उसके हाथ से वह 'चाबी' छीनने की कोशिश कर रहे थे। उसे याद आया कि

कैसे आर्यन ने उसे मलबे से निकालने के लिए हाथ बढ़ाया था, इससे पहले कि पहाड़ी ढह जाए।

उसकी आँखों में एक भयानक सच कौंधा, ''मैं… मैं एक मोहरा थी!''

कर्नल ने काँच के पीछे से चिल्लाकर कहा, ''अनन्या! बकवास बंद करो और रिमोट दबाओ! चैंबर को पूरी तरह सील करो!'' अनन्या ने कर्नल की ओर देखा और फिर रिमोट की ओर। उसने रिमोट का बटन दबाया, पर चैंबर सील करने के लिए नहीं। उसने वेंटिलेशन सिस्टम का सुरक्षा कवच तोड़ दिया।

"नहीं!'', कर्नल दहाड़ा। उसने अपने गार्ड्स को फायरिंग का आदेश दिया।

काँच की दीवार बुलेटप्रूफ थी, पर अनन्या ने एक भारी गैस सिलेंडर उठाया और उसे वेंट के मुख्य पाइप पर दे मारा। गैस का प्रेशर बदलने लगा। अलार्म की आवाज़ तेज़ हो गई।

"आर्यन... मीरा! भागो!'', अनन्या चिल्लाई। ''वेंट के पीछे एक इमरजेंसी डक्ट है, वह सीधे ऊपर दर्पण झील में खुलता है... जल्दी!''

"तुम भी चलो हमारे साथ!'', आर्यन ने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की।

"नहीं आर्यन!'', अनन्या के चेहरे पर एक शांत, दुखद मुस्कान आई। ''मेरा सफर यहीं तक था। इस गैस ने मेरे फेफड़ों को पहले ही जकड़ लिया है। मुझे यह पाइप पकड़कर रखना होगा ताकि प्रेशर वापस न लौटे। तुम जाओ और उस कर्नल को मत छोड़ना''। आर्यन और मीरा ने भारी मन से उस सँकरी डक्ट में प्रवेश किया। जैसे ही वे ऊपर की ओर बढ़ने लगे, उन्होंने नीचे देखा। अनन्या ने पाइप को मजबूती से थाम रखा था। गैस की पीली परत उसे ढक चुकी थी। उसने आखिरी बार आर्यन की ओर देखा और उसके होंठों से एक खामोश शब्द निकला — "सॉरी!"। एक ज़ोरदार धमाका हुआ। चैंबर

का प्रेशर पाइप फट गया। अनन्या उस धमाके और गैस के गुबार में विलीन हो गई। उसने अपनी मौत से उन दो लोगों को बचा लिया जिनसे उसने सबसे ज्यादा नफरत की थी। आर्यन और मीरा दर्पण झील के ठंडे पानी में बाहर निकले। रात का सन्नाटा चारों ओर था। वे हाँफ रहे थे, भीगे हुए थे और स्तब्ध थे। दूर हवेली के भीतर से धुएँ का एक काला गुबार निकल रहा था।

"उसने हमें बचा लिया", मीरा ने सिसकते हुए कहा।

आर्यन ने हवेली की ओर देखा, ''उसने सिर्फ हमें नहीं बचाया, मीरा.... उसने खुद को आज़ाद कर लिया''।

लेकिन उनकी जंग अभी खत्म नहीं हुई थी। कर्नल प्रताप अभी भी जीवित था और 'सूर्यास्त' का अंतिम चरण शुरु होने वाला था।

अध्याय 19
मौत का पीछा और आख़िरी सौदेबाजी

दर्पण झील का ठंडा पानी आर्यन और मीरा के फेफड़ों में जमी उस पीली गैस की जलन को पूरी तरह मिटा नहीं पाया था। जैसे ही वे किनारे पर आए, उन्होंने देखा कि सूर्यगढ़ हवेली के बुर्ज से काला धुआँ निकल रहा था। एम्बुलेंस और पुलिस की सायरन की आवाज़ें शहर की शांति को चीर रही थीं। एलिजाबेथ, जो अपनी टीम के साथ हवेली के मुख्य द्वार पर पहुँच चुकी थी, ने आर्यन को सहारा देकर बाहर निकाला। "कर्नल प्रताप निकल चुका है", उसने गुस्से में कहा, "उसने हवेली के पिछले हिस्से में एक गुप्त सुरंग का इस्तेमाल किया जो सीधे शहर के पुराने रेलवे स्टेशन के पास खुलती है। उसके पास 'प्रोटोकॉल-एक्स' का एक छोटा वायल (Vial) है, अगर वह इसे अंतरराष्ट्रीय खरीदारों को सौंप देता है, तो अनन्या का बलिदान व्यर्थ जाएगा"।

मीरा ने अपनी भीगी हुई शर्ट की आस्तीन से आँखें पोंछीं, "वह कहाँ जा रहा होगा? उसके पास पैसा है, पहुँच है और अब वह एक घायल जानवर की तरह खतरनाक है"।

आर्यन ने गीले मलबे के बीच से अपना फोन निकाला, जो वाटरप्रूफ केस की वजह से बच गया था।"कर्नल को लगा कि उसने सब कुछ मिटा दिया, लेकिन उसने एक चीज़ छोड़ दी। हवेली के डिजिटल ब्लूप्रिंट्स में एक 'रिमोट एक्सेस' ट्रैकर लगा था जो केवल मेरे सिस्टम से जुड़ा था। अगर कर्नल ने वह छोटा सूटकेस साथ लिया है, तो वह मेरे फोन पर सिग्नल देगा"। फोन की स्क्रीन पर एक लाल बिंदु धड़क रहा था। वह बिंदु नीलपुरा के सिटी

पैलेस से दूर 'सज्जनगढ़ (Monsoon Palace)' की पहाड़ियों की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था।

"सज्जनगढ़?", मीरा ने हैरानी से कहा, "वहाँ तो केवल सन्नाटा और ऊँचाई है..."।

"वही तो…!", एलिजाबेथ ने गन लोड करते हुए कहा, "वहाँएक प्राइवेट हेलीपैड है जिसका इस्तेमाल इमरजेंसी में होता है। खरीदार वहीं आ रहे होंगे"।

NIS (National Intelligence Squad) की दो बख्तरबंद गाड़ियाँ और एलिजाबेथ की टीम पहाड़ी रास्तों पर दौड़ रही थी। कर्नल प्रताप एक काली एसयूवी में था, जिसके पीछे उसके वफादार भाड़े के सैनिक (Mercenaries) थे। रास्ता घुमावदार था और एक तरफ गहरी खाई।

आर्यन और मीरा एलिजाबेथ की गाड़ी में थे। आर्यन लगातार सिग्नल देख रहा था, "वह हमसे केवल 2 किलोमीटर दूर है। वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँचने वाला है"।

अचानक कर्नल की गाड़ी से गोलियों की बौछार शुरु हो गई। पहाड़ की शांति गोलियों की गूँज से टूट गई। कर्नल ने एक ग्रेनेड पीछे की ओर फेंका, जिससे एक बड़ा पत्थर टूटकर आर्यन की गाड़ी के सामने गिरा। ड्राइवर ने फुर्ती से गाड़ी मोड़ी, लेकिन वे खाई के बिल्कुल किनारे पर थे।

मीरा ने देखा कि कर्नल की गाड़ी एक मोड़ पर रुकी। वहाँ एक विदेशी हेलीकॉप्टर पहले से मँडरा रहा था। उसपर 'द सनसेट (The Sunset)' का वही प्रतीक बना था।

"वे उसे ले जाएँगे!", मीरा चिल्लाई। "आर्यन, अगर वह हेलीकॉप्टर उड़ गया, तो हम उसे कभी नहीं पकड़ पाएँगे!"

आर्यन ने एलिजाबेथ की ओर देखा, "हमें सीधे ऊपर चढ़ना होगा। पहाड़ के रास्तों से नहीं, बल्कि पैदल!" आर्यन और मीरा हाँफते हुए सज्जनगढ़ की

चोटी पर पहुँचे। सामने कर्नल प्रताप खड़ा था, उसके हाथ में वह चाँदी का सूटकेस था। हेलीकॉप्टर से सीढ़ी नीचे लटक रही थी। 'सूर्यास्त' के नकाबपोश एजेंट हाथ बढ़ा रहे थे।

"रुक जाओ, कर्नल!", आर्यन की आवाज़ पहाड़ों में गूँजी।

कर्नल मुड़ा। उसका चेहरा खून से सना था, पर उसकी आँखों में अभी भी वही अहंकार था। "आर्यन खन्ना… तुम एक जिद्दी इंसान हो। पर तुम भूल रहे हो कि यह शतरंज की बिसात है... और राजा कभी मात नहीं खाता!"

"आप राजा नहीं हैं, कर्नल… आप एक गद्दार हैं!", मीरा ने कहा। उसका कैमरा अब वीडियो मोड पर था, जो सीधे NIS (National Intelligence Squad) के हेडक्वार्टर में ब्रॉडकास्ट हो रहा था, "पूरी दुनिया आपको देख रही है। आपकी डील, आपका चेहरा और आपका सच!" हेलीकॉप्टर से एक आवाज़ आई, जो 'सूर्यास्त' के आका की थी, "प्रताप, तुमने कहा था कि यह ऑपरेशन गुप्त होगा। अब तुम एक लायबिलिटी (Liability) बन चुके हो। हमें केवल सैंपल चाहिए, तुम नहीं!"

कर्नल का चेहरा सफेद पड़ गया — "क्या? तुम मुझे यहाँ नहीं छोड़ सकते!"

हेलीकॉप्टर से एक स्नाइपर शॉट चला। गोली कर्नल के कंधे पर लगी और सूटकेस उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरा। हेलीकॉप्टर ने बिना उसे लिए उड़ान भरनी शुरु कर दी। 'सूर्यास्त गिरोह' ने अपने ही साथी को मरने के लिए छोड़ दिया था। कर्नल प्रताप ज़मीन पर गिर पड़ा। आर्यन दौड़कर सूटकेस के पास पहुँचा और उसे सुरक्षित कर लिया। एलिजाबेथ की टीम ने कर्नल को घेर लिया। लेकिन इन सबके बाद भी कर्नल हँस रहा था। मरते हुए भी उसकी हँसी डरावनी थी — "तुम्हें लगता है कि तुम जीत गए? तुमने केवल एक सैंपल पकड़ा है। 'सूर्यास्त' के पास ऐसे दस और ठिकाने हैं.... और सबसे बड़ा ठिकाना तुम्हारे घर के अंदर है, आर्यन!"

आर्यन का दिल बैठ गया — "मेरे घर के अंदर? क्या मतलब है तुम्हारा?"

कर्नल ने अपनी आखिरी साँस ली और उसकी आँखें पथरा गईं। उसने जो कहा था, वह एक नई पहेली थी।

आर्यन ने मीरा की ओर देखा। नीलपुरा की रोशनी नीचे जगमगा रही थी, पर उनके ऊपर अभी भी गहरा अँधेरा था। 'सूर्यास्त गिरोह' भागा नहीं था, वह बस छिपने की जगह ढूँढ रहा था।

अध्याय 20
रक्त के अवशेष और वंशज का सच

सज्जनगढ़ की चोटी पर कर्नल प्रताप का बेजान शरीर पड़ा था लेकिन उसके आखिरी शब्द — "सबसे बड़ा ठिकाना तुम्हारे घर के अंदर है, आर्यन!" — यह पहाड़ों की हवा में किसी ठंडे श्राप की तरह तैर रहे थे। NIS (National Intelligence Squad) की टीमें सबूत इकट्ठा कर रही थीं लेकिन आर्यन वहीं पथराई आँखों से खड़ा था।

अगले दिन जब आर्यन अपने पैतृक घर (जो नीलपुरा के पुराने शहर के एक शांत कोने में स्थित था) पहुँचा, तो उसे सबकुछ बदला हुआ लगा। यह घर उसके दादा, पंडित विश्वनाथ खन्ना ने बनवाया था, जो मेवाड़ रियासत के मुख्य सलाहकार और इतिहासकार थे।

"आर्यन, तुम कल रात से सोए नहीं हो", मीरा ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। वह उसके साथ घर आई थी क्योंकि उसे डर था कि कर्नल की बात का आर्यन पर गहरा असर हुआ है।

"मीरा, कर्नल मर रहा था। मरता हुआ इंसान झूठ बोल सकता है, पर वह पहेलियाँ नहीं बुझाता...", आर्यन ने अपनी पुरानी लाइब्रेरी की ओर देखते हुए कहा, जहाँ हज़ारों फटी-पुरानी किताबें और पाण्डुलिपियाँ रखी थीं, ''मेरे दादाजी और कर्नल प्रताप के परिवार के बीच क्या संबंध था?''

आर्यन ने अपने दादाजी की पुरानी मेज की दराज़ों को खोलना शुरु किया। वहाँ उसे एक पुरानी वसीयत मिली, लेकिन वह वसीयत संपत्ति की नहीं थी। वह एक 'वचन-पत्र' था, उसपर उसके दादाजी और कर्नल के पिता के हस्ताक्षर थे।

वचन-पत्र पर लिखा था — "सूर्यास्त का समय होने पर खन्ना परिवार उस 'कुंजी' की रक्षा करेगा, जिसे मार्तंड भी नहीं जानते"।

आर्यन का माथा ठनका — "मीरा, मेरे दादाजी 'सूर्यास्त (The Sunset) गिरोह' को रोकने वाले नहीं थे… वे उसके संरक्षक (Guardian) थे!"आर्यन को याद आया कि बचपन में उसके दादाजी उसे पुस्तकालय के एक विशेष कोने में जाने से मना करते थे। उसने कालीन हटाया, तो वहाँ एक पीतल का हैंडल मिला। जब उसने उसे खींचा, तो एक गुप्त रास्ता नीचे की ओर जाता दिखा।

"यह घर नहीं है.... यह एक 'आर्काइव' है!", मीरा ने टॉर्च की रोशनी में उन दीवारों को देखते हुए कहा, जहाँ हज़ारों की संख्या में माइक्रोफिल्म्स और कागजात रखे थे।

वहाँ एक 'डार्क रूम' था, जहाँ तस्वीरें डेवलप की जाती थीं। दीवारों पर जो तस्वीरें टँगी थीं, उन्हें देखकर मीरा के हाथ से टॉर्च गिर गई। वहाँ मीरा के पिता, मेजर विक्रम प्रताप सिंह की तस्वीरें थीं लेकिन वे तस्वीरें युद्ध की नहीं थीं। वे तस्वीरें 'सूर्यास्त गिरोह' की गुप्त मीटिंग्स की थीं, जिनमें आर्यन के दादाजी भी मौजूद थे। एक पुरानी टेप रिकॉर्डर पर एक टेप मिली। आर्यन ने 'प्ले' बटन दबाया। उसके दादाजी की कांपती हुई आवाज़ गूँजी —

"आज विक्रम (मीरा के पिता) ने विद्रोह कर दिया है। उसने कहा कि वह इस ज़हर (बायो-वेपन) को दुनिया के सामने ले जाएगा। मुझे उसे रोकना होगा, वरना 'सूर्यास्त' के आका हमारे पूरे खानदान को मिटा देंगे। आर्यन, अगर तुम यह सुन रहे हो, तो जान लेना कि हम अपराधी नहीं थे, हम बस एक ऐसी शपथ से बँधे थे, जिसे तोड़ना मौत से भी बुरा था"।

आर्यन के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई, "मेरे दादाजी ने… मीरा, मेरे दादाजी ने तुम्हारे पिता की हत्या की साजिश में साथ दिया था!"

मीरा पीछे हट गई। उसकी आँखों में अविश्वास और दर्द का सैलाब था। जिस इंसान से वह प्यार करती थी, उसी के परिवार ने उसके पिता की जान ली थी। कमरे में तनाव इतना बढ़ गया था कि हवा भारी लग रही थी।"मीरा, मुझे नहीं पता था… मैं कसम खाता हूँ!", आर्यन ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"शपथ… विरासत… परिवार!", मीरा चिल्लाई। "सबने झूठ बोला! मेरे पिता अकेले लड़ रहे थे और तुम्हारे दादाजी उन लोगों के साथ थे जिन्होंने उन्हें मार डाला!"

तभी कमरे की दीवारों में लगा एक पुराना अलार्म बजने लगा। पुस्तकालय के ऊपर से किसी के भारी जूतों की आवाज़ आई।

"NIS (National Intelligence Squad) या पुलिस?", मीरा ने आँसू पोंछते हुए पूछा।

"नहीं…", आर्यन ने मॉनिटर पर देखा, "यह 'सूर्यास्त' का वह तीसरा पक्ष है जिसका ज़िक्र लंदन में हुआ था — द हंटर (The Hunter)!"

सीढ़ियों से एक लंबा, गठा हुआ शरीर वाला व्यक्ति नीचे उतरा। उसने चेहरे पर एक धातु का आधा मुखौटा पहन रखा था। उसकी आवाज़ यांत्रिक (mechanical) थी —

"आर्यन खन्ना! तुम्हारे दादाजी ने एक 'कुंजी' छोड़ी थी। वह तुम्हारी रगों में बहते खून के कोड में छिपी है। कर्नल प्रताप केवल एक मोहरा था, जिसे हमने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए इस्तेमाल किया। असली खेल अब शुरु होता है..."।

उसने एक इंजेक्शन गन निकाली — "तुम्हें हमारे साथ चलना होगा। तुम्हारे घर के नीचे जो वॉल्ट है, उसे केवल खन्ना परिवार का डीएनए (DNA) खोल सकता है"। आर्यन ने मीरा की ओर देखा। मीरा के पास भागने का मौका था लेकिन उसने रुकने का फैसला किया। उसने अपना कैमरा उठाया, पर इस बार फोटो खींचने के लिए नहीं। उसने कैमरे के भीतर

छिपा एक छोटा फ्लैश-बम फर्श पर पटका। धमाका हुआ और चारों ओर सफ़ेद धुआँ फैल गया।

"भागो, मीरा!", आर्यन उसे धक्का देते हुए चिल्लाया।

लेकिन हंटर ने आर्यन की गर्दन पकड़ ली — "तुम कहीं नहीं जा रहे, वारिस!"

हंटर, आर्यन को घसीटते हुए ले गया और मीरा उस अंधेरे घर में अकेली रह गई, उसके हाथ में उसके पिता की वह पुरानी डायरी थी जो अब एक नई जंग का नक्शा बन चुकी थी।

अध्याय 21
अकेली योद्धा और शिकारी का जाल

आर्यन के पैतृक घर की उस ठंडी लाइब्रेरी में मीरा अकेली खड़ी थी। हवा में अभी भी उस फ्लैश-बम का बारूदी धुआँ तैर रहा था। 'हंटर' आर्यन को ले जा चुका था। मीरा के कानों में अभी भी आर्यन के दादाजी की वह रिकॉर्डिंग गूँज रही थी कि कैसे उन्होंने मीरा के पिता के खिलाफ साजिश रची थी। मीरा की आँखों से आँसू गिरकर उसके पिता की डायरी पर पड़े। जिस इंसान (आर्यन) पर उसने भरोसा किया, उसका पूरा अस्तित्व उसी अँधेरे से जुड़ा था, जिसने मीरा का बचपन छीना था। लेकिन मीरा कमज़ोर नहीं थी। उसने अपने आँसू पोंछे और उस 'डार्क रूम' की दीवारों को फिर से देखना शुरु किया। ''पापा, आपने कुछ तो छोड़ा होगा...'', वह बुदबुदाई। उसने गौर किया कि एक तस्वीर के पीछे एक छोटा सा 'माइक्रो-डॉट्स (Microdots)' जैसा उभार था। उसने उसे निकाला और अपनी ज़ूम लेंस वाली डिवाइस से देखा। वह एक पता था—नीलपुरा के बाहरी इलाके में स्थित एक पुराना 'अनाथालय', जिसे उसके पिता गुप्त रूप से फंडिंग देते थे। मीरा को समझ आया कि उसके पिता ने अपनी मौत से पहले एक 'सेफ्टी नेट (Safety Net)' बनाया था। अगर 'सूर्यास्त' का साया उनके परिवार पर पड़ा, तो वह अनाथालय उनकी आखिरी उम्मीद होगा। उसने अपना कैमरा, कुछ जरूरी गियर्स और आर्यन के घर से मिली वह 'डीएनए कोडिंग' वाली फाइल उठाई।

वह जानती थी कि हंटर ने आर्यन को इसलिए जिंदा रखा है क्योंकि उसे उस आखिरी वॉल्ट को खोलने के लिए आर्यन के रक्त या बायोमेट्रिक्स की ज़रूरत है। मीरा उस पुराने अनाथालय 'आशियाना' पहुँची। वहाँ का

केयरटेकर एक बूढ़ा फौजी था। उसका नाम 'चाचा जान' था। मीरा को देखते ही वह ठिठक गया।

"तुम्हारी आँखें मेजर साहब जैसी हैं...", उसने भारी आवाज़ में कहा।

जब मीरा ने उन्हें पूरी बात बताई, तो चाचा जान ने एक गुप्त अलमारी खोली। अंदर आधुनिक हथियार नहीं, बल्कि जासूसी के पुराने उपकरण और एक एन्क्रिप्टेड रेडियो था। "मेजर विक्रम ने हमें बताया था कि एक दिन सूर्यास्त का समय आएगा। हम उनके 'स्लीपर सेल्स' हैं। हम सालों से इस दिन का इंतज़ार कर रहे थे"। रेडियो सिग्नल और सैटेलाइट ट्रैकिंग की मदद से चाचा जान की टीम ने हंटर की लोकेशन ट्रेस की। वह नीलपुरा की कुंभलगढ़ पहाड़ियों में स्थित एक पुरानी सैन्य बंकर (Military Bunker) में था, जिसे 1970 के दशक में छोड़ दिया गया था।

" वहाँ जाना मौत को दावत देना है, बिटिया!,", चाचा जान ने चेतावनी दी।

"मौत तो उस दिन ही आ गई थी, जब मेरे पिता ने वह वसीयत छुपाई थी", मीरा ने एक लोडेड पिस्तौल अपनी बेल्ट में खोंसते हुए कहा।"आज मैं सिर्फ अपने पिता का कर्ज नहीं चुका रही, मैं उस इंसान को भी वापस लाने जा रही हूँ, जो अनजाने में अपनी विरासत का शिकार हुआ है"।

रात के सन्नाटे में मीरा और चाचा जान की छोटी-सी टीम कुंभलगढ़ की पहाड़ियों में रेंग रही थी। बंकर के बाहर 'सूर्यास्त' के पेशेवर कमांडो तैनात थे। मीरा ने अपने पिता की सिखाई हुई 'गोरिल्ला वारफेयर' तकनीक का इस्तेमाल किया। उसने थर्मल स्कैनर्स को चकमा दिया और वेंटिलेशन शाफ्ट के ज़रिए अंदर दाखिल हुई।

अंदर का नज़ारा डरावना था। आर्यन एक धातु की कुर्सी से बंधा था। उसके चारों ओर केबल्स लगी थीं, जो उसके दिल की धड़कन और रक्त के

दबाव को एक बड़े मॉनिटर पर रिकॉर्ड कर रही थीं। हंटर ने अपना मास्क हटाया। मीरा ने जो देखा, उसने उसके होश उड़ा दिए।

हंटर कोई और नहीं, बल्कि मीरा का अपना छोटा भाई समीर था, जिसे सबने 20 साल पहले एक कार दुर्घटना में मृत मान लिया था।

"समीर?", मीरा के हाथ से बंदूक गिरते-गिरते बची।

"दीदी, आपने बहुत देर कर दी...", समीर की आवाज़ ठंडी और भावनाओं से शून्य थी।"सूर्यास्त के लोगों ने मुझे बचाया, मुझे पाला और मुझे सिखाया कि हमारे पिता एक कमज़ोर इंसान थे। वे उस खजाने और हथियार का उपयोग दुनिया बदलने के लिए कर सकते थे, पर उन्होंने उसे छुपा दिया। अब आर्यन का खून उस वॉल्ट को खोलेगा और मैं उस विरासत को हासिल करूँगा जिसे हमारे पिता ने हमसे छीन लिया था।"

आर्यन ने धुंधली आँखों से मीरा को देखा — ''मीरा… भागो… यह वह नहीं है, जिसे तुम ढूँढ रही हो…"।

समीर ने एक बड़ा लीवर खींचा। बंकर की ज़मीन फटने लगी और नीचे से वह आखिरी 'गोल्डन वॉल्ट' ऊपर आने लगा।

"चुनाव तुम्हारा है, दीदी!", समीर ने अपनी पिस्तौल मीरा की ओर तानी। ''अपने भाई के साथ मिलो और इस दुनिया पर राज करो या इस आर्किटेक्ट के साथ इसी बंकर में दफन हो जाओ…."।

मीरा खड़ी थी। एक तरफ उसका सगा भाई था, जो अब एक दानव बन चुका था और दूसरी तरफ वह इंसान था, जिसके परिवार ने उसके पिता को धोखा दिया था, पर वह खुद निर्दोष था।

अध्याय 22
रक्त-संबंध और वैचारिक अग्निपरीक्षा

कुंभलगढ़ की पहाड़ियों के नीचे दबे उस शीतयुद्ध काल के बंकर में सन्नाटा इतना गहरा था कि मीरा को अपनी ही धड़कनें किसी नगाड़े की तरह सुनाई दे रही थीं। सामने खड़ा 'हंटर' कोई अजनबी नहीं, बल्कि उसका अपना भाई समीर था। वह भाई, जिसे उसने सालों पहले जलती हुई कार के मलबे में मृत मानकर अपनी आत्मा का एक हिस्सा दफन कर दिया था। "समीर... यह तुम नहीं हो सकते!", मीरा की आवाज़ काँप रही थी। उसकी अँगुलियाँ अपनी पिस्तौल की ट्रिगर से ढीली पड़ गईं। उसे याद आया वह छोटा बच्चा, जो बचपन में अँधेरे से डरता था.... पर आज वह उसी अँधेरे का सबसे बड़ा सिपहसालार बनकर खड़ा था।

समीर ने एक उपेक्षा भरी मुस्कान दी। उसके चेहरे पर कार दुर्घटना के वे पुराने निशान अब भी थे, जो 'सूर्यास्त' गिरोह की दी हुई नई पहचान के नीचे दब गए थे।"दीदी, वह समीर मर गया जिसे आप जानती थीं। उसे हमारे पिता के आदर्शों ने मार डाला। जब कार जल रही थी और पिता जी उस वसीयत को बचाने में लगे थे, तब 'सूर्यास्त' के लोगों ने मुझे निकाला। उन्होंने मुझे बताया कि असली ताकत वफादारी में नहीं, बल्कि नियंत्रण में है....”। कुर्सी से बंधे आर्यन ने संघर्ष किया। उसकी बाँह पर लगी ट्यूब्स से खून एक मशीन में जा रहा था। "मीरा... इसे मत सुनना। यह तुम्हें बरगला रहा है। 'सूर्यास्त' ने इसका ब्रेन वॉश किया है। यह अपने ही पिता के हत्यारों के लिए काम कर रहा है!”

समीर ने आर्यन के मुँह पर एक ज़ोरदार प्रहार किया — "चुप रहो, वारिस! तुम्हारे दादाजी ने मेरे गुरुओं के साथ मिलकर यह योजना बनाई थी।

खन्ना और सिंह परिवार कभी दोस्त नहीं थे, वे केवल एक गुप्त समझौते के हिस्सेदार थे!"

मीरा ने अपनी बंदूक फिर से तानी, "समीर, मैं तुम्हें यह 'गोल्डन वॉल्ट' खोलने नहीं दूँगी। इसमें जो हथियार है, वह केवल विनाश लाएगा। क्या तुम्हें लगता है कि पिता जी ने इसे इसलिए छुपाया था क्योंकि वे कमज़ोर थे? नहीं! वे जानते थे कि इंसान की भूख कभी खत्म नहीं होती!"

समीर, मीरा के चारों ओर चक्कर लगाने लगा, जैसे कोई शिकारी अपने शिकार को परख रहा हो, "दुनिया बदल चुकी है, दीदी! शांति की बातें किताबों में अच्छी लगती हैं। असलियत यह है कि जिसके पास 'प्रोटोकॉल-एक्स' होगा, दुनिया उसके सामने घुटने टेकेगी। मैं तुम्हें मौका दे रहा हूँ। हमारे पिता ने हमें गरीबी और भागदौड़ की ज़िंदगी दी, मैं तुम्हें एक साम्राज्य दे रहा हूँ!" तभी चाचा जान की टीम ने बाहर से धमाका किया। बंकर की छत से मलबा गिरने लगा। मीरा ने इस मौके का फायदा उठाया और समीर पर झपट्टा मारा। भाई और बहन के बीच एक ऐसी जंग शुरु हुई, जो शारीरिक से ज़्यादा भावनात्मक थी।

मीरा ने समीर के हाथ से कंट्रोल डिवाइस छीनने की कोशिश की, लेकिन समीर की ट्रेनिंग मीरा की उम्मीद से कहीं ज़्यादा उन्नत थी। उसने मीरा को दीवार से दे मारा"। आप हमेशा से उनकी पसंदीदा रही थीं, दीदी! अब देखिए, आपकी वह पसंद आपको कहाँ ले आई!" अचानक बंकर के मॉनिटर पर एक हरी लाइट जल उठी। आर्यन के खून ने उस प्राचीन बायोमेट्रिक लॉक को डिकोड कर दिया था। 'गोल्डन वॉल्ट' के भारी दरवाज़े हाइड्रोलिक दबाव के साथ खुलने लगे। अंदर से एक सुनहरी रोशनी निकली, लेकिन उसके साथ ही वह पीली धुंध (बायो-वेपन) भी रिसने लगी।

"अंततः!" — समीर चिल्लाया। वह वॉल्ट की ओर भागा।

मीरा ने देखा कि आर्यन की हालत बिगड़ रही थी। मशीन उसका बहुत ज़्यादा खून खींच चुकी थी। एक तरफ उसका भाई था, जो तबाही का सामान

लेने जा रहा था और दूसरी तरफ वह इंसान था जिससे वह प्यार करती थी, जो मर रहा था। मीरा ने समीर के पैरों के पास एक ग्रेनेड फेंका — ’’समीर, रुको! अगर तुम अंदर गए, तो तुम बाहर नहीं आओगे। वह वॉल्ट एक ट्रैप (Trap) है!’’

लेकिन समीर नहीं रुका। वह पागलपन की हद तक उस शक्ति को हासिल करना चाहता था। जैसे ही उसने वॉल्ट के भीतर कदम रखा, सुरक्षा अलार्म बजने लगा। बंकर का ’सेल्फ-डिस्ट्रक्ट (Self-destruct)’ मोड सक्रिय हो गया।

"आर्यन!’’ — मीरा दौड़कर आर्यन के पास पहुँची और उसकी ट्यूब्स को उखाड़ फेंका। वह उसे कंधे पर लादकर बाहर निकलने के रास्ते की ओर बढ़ी। पीछे से समीर की एक चीख सुनाई दी। वॉल्ट के भीतर लगे ‘लेज़र सुरक्षा-तंत्र’ ने उसे घेर लिया था। एक ज़ोरदार धमाका हुआ और पूरा बंकर ढहने लगा। मीरा, आर्यन को लेकर सुरक्षित सुरंग तक पहुँच गई लेकिन जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो बंकर का मुहाना बंद हो चुका था। समीर अंदर ही रह गया था।

"समीर… " — मीरा ज़मीन पर गिर पड़ी। उसने अपने भाई को फिर से खो दिया था, लेकिन इस बार उसने उसे बुराई की आग में जलते हुए देखा था।

आर्यन ने मीरा का हाथ पकड़ा — ’’उसने अपना रास्ता खुद चुना था, मीरा!’’

जैसे ही वे बाहर आए, उन्होंने देखा कि नीलपुरा के आसमान में ’सूर्यास्त’ गिरोह के हेलीकॉप्टर मँडरा रहे थे। जंग अभी खत्म नहीं हुई थी। वॉल्ट खुल चुका था और भले ही समीर अंदर था पर उस बायो-वेपन का मुख्य डेटा अब क्लाउड (Cloud) पर अपलोड होना शुरु हो गया था।

अध्याय 23
डिजिटल प्रलय और अदृश्य रणक्षेत्र

कुंभलगढ़ के बंकर से जीवित बाहर निकलने के बाद आर्यन और मीरा के पास राहत महसूस करने का समय नहीं था। ’गोल्डन वॉल्ट’ के खुलते ही जो बायो-वेपन का डेटा ’सूर्यास्त’ के क्लाउड सर्वर पर अपलोड होना शुरु हुआ था, वह अब वैश्विक सुरक्षा एजेंसियों के रडार पर आ चुका था। नीलपुरा के एक सुरक्षित ’सेफ हाउस’ में मीरा और आर्यन को लाया गया, जहाँ NIS (National Intelligence Squad) की साइबर सेल पहले से ही युद्ध स्तर पर काम कर रही थी। स्क्रीन पर लाल रंग की पट्टियाँ दौड़ रही थीं — "Data Encryption: 84% Complete"।

"अगर यह 100% हो गया....”, ज़ोया (जो अब अपनी चोट से उभर चुकी थी) ने स्क्रीन की ओर इशारा करते हुए कहा, ”... तो ’सूर्यास्त’ के आका दुनिया के किसी भी कोने में बैठे हुए भी इस बायो-वेपन को रिमोटली सक्रिय कर पाएँगे। यह डेटा ’प्रोटोकॉल-एक्स’ का डिजिटल ब्लूप्रिंट है”। आर्यन अभी भी शारीरिक रूप से कमज़ोर था, लेकिन उसका दिमाग एक आर्किटेक्ट की तरह ’स्ट्रक्चर’ देख रहा था — ”यह केवल डेटा नहीं है, मीरा! यह एक भूलभुलैया (Labyrinth) है। जिस तरह हवेली की नींव में गुप्त रास्ते थे, इस सर्वर की कोडिंग में भी ’बैकडोर्स’ होंगे!”

मीरा ने अपने पिता की उस डायरी का आखिरी पन्ना निकाला जिसे उसने बंकर से बचाया था — ”पिताजी ने सिर्फ़ भौतिक चाबियाँ नहीं छोड़ी थीं। इसमें एक ’अल्फा-न्यूमेरिक’ कोड है, जो किसी भी डिजिटल लॉक को खोल सकता है। हमें ’सूर्यास्त’ के डार्क-वेब सर्वर में घुसना होगा!”

मीरा ने कीबोर्ड पर अपनी अँगुलियाँ चलानी शुरु कीं। वह सिर्फ़ एक फोटोग्राफर नहीं थी, उसने अपने पिता से 'सिग्नल इंटेलिजेंस' की बुनियादी शिक्षा ली थी। जैसे ही उसने सर्वर में प्रवेश किया, उसे एहसास हुआ कि सामने कोई साधारण फायरवॉल नहीं है।

"वे हमें ट्रैक कर रहे हैं!" — ज़ोया चिल्लाई।

अचानक सेफ हाउस की बिजली गुल हो गई और बैकअप जेनेरेटर शुरु हुआ। स्क्रीन पर एक चेहरा उभरा — वह 'सूर्यास्त' बोर्ड का एक अनाम सदस्य था, जिसका चेहरा पिक्सल के पीछे छिपा था।

"मिस सिंह, आपके भाई ने अपना काम पूरा कर दिया। अब आप जो कर रही हैं, वह सिर्फ़ समय की बर्बादी है। जैसे ही डेटा ट्रांसफर पूरा होगा, नीलपुरा अपने आप 'ज़ोन ज़ीरो' बन जाएगा"।

आर्यन ने मीरा का हाथ पकड़ा, ''मीरा! कोडिंग के उन हिस्सों को देखो, जहाँ 'मार्तंड' शब्द का उपयोग हुआ है। वह एक 'ट्रोजन हॉर्स' (Trojan Horse) हो सकता है"।

मीरा ने तेज़ी से कमांड्स टाइप किए। वह एक डिजिटल भूलभुलैया में थी, जहाँ हर गलत कदम उसके सिस्टम को 'फ्राई' कर सकता था। उसे अपने भाई समीर की याद आई — "क्या समीर ने वाकई उसे धोखा दिया था या उसने आखिरी समय में उस वॉल्ट के भीतर कोई 'किल-स्विच (Kill-switch)' छोड़ा था?"

अचानक डेटा के प्रवाह में एक रुकावट आई। एक गुप्त संदेश स्क्रीन के कोने में चमका — "For the sister I left behind."

"समीर..." — मीरा की आँखें भर आईं। समीर ने मरने से पहले सर्वर में एक छोटा-सा छेद छोड़ दिया था जिसे सिर्फ़ मीरा ढूँढ सकती थी। "आर्यन, समीर ने हमें रास्ता दिखाया है!" — मीरा ने उत्तेजित होकर कहा। उसने वह अल्फा-न्यूमेरिक कोड डाला, जो उसके पिता की डायरी में था।

स्क्रीन पर एक ग्राफिकल इंटरफेस खुला — यह बायो-वेपन का मुख्य नियंत्रण था। मीरा के पास दो विकल्प थे — या तो वह डेटा डिलीट करे, जिससे ’सूर्यास्त’ उसे फिर से रिकवर कर सकता था या वह एक ऐसा ’वायरस’ अपलोड करे, जो ’सूर्यास्त’ के पूरे वैश्विक नेटवर्क को ही नष्ट कर दे।

"पूरा नेटवर्क तबाह करो, मीरा!” — आर्यन ने दृढ़ता से कहा।

जैसे ही मीरा ने ’Enter’ दबाया, दुनिया भर में ’सूर्यास्त’ के सभी सर्वर में धमाके जैसे डिजिटल क्रैश होने लगे। जिनेवा, लंदन और न्यूयॉर्क के उनके ऑफिस की स्क्रीन काली पड़ गई।

लेकिन जीत की वह खुशी अधूरी थी। जैसे ही सर्वर नष्ट हुआ, एक आखिरी फाइल मीरा के सिस्टम पर डाउनलोड हो गई। वह एक लोकेशन थी — नीलपुरा का सिटी पैलेस संग्रहालय।

"इसका क्या मतलब है?” — ज़ोया ने पूछा।

आर्यन ने फाइल को खोला। उसमें एक वीडियो था। ’सूर्यास्त’ के अंतिम जीवित सदस्य, जो अब पागलपन की हद तक पहुँच चुके थे, उन्होंने बायो-वेपन का एक भौतिक ’कंटेनर’ सिटी पैलेस के नीचे एक पब्लिक इवेंट के दौरान फटने के लिए सेट कर दिया था। "डिजिटल युद्ध जीत लिया गया है, लेकिन भौतिक युद्ध अभी बाकी है”, आर्यन ने उठते हुए कहा। उसकी आवाज़ में अब एक योद्धा का संकल्प था।

बाहर सूरज ढल रहा था — एक असली सूर्यास्त। लेकिन यह सूर्यास्त ’द सनसेट’ गिरोह के अंत का प्रतीक बनने वाला था या नीलपुरा के विनाश का?

"अगले दो घंटे....”, मीरा ने अपनी घड़ी देखी, ”... दो घंटे में शहर के बीचोबीच वह गैस रिलीज हो जाएगी।”

अध्याय 24
सिटी पैलेस का चक्रव्यूह और अंतिम काउंटडाउन

नीलपुरा का सिटी पैलेस आज रोशनी से नहाया हुआ था। मेवाड़ के इतिहास का जश्न मनाने के लिए एक भव्य उत्सव आयोजित किया गया था, जिसमें न केवल स्थानीय लोग बल्कि विदेशी सैलानी और वीआईपी मेहमान भी शामिल थे। संगीत की गूँज और लोक नृत्यों के बीच कोई नहीं जानता था कि महलों की इन दीवारों के पीछे मौत अपना जाल बिछा चुकी है। आर्यन और मीरा साधारण पर्यटकों के वेश में पैलेस के मुख्य प्रांगण में दाखिल हुए। ज़ोया और उसकी टीम सुरक्षा घेरे के बाहरी हिस्से में तैनात थी क्योंकि 'सूर्यास्त' के बचे हुए गुर्गे पुलिस की किसी भी बड़ी हलचल पर तुरंत कंटेनर को सक्रिय कर सकते थे।

"आर्यन! हमारे पास केवल 90 मिनट हैं", मीरा ने अपने कानों में लगे सूक्ष्म इयरपीस के ज़रिये फुसफुसाते हुए कहा। उसकी आँखें अपने कैमरे के लेंस से भीड़ को स्कैन कर रही थीं। ''वह फाइल जो हमने हैक की थी, उसमें 'संग्रहालय के पाताल' का ज़िक्र था''।

आर्यन ने पैलेस की वास्तुकला को अपनी याददाश्त में टटोला — ''सिटी पैलेस का संग्रहालय पुराना है लेकिन उसके नीचे के कुछ सेलर्स (Cellars) सालों से बंद हैं। अगर उन्हें गैस फैलानी है, तो उन्हें उसे वेंटिलेशन शाफ्ट के पास रखना होगा ताकि हवा के साथ वह पूरे पैलेस में फैल सके''।

तभी मीरा की नज़र एक वेटर पर पड़ी जिसकी चाल सामान्य नहीं थी। उसके दस्ताने के नीचे से 'सूर्यास्त' के टैटू की एक झलक दिखी। मीरा ने

आर्यन को इशारा किया। वे चुपचाप उस वेटर का पीछा करते हुए ’जनाना महल’ के एक संकरे गलियारे की ओर बढ़े, जो पर्यटकों के लिए प्रतिबंधित था। जैसे ही वे बेसमेंट की ओर बढ़े, संगीत का शोर धीमा पड़ता गया और हवा में वही पुरानी सीलन और ’गैल्वेनाइज्ड मेटल’ की गंध आने लगी। अचानक अंधेरे से दो हमलावरों ने उनपर हमला किया।

आर्यन ने एक हमलावर को दीवार से दे मारा, जबकि मीरा ने अपनी मार्शल आर्ट्स ट्रेनिंग का परिचय देते हुए दूसरे को निहत्था कर दिया। ”आर्यन, देखो!”, मीरा ने फर्श पर पड़े एक नक्शे की ओर इशारा किया, ”वे इसे ’मोर चौक’ के नीचे वाले एयर-प्यूरीफायर यूनिट में फिट कर रहे हैं!”

वे भागते हुए मुख्य वेंटिलेशन रूम में पहुँचे। वहाँ एक बड़ा-सा काँच का सिलेंडर था, जिसके अंदर पीली गैस दबाव में उबल रही थी। उसके ऊपर एक डिजिटल घड़ी टिक-टिक कर रही थी — 18:42 सेकंड्स बाकी थे।

सिलेंडर से दर्जनों पतली पाइप्स निकलकर पैलेस की मुख्य एयर-कंडीशनिंग डक्ट्स में जा रही थीं। ”अगर हमने इसे गलत तरीके से खोला, तो दबाव के कारण यह तुरंत फट जाएगा”, आर्यन ने डिवाइस का बारीकी से निरीक्षण करते हुए कहा।

"आर्यन! यह ’किल-स्विच’ वाला मॉडल नहीं है। यह ’प्रेशर-सेंसिटिव’ है…”, मीरा ने घबराते हुए कहा, ”हमें इसे निष्क्रिय करने के लिए इसके इलेक्ट्रॉनिक सर्किट को एक साथ बायपास करना होगा!”समय कम हो रहा था। 05:00 मिनट। अचानक कमरे के इंटरकॉम से एक आवाज़ गूँजी। वह ’सूर्यास्त’ का अंतिम मास्टरमाइंड था, जो शायद पैलेस के ही किसी सीसीटीवी रूम से उन्हें देख रहा था।

"आर्यन खन्ना, तुम इसे रोक सकते हो, लेकिन इसकी कीमत लगेगी। इस डिवाइस के दो सर्किट हैं। एक को काटोगे तो गैस यहाँ बेसमेंट में लीक होगी — सिर्फ तुम दोनों मरोगे। दूसरे को काटोगे, तो गैस ऊपर पैलेस में जाएगी। चुनो… खुद की जान या हज़ारों अजनबी?”

आर्यन ने मीरा की ओर देखा। मीरा की आँखों में डर नहीं, बल्कि एक शांत संकल्प था। उसने आर्यन का हाथ थाम लिया। ”आर्यन, हमने यहाँ तक का सफर साथ तय किया है। नीलपुरा को कुछ नहीं होना चाहिए”। "रुको!” — आर्यन ने अचानक कहा। ”हमें इसे काटने की ज़रूरत नहीं है। अगर हम इस वेंटिलेशन का रुख ’रिवर्स’ (Reverse) कर दें और गैस को पैलेस के बजाय वापस उसी ’गोल्डन वॉल्ट’ वाली पुरानी सुरंग में भेज दें, जिसे हमने कल खोजा था, तो....?”

आर्यन ने तेज़ी से वॉल्व्स घुमाना शुरू किया। मीरा ने बिजली के तारों को फिर से जोड़ा। 00:45 सेकंड।

पसीना उनकी आँखों में जा रहा था। अँगुलियाँ काँप रही थीं। 00:10… 00:09…

अंतिम सेकंड पर आर्यन ने मुख्य लीवर खींच दिया। एक ज़ोरदार ’हिस’ की आवाज़ आई। पीली गैस पाइप्स में दौड़ी, लेकिन वह ऊपर नहीं, बल्कि ज़मीन की गहराई में बने उस वैक्यूम चैंबर की ओर चली गई जिसे उन्होंने बाईपास किया था। गैस सुरक्षित रूप से डिस्चार्ज हो गई। आर्यन और मीरा फर्श पर ढह गए, उनकी साँसें तेज़ थीं। ऊपर पैलेस में उत्सव का संगीत अभी भी चल रहा था, हज़ारों लोग अनजान थे कि वे मौत के कितने करीब से गुज़रे हैं।

ज़ोया की टीम वहाँ पहुँची और बचे हुए आतंकवादियों को दबोच लिया, लेकिन जब आर्यन ने उस डिवाइस के कंट्रोल-बॉक्स को खोला, तो उसे अंदर एक छोटा-सा लिफाफा मिला। लिफाफे के अंदर एक पुरानी तस्वीर थी — आर्यन के पिता और मीरा के पिता की, एक साथ। उसके पीछे लिखा था — ”यह तो सिर्फ एक टेस्ट था। असली विरासत तो ’30वें अध्याय’ के अंत में तुम्हारा इंतज़ार कर रही है”।

आर्यन और मीरा ने एक-दूसरे को देखा। ’सूर्यास्त’ गिरोह का भौतिक ढाँचा टूट चुका था, लेकिन उनका ’वैचारिक’ जाल अभी भी उन्हें कहीं और बुला रहा था।

अध्याय 25
गिरि-शिखर की खोई हुई घाटी 'नीलकुंज'

सिटी पैलेस के उस अंधेरे बेसमेंट में मिली तस्वीर ने आर्यन और मीरा के घावों पर नमक छिड़कने के बजाय एक नई जिज्ञासा को जन्म दिया था। उस तस्वीर में उनके पिता, मेजर विक्रम और प्रोफेसर खन्ना, एक झरने के सामने खड़े थे। दोनों जवान थे और उनके चेहरों पर एक ऐसी चमक थी, जो केवल किसी महान उद्देश्य की प्राप्ति पर आती है।

"यह जगह नीलपुरा में कहीं नहीं है...", मीरा ने तस्वीर को मैग्नीफायर से देखते हुए कहा। ''उन पहाड़ियों की बनावट देखो, वे गिरि-शिखर के मुख्य हिस्से से अलग 'नुकीली' हैं। और वह वनस्पति… वह केवल ऊँचे और ठंडे इलाकों में पाई जाती है''।

आर्यन ने पैलेस के पुस्तकालय से मेवाड़ का एक प्राचीन 'राजपूताना गजेटियर' निकाला, ''इतिहास में एक जगह का ज़िक्र आता है — 'नीलकुंज'। इसे 'शून्य घाटी' भी कहा जाता था। कहा जाता है कि मार्तंड देव ने हल्दीघाटी के बाद अपने कुछ सबसे गोपनीय दस्तावेज़ और एक विशेष दस्ता वहीं छुपाया था। यह घाटी बादलों के नीचे रहती है, इसलिए सैटेलाइट इमेज में भी नहीं दिखती। ''तस्वीर के पीछे एक सूक्ष्म उकेरा हुआ निशान था — दो कड़ियों वाली एक टूटी हुई ज़ंजीर। आर्यन को समझ आया कि उनके पिताओं ने इस 'सूर्यास्त' गिरोह को खत्म करने की योजना दशकों पहले बनाई थी। वे किसी 'खजाने' के रक्षक नहीं थे, वे उस 'समाधान' के रक्षक थे जो इस बायो-वेपन को हमेशा के लिए बेअसर कर सकता था। आर्यन, मीरा और ज़ोया की एक छोटी टीम बिना किसी सरकारी सुरक्षा के

निकली क्योंकि उन्हें संदेह था कि ’सूर्यास्त’ के कुछ मुखबिर अभी भी व्यवस्था के भीतर हैं। वे पुराने ऊंट-गाड़ी के रास्तों और घने जंगलों से होते हुए गिरि-शिखर के उस हिस्से में पहुँचे, जहाँ मोबाइल सिग्नल दम तोड़ चुके थे।

"हवा बदल रही है”, मीरा ने रुकते हुए कहा, ”इसमें चन्दन और प्राचीन पत्थरों की महक है”।

अचानक एक घना कोहरा उन्हें घेरने लगा। दृश्यता शून्य हो गई। पहाड़ की ढलान इतनी तीखी थी कि एक गलत कदम सीधे हज़ारों फीट नीचे ले जा सकता था। तभी आर्यन ने देखा कि तस्वीर में दिखने वाला वह विशिष्ट ’नुकीला शिखर’ कोहरे को चीरता हुआ बाहर आ रहा था। पहाड़ के एक संकरे दर्रे के भीतर उन्हें एक गुफा मिली। गुफा की दीवारों पर प्राचीन मेवाड़ी भाषा में शिलालेख थे। आर्यन ने अपनी टॉर्च जलाई। शिलालेखों पर लिखा था — "यहाँ वही प्रवेश करे, जिसने सत्य को अपने रक्त से सींचा हो”।

जैसे ही वे आगे बढ़े, गुफा के भीतर से एक गूँजने वाली आवाज़ आई। यह हवा का दबाव था या कोई प्राचीन यांत्रिक सुरक्षा-तंत्र? पत्थरों के सरकने की आवाज़ आई और एक विशाल पत्थर का दरवाज़ा खुल गया, जिसके पीछे एक ऐसी घाटी थी जो आधुनिक दुनिया से कटी हुई थी। दरवाज़े के दूसरी ओर ’नीलकुंज’ घाटी फैली थी। चारों ओर नीलकमल के तालाब थे और बीच में एक छोटा-सा सफ़ेद संगमरमर का मंदिर, जो दिखने में मंदिर था पर असल में एक ’प्रयोगशाला (Laboratory)’ जैसा लग रहा था।

"यही वह जगह है!”, मीरा ने विस्मय में कहा, ”यही वह जगह है, जहाँ हमारे पिता ने अपना आखिरी समय बिताया था!”

मंदिर के आंगन में एक बूढ़ा व्यक्ति बैठा था, जिसके बाल बर्फ की तरह सफ़ेद थे और आँखों में एक अजीब-सा तेज था। उसे देखते ही आर्यन और मीरा ठिठक गए। वह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि आर्यन के दादाजी का छोटा भाई, देवेन्द्र खन्ना था, जिसे सबने सालों पहले लापता मान लिया

था।"तुम आ गए!" — देवेन्द्र ने अपनी शांत आवाज़ में कहा। "विक्रम और विश्वनाथ ने मुझसे कहा था कि एक दिन उनके वारिस यहाँ ज़रूर आएँगे। 'सूर्यास्त' गिरोह सिर्फ़ एक बाह्य शत्रु नहीं है, वह एक 'विचार' है जो विनाश चाहता है.... लेकिन इस घाटी में उस विचार का 'एंटीडोट (Antidote)' है"।

उसने मंदिर के नीचे बने एक गुप्त वॉल्ट की ओर इशारा किया, "उस बायो-वेपन 'प्रोटोकॉल-एक्स' को सिर्फ़ एक चीज़ नष्ट कर सकती है — वह 'प्राचीन फॉर्मूला' जो यहाँ के औषधीय पौधों और प्राचीन विज्ञान के मिश्रण से तैयार किया गया है। लेकिन इसे सक्रिय करने के लिए 'दो परिवारों के मिलाप' की ज़रूरत थी। "तभी आकाश में धमाकों की आवाज़ गूँजी। 'सूर्यास्त' के आखिरी और सबसे घातक दस्ते ने घाटी का पता लगा लिया था। काले पैराशूट्स आसमान से नीचे उतर रहे थे।

देवेन्द्र ने आर्यन और मीरा के हाथों में एक प्राचीन ताम्रपत्र और एक छोटा-सा क्रिस्टल दिया, "अध्याय 30 की ओर जाने का यह आखिरी पड़ाव है। अगर तुम इस घाटी को बचा पाए, तो ही तुम उस सत्य तक पहुँच पाओगे, जो दुनिया की राजनीति को बदल देगा"।

आर्यन ने अपनी बंदूक निकाली और मीरा का हाथ थामा — "अब भागना नहीं है। अब अंत करना है"।

अध्याय 26
नीलकुंज का महासंग्राम

नीलकुंज की शांति उस दिन टूट गई, जब आसमान से काली परछाइयाँ उतरने लगीं। 'सूर्यास्त' गिरोह के अंतिम और सबसे घातक दस्ते, जिसे 'शैडो कोर' कहा जाता था, ने घाटी को चारों ओर से घेर लिया था। वे जानते थे कि यदि 'प्रोटोकॉल-एक्स' का एंटीडोट यहाँ से बाहर निकल गया, तो उनका दशकों पुराना साम्राज्य ताश के पत्तों की तरह ढह जाएगा। "वे आ गए हैं!" — देवेन्द्र खन्ना ने शांत स्वर में कहा, जैसे वे इसी दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने मंदिर के स्तंभों के पीछे छिपे कुछ प्राचीन लीवर खींचे। अचानक घाटी की दीवारों से पत्थरों के बड़े-बड़े ब्लॉक खिसकने लगे और सदियों पुराना एक रक्षा-तंत्र सक्रिय हो गया।

आर्यन ने अपनी राइफल की पोजीशन ली। ''मीरा, तुम देवेन्द्र जी के साथ मंदिर के भीतर जाओ। उस एंटीडोट के फॉर्मूले को सुरक्षित करना तुम्हारी प्राथमिकता है। मैं और ज़ोया बाहर मोर्चा सँभालते हैं''। मीरा ने आर्यन का हाथ कसकर पकड़ा, ''वापस आना है, आर्यन! इस बार हम किसी अधूरे मिशन को नहीं छोड़ेंगे''। पैराशूट से उतरे कमांडो ने अत्याधुनिक हथियारों से गोलीबारी शुरु कर दी, लेकिन नीलकुंज की भौगोलिक स्थिति उनके खिलाफ थी। पहाड़ियों से गिरते झरने और घने कोहरे ने आर्यन की छोटी-सी टीम को 'गोरिल्ला वारफेयर' का मौका दिया। ज़ोया ने अपनी स्नाइपर गन से पहली गोली दागी और युद्ध का बिगुल बज गया। जैसे ही दुश्मन की पहली टोली मंदिर की सीढ़ियों तक पहुँची, देवेन्द्र ने मंदिर के फर्श पर लगा एक चक्र घुमाया। अचानक मंदिर के चारों ओर मौजूद नीलकमल के तालाबों से एक ज्वलनशील गैस निकली और पानी की सतह पर आग की एक दीवार खड़ी हो गई।

"यह प्राचीन मेवाड़ी रक्षा प्रणाली है", देवेन्द्र ने मीरा को बताया, जब वे मंदिर के नीचे के तहखाने की ओर बढ़ रहे थे, ''इसे 'अग्नि-जाल' कहते हैं लेकिन यह उन्हें ज़्यादा देर तक नहीं रोक पाएगा। उनके पास थर्मल मिसाइलें हैं''।

तहखाने के भीतर मीरा ने वह क्रिस्टल देखा, जिसे देवेन्द्र ने दिया था। उसे एक विशेष स्लॉट में फिट करना था ताकि वह 'एंटीडोट' का डिजिटल डेटा नष्ट कर सके और भौतिक सैंपल को सुरक्षित कर सके। तभी एक ग्रेनेड के धमाके से मंदिर की छत का एक हिस्सा गिर गया। 'शैडो कोर' का कमांडर एक विशालकाय व्यक्ति था, जिसका नाम 'राका' था। मलबे को हटाते हुए वह अंदर दाखिल हुआ।

मीरा ने अपनी पिस्तौल निकाली, ''बस यहीं तक, राका!''

राका हँसा, ''मेजर विक्रम की बेटी...! तुम अभी भी नहीं समझीं। हमें डेटा नहीं चाहिए, हमें वह खून चाहिए, जो तुम्हारी रगों में है ताकि हम इस फॉर्मूले को बदल सकें''।

जब आर्यन और ज़ोया बाहर गोलियों से घिर चुके थे, तब देवेन्द्र खन्ना ने एक बड़ा निर्णय लिया। उन्होंने मीरा की ओर देखा और मुस्कुराए, ''बेटा! सत्य की रक्षा के लिए कभी-कभी नींव के पत्थर को खुद को मिटाना पड़ता है''।

उन्होंने मंदिर के आत्मघाती 'डिस्ट्रक्शन स्विच' पर हाथ रखा, ''आर्यन... मीरा को बाहर निकालो! मैं इस घाटी को इन भेड़ियों के साथ यहीं दफन कर दूँगा!''

"नहीं, दादाजी!'' — आर्यन बाहर से चिल्लाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। देवेन्द्र ने स्विच दबाया। पूरी घाटी में भूकम्प जैसे झटके महसूस हुए। पहाड़ की चोटियों से विशाल चट्टानें 'शैडो कोर' के सैनिकों पर

गिरने लगीं। आर्यन ने मीरा का हाथ पकड़ा और वे उस गुप्त सुरंग की ओर भागे, जो उन्हें घाटी के दूसरी ओर सुरक्षित निकाल सकती थी।

पीछे एक ज़ोरदार धमाका हुआ। नीलकुंज का वह पवित्र मंदिर और देवेन्द्र खन्ना, उस प्राचीन ज्ञान के साथ मलबे में समा गए, लेकिन मीरा के हाथ में वह 'एंटीडोट' का आखिरी वायल (Vial) सुरक्षित था। सुरंग के बाहर निकलते ही आर्यन और मीरा ने पीछे मुड़कर देखा। वह गुप्त घाटी अब केवल एक मलबे का ढेर थी। 'सूर्यास्त' का दस्ता खत्म हो चुका था, लेकिन उनके बलिदान की कीमत बहुत भारी थी।

"उन्होंने हमें सबकुछ दे दिया!" — मीरा ने सुबकते हुए कहा।

आर्यन ने अपनी मुट्ठी कसी, "अब हमारे पास सिर्फ़ 4 अध्याय बचे हैं, मीरा! कर्नल प्रताप खत्म हुआ, समीर चला गया, देवेन्द्र जी ने बलिदान दे दिया। अब उस 'मास्टरमाइंड' की बारी है, जो इन सबके पीछे है"।

हवा में एक हेलीकॉप्टर की आवाज़ आई, लेकिन यह दुश्मन का नहीं, भारत की 'स्पेशल फोर्सेज' का था, जिसे ज़ोया ने अंततः सिग्नल भेजने में सफलता प्राप्त की थी।

अध्याय 27
तंत्र का अंधकार

नीलकुंज की घाटी के मलबे और देवेन्द्र खन्ना के बलिदान की राख अभी आर्यन और मीरा के कपड़ों से पूरी तरह झड़ी भी नहीं थी कि वे शहर के उस सबसे सुरक्षित हिस्से में पहुँच गए, जहाँ की सड़कों पर सन्नाटा भी 'सत्ता' की गूँज देता है। एक सुरक्षित विमान से उन्हें एक निजी हवाई पट्टी पर उतारा गया, लेकिन यहाँ स्वागत वैसा नहीं था जैसा वे उम्मीद कर रहे थे। "ज़ोया, हमें सीधे हेडक्वार्टर जाना चाहिए...", आर्यन ने कहा। उसकी नज़रें उन काली कारों पर टिकी थीं, जो एक खास लय में उनका पीछा कर रही थीं। ज़ोया ने अपने एन्क्रिप्टेड टैबलेट पर एक संदेश देखा और उसका चेहरा पीला पड़ गया।"आर्यन! अंदर से आदेश आए हैं कि हमें हिरासत में लिया जाए। सिस्टम के भीतर किसी ने हमें 'भगोड़ा' घोषित कर दिया है। हमारी हर गतिविधि को ट्रैक किया जा रहा है"। मीरा ने कसकर अपना बैग पकड़ा, जिसमें वह इकलौता एंटीडोट सुरक्षित था, "इसका मतलब कर्नल प्रताप और समीर तो केवल प्यादे थे। असली 'सूर्यास्त' का मास्टरमाइंड वह व्यक्ति है, जो न्याय और नीति की आड़ में इस देश की रगों को नियंत्रित कर रहा है"। वे सरकारी प्रोटोकॉल को तोड़कर एक अज्ञात सेफ-हाउस में छिप गए। आर्यन ने नीलकुंज से मिले उस प्राचीन ताम्रपत्र और मीरा की डायरी की कड़ियों को मिलाना शुरु किया। वहाँ एक नाम बार-बार उभर रहा था — 'मिस्टर अर्का'। यह कोई राजनेता नहीं था, बल्कि एक ऐसा उच्च पदस्थ सलाहकार और रणनीतिकार था, जिसे दशकों से 'अजेय' माना जाता था।

मिस्टर अर्का वही व्यक्ति थे, जिन्होंने सालों पहले आर्यन के दादाजी और मीरा के पिता के बीच की उस गुप्त संधि को आधिकारिक रूप से 'दफन' करवाया था। वे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में शांति और विज्ञान की बातें

करते थे, लेकिन पर्दे के पीछे 'सूर्यास्त' गिरोह के ग्लोबल बोर्ड के मुख्य वास्तुकार थे। उनका लक्ष्य बायो-वेपन के जरिए दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं को अपने नियंत्रण में लेना था। "हमें उनके निजी निवास तक पहुँचना होगा!", मीरा ने कहा, "आज रात एक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक शिखर सम्मेलन की निजी डिनर पार्टी है। वहाँ सुरक्षा के बीच घुसना ही एकमात्र रास्ता है"।

आर्यन और मीरा ने वेश बदला। एक विदेशी व्यापार प्रतिनिधि और उसकी सलाहकार बनकर वे उस इमारत में दाखिल हुए, जो सुरक्षा की कई परतों से घिरी थी। वहाँ दुनिया भर के शक्तिशाली लोग मौजूद थे और मिस्टर अर्का अपने अगले 'प्रहार' की तैयारी कर रहे थे।

आर्यन ने तकनीकी विशेषज्ञता का उपयोग करते हुए मिस्टर अर्का के निजी डेटा सर्वर तक पहुँच बनाई। वहाँ उसे वह डिजिटल ब्लूप्रिंट मिला, जो सीधे उन दस ठिकानों से जुड़ा था, जहाँ बायो-वेपन के सक्रिय होने का काउंटडाउन चल रहा था। जैसे ही आर्यन ने डेटा कॉपी करना शुरु किया, कमरे की रोशनी धीमी हो गई। मिस्टर अर्का एक शांत मुद्रा में, कुर्सी पर घूमते हुए सामने आए। उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी, केवल एक बर्फीली मुस्कान थी।

"आर्यन खन्ना...! तुम्हारे दादाजी ने बहुत कोशिश की थी मुझे रोकने की...", अर्का ने मधुर स्वर में कहा, "...लेकिन वे भूल गए थे कि दुनिया को सैनिक नहीं, बल्कि वे लोग चलाते हैं, जो 'सत्य' को अपनी सुविधा के अनुसार परिभाषित करते हैं। वह एंटीडोट मुझे दे दो और तुम दोनों इस व्यवस्था के नए 'नायक' बन सकते हो!"

"हमें आपके खोखले नायकों की ज़रूरत नहीं है...," मीरा अंधेरे से बाहर आई। उसका डिजिटल कैमरा उस पूरे दृश्य को एक गुप्त सैटेलाइट लिंक के ज़रिए रिकॉर्ड कर रहा था।

अर्का हँसे, "तुम्हें लगता है कि यह रिकॉर्डिंग बाहर जाएगी? इस शहर का हर सिग्नल, हर फाइबर-ऑप्टिक केबल मेरे नियंत्रण में है"। तभी, इमारत

के बाहर भारी बूटों की आवाज़ आई, लेकिन यह अर्का के सुरक्षाकर्मी नहीं थे। यह उन ईमानदार अधिकारियों का दस्ता था, जिन्हें ज़ोया ने अंतिम समय में 'ऑफ-द-रिकॉर्ड' संगठित किया था। अर्का का चेहरा पहली बार सफेद पड़ा। उन्हें एहसास हुआ कि आर्यन और मीरा ने खुद को एक 'चारे (Bait)' की तरह इस्तेमाल किया था ताकि अर्का का असली चेहरा कैमरे पर नहीं, बल्कि उन गवाहों के सामने आ सके जिन्हें वे अपना मानते थे। मिस्टर अर्का को हिरासत में ले लिया गया, लेकिन ले जाते समय वे आर्यन के पास झुककर फुसफुसाए — "तुमने मुझे तो रोक लिया, लेकिन 'सूर्यास्त' कोई व्यक्ति नहीं है, यह एक प्रक्रिया है। काउंटडाउन शुरु हो चुका है। 48 घंटों में वह बायो-वेपन सक्रिय होगा और उसका रिमोट केंद्र-प्रस्थ के इस सुरक्षित कमरे में नहीं, बल्कि उसी सूर्यगढ़ हवेली के उस '30वें गुप्त द्वार' के पीछे है जहाँ से यह सब शुरु हुआ था"।

आर्यन और मीरा ने एक-दूसरे को देखा। सबकुछ वापस वहीं मुड़ रहा था, जहाँ से शुरु हुआ था। उन्हें वापस नीलपुरा जाना था, जहाँ हवेली के अंतिम रहस्य का उद्घाटन होना बाकी था।

अध्याय 28
वापसी और तीसवें द्वार की गूँज

नीलपुरा की हवा में आज एक अजीब-सा भारीपन था। जब आर्यन और मीरा ने सूर्यगढ़ हवेली की दहलीज पर फिर से कदम रखा, तो ऐसा लगा जैसे हवेली के पत्थरों ने उन्हें पहचान लिया हो। शहर की चकाचौंध से दूर यह इमारत अब एक योद्धा की तरह खड़ी थी, जिसके सीने में दुनिया के विनाश का रिमोट छिपा था। "यहाँ सबकुछ वैसा ही है, पर फिर भी कुछ बदल गया है....", मीरा ने अपने टॉर्च की रोशनी को दीवारों पर घुमाते हुए कहा। हवेली के भीतर की हवा अब ठंडी नहीं, बल्कि एक स्थिर ऊर्जा से भरी थी।

आर्यन ने अपने हाथ में वह प्राचीन ताम्रपत्र पकड़ा हुआ था, जिसे उन्होंने नीलकुंज से प्राप्त किया था, ''मिस्टर अर्का ने कहा था कि रिमोट इसी हवेली के तीसवें गुप्त द्वार के पीछे है... लेकिन हमने तो अब तक केवल 29 महत्त्वपूर्ण कमरों और रास्तों का पता लगाया है। वह तीसवाँ द्वार… वह कहाँ हो सकता है?" आर्यन ने हवेली के मूल नक्शे को ज़मीन पर फैलाया। एक आर्किटेक्ट के रूप में उसने महसूस किया कि हवेली की बाहरी संरचना और आंतरिक कमरों के क्षेत्रफल में एक मामूली-सा अंतर (Variation) है। लगभग 5 फीट की एक ऐसी जगह थी, जिसे किसी भी नक्शे में नहीं दिखाया गया था।

"यह 'नकारात्मक स्थान (Negative Space) ' है, मीरा!", आर्यन ने दीवार पर हाथ फेरते हुए कहा, ''यह द्वार कहीं बाहर से नहीं दिखता। यह गणितीय गणनाओं के पीछे छिपा है"। ताम्रपत्र पर लिखे निर्देशों के अनुसार, तीसवाँ द्वार केवल तब प्रकट होता है, जब 'चंद्रमा की रोशनी' एक विशेष

कोण से हवेली के मुख्य गुंबद पर पड़ती है। लेकिन उनके पास रात तक इंतज़ार करने का समय नहीं था।

"हमें कृत्रिम प्रकाश का उपयोग करना होगा," मीरा ने अपने फोटोग्राफी के हाई-पॉवर फ्लैश और रिफ्लेक्टर्स निकाले।

आर्यन ने हवेली के झरोखों में लगे पुराने काँच के टुकड़ों को एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया। जैसे ही उन्होंने प्रकाश की एक तीव्र किरण को मुख्य स्तंभ पर केंद्रित किया, हवेली की दीवारों के भीतर से गियर के घूमने की आवाज़ आने लगी। हवेली के मुख्य हॉल के फर्श पर बना एक विशाल कमल का चित्र धीरे-धीरे खिसकने लगा। वह कोई चित्र नहीं, बल्कि पत्थर का एक बारीक कटा हुआ ढक्कन था। नीचे की ओर जाती सीढ़ियाँ अंधेरे में विलीन हो रही थीं।

"यही वह तीसवाँ द्वार है...!", आर्यन ने कहा। उसकी आवाज़ में डर और उत्तेजना का मिश्रण था, ''यह रास्ता नीचे की ओर नहीं, बल्कि हवेली के 'अस्तित्व' के केंद्र की ओर जा रहा है।"

जैसे ही वे सीढ़ियों से नीचे उतरे, उन्हें एक डिजिटल बीप सुनाई दी। दीवार पर एक लाल स्क्रीन चमक रही थी — 01:59:59। दो घंटे। बायो-वेपन के ग्लोबल एक्टिवेशन में अब केवल दो घंटे बचे थे। कमरे के ठीक बीच में धातु का एक संदूक था, जो तारों और सेंसर से घिरा था। यह वही 'अंतिम रिमोट' था, जिसका ज़िक्र अर्का ने किया था। लेकिन संदूक तक पहुँचने का रास्ता एक जानलेवा भूलभुलैया था। फर्श पर 'दबाव-संवेदनशील (Pressure-sensitive) प्लेट्स' लगी थीं। अचानक कमरे के स्पीकर से एक रिकॉर्डेड आवाज़ गूँजी। यह आवाज़ न तो अर्का की थी और न ही कर्नल की। यह आर्यन के दादाजी और मीरा के पिता की संयुक्त आवाज़ थी। "यदि तुम यहाँ पहुँच गए हो, तो इसका अर्थ है कि तुमने सत्य को चुन लिया है। लेकिन सावधान! यह रिमोट केवल एक व्यक्ति के स्पर्श से निष्क्रिय नहीं

होगा। इसे खन्ना और सिंह परिवार के वारिसों को एक साथ, एक ही पल में सक्रिय करना होगा। विश्वास ही अंतिम चाबी है!"

आर्यन और मीरा ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा। अब वे उस भूलभुलैया के ठीक बीच में खड़े थे। बाहर से हवेली के दरवाजों पर प्रहार की आवाज़ें आने लगीं। 'सूर्यास्त' के बचे-खुचे गुर्गे, जो अब पागलों की तरह अंतिम हमले पर उतारू थे, हवेली के भीतर घुस चुके थे।

"वे ऊपर पहुँच चुके हैं....", मीरा ने अपनी पिस्तौल निकालते हुए कहा।

"हमें यहीं रुकना होगा!", आर्यन ने रिमोट की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, "चाहे कुछ भी हो जाए, यह काउंटडाउन शून्य नहीं होना चाहिए!"

हवेली की दीवारें अब काँप रही थीं।

अध्याय 29
हवेली का रक्त-रंजित अंतिम प्रहार

हवेली के 'तीसवें द्वार' के नीचे उस भूमिगत कक्ष में Count-down की लाल रोशनी आर्यन और मीरा के चेहरों पर किसी डरावनी छाया की तरह पड़ रही थी। ऊपर से आ रही आवाज़ें साफ़ बता रही थीं कि 'सूर्यास्त' के अंतिम वफादार गुर्गे, जो अब एक मरने वाले जानवर की तरह हिंसक हो चुके थे, हवेली के मुख्य हॉल में घुस चुके थे। "ज़ोया, तुम ऊपर का रास्ता सँभालो!" — आर्यन ने अपने इयरपीस में चिल्लाकर कहा। ज़ोया और उसके चार वफादार जवान मुख्य सीढ़ियों पर मोर्चा लिए हुए थे।

नीचे कक्ष में, मीरा ने रिमोट कंट्रोल के जटिल जाल को देखा, "आर्यन, यह कोई साधारण मशीन नहीं है। इसके भीतर एक 'डेड-मैन्स स्विच (Dead-man's switch)' लगा है। अगर हम इसे ज़बरदस्ती खोलने की कोशिश करेंगे, तो यह तुरंत पूरे शहर में गैस छोड़ देगा। हमें इसकी कोडिंग को उसी 'विश्वास की चाबी' से खोलना होगा जिसका ज़िक्र रिकॉर्डिंग में था"। ऊपर धमाकों की आवाज़ें तेज़ हो गईं। हमलावरों के पास भारी मशीनगन और ग्रेनेड थे। वे जानते थे कि यदि इस कक्ष तक नहीं पहुँचे, तो उनका पूरा संगठन और उनके आकाओं का सपना हमेशा के लिए दफन हो जाएगा। ज़ोया की टीम बहादुरी से लड़ रही थी, लेकिन उनकी गोलियाँ खत्म हो रही थीं। आर्यन ने ताम्रपत्र को रिमोट के सेंसर के पास रखा। तभी स्क्रीन पर दो हथेलियों के निशान उभरे। "मीरा, हमें एक साथ अपने हाथ यहाँ रखने होंगे, लेकिन यह केवल बायोमेट्रिक्स नहीं है। यह हमारे दिलों की धड़कन और शरीर के तापमान को भी माप रहा है। अगर हममें से कोई भी डरा या संदेह में हुआ, तो सिस्टम फेल हो जाएगा"। मीरा ने आर्यन का हाथ थाम लिया, "आर्यन, हमारे पिताओं के बीच जो भी हुआ, वह एक बड़ी तस्वीर

का हिस्सा था। आज हमें उस नफरत को पीछे छोड़ना होगा”। जैसे ही उन्होंने अपने हाथ रखे, रिमोट के भीतर से गियर्स के घूमने की संगीत जैसी आवाज़ आई। काउंटडाउन रुक गया — 00:14:02। लेकिन एक नई चुनौती सामने आई। स्क्रीन पर एक पहेली उभरी, जिसका जवाब केवल उनके बचपन की किसी साझा स्मृति में छिपा हो सकता था। पहेली थी — ”वह क्या है, जो सूरज ढलने पर भी नहीं मरता और राख होने पर भी चमकता है?”

आर्यन और मीरा ने एक-दूसरे की आँखों में देखा। उन्हें याद आया वह दिन जब वे पहली बार हवेली में मिले थे। उन्हें याद आया उनके पिताओं की वह अधूरी कविता।

"विश्वास!”, दोनों ने एक साथ कहा।

जैसे ही उन्होंने यह शब्द टाइप किया, रिमोट का बाहरी कवच खुल गया, जिससे असली नियंत्रण बोर्ड सामने आया।

तभी ’तीसवें द्वार’ के पत्थर का ढक्कन एक धमाके के साथ उड़ गया। ’सूर्यास्त’ का अंतिम कमांडर, जिसके शरीर पर कई गोलियों के निशान थे, लड़खड़ाते हुए नीचे आया। उसके हाथ में एक ऑटोमैटिक पिस्तौल थी।

"हटो वहाँ से!”, वह चिल्लाया, ”तुम इसे बंद नहीं करोगे! हम सब जलेंगे, पर इस हार को स्वीकार नहीं करेंगे!”

मीरा ने फुर्ती से अपनी पिस्तौल निकाली, लेकिन कमांडर ने गोली दाग दी। गोली आर्यन के कंधे को छूती हुई निकल गई। आर्यन दर्द से चीख पड़ा, लेकिन उसने रिमोट से अपना हाथ नहीं हटाया।, ”मीरा, इसे पूरा करो! रुकना मत!”

मीरा ने अपने पिता की सिखाई अचूक निशानेबाज़ी का परिचय दिया। उसने कमांडर के हाथ पर गोली मारी, जिससे उसकी पिस्तौल दूर जा गिरी। ज़ोया और उसकी टीम ऊपर के दुश्मनों को खत्म कर नीचे आ पहुँचे और कमांडर को दबोच लिया।

"जल्दी आर्यन... केवल 30 सेकंड!", ज़ोया ने चिल्लाकर कहा।

आर्यन और मीरा ने अंतिम दो तारों को एक साथ जोड़ा। एक तेज़ नीली रोशनी पूरे कक्ष में फैल गई। वह 'टिक-टिक' की आवाज़ अचानक बंद हो गई और स्क्रीन पर हरे अक्षरों में चमकने लगा — "SYSTEM NEUTRALIZED"।

पूरी हवेली में एक गहरा सन्नाटा छा गया। बाहर हो रही गोलियों की आवाज़ें भी रुक गई थीं। 'सूर्यास्त' का अस्तित्व हमेशा के लिए मिट चुका था। आर्यन और मीरा फर्श पर बैठ गए, हाँफते हुए और एक-दूसरे का हाथ थामे हुए। लेकिन तभी, ज़ोया ने एक अजीब चीज़ देखी। रिमोट के पीछे एक और छोटा-सा गुप्त कंपार्टमेंट खुला। उसमें से एक पुरानी सुनहरी चाबी और एक पत्र निकला, जिसपर लिखा था — "अध्याय 30: असली खज़ाना"।

"अभी भी कुछ बाकी है?", मीरा ने हैरान होकर पूछा।

आर्यन ने चाबी की ओर देखा, "यह रिमोट तो केवल दुनिया को बचाने के लिए था। असली रहस्य… वह अभी भी उस जगह है, जहाँ हमारे पिताओं ने अपना आखिरी वादा किया था"।

अध्याय 30
शाश्वत प्रकाश की विरासत

हवेली के भूमिगत कक्ष में छाई धूल और बारूद की गंध के बीच आर्यन और मीरा के हाथों में वह सुनहरी चाबी थी। यह चाबी किसी तिजोरी की नहीं लग रही थी, इसकी बनावट किसी प्राचीन नक्षत्र-मंडल की तरह थी।

"सबको लगा कि 'खज़ाना' सोना-चांदी या कोई घातक हथियार है...", आर्यन ने चाबी के दाँतों को गौर से देखते हुए कहा, "...लेकिन 'सूर्यास्त' जैसे गिरोहों ने कभी उस तीसरी चीज़ के बारे में नहीं सोचा, जो इन दोनों से शक्तिशाली है — ज्ञान!"

वे हवेली के उस सबसे पुराने हिस्से की ओर बढ़े, जहाँ 'कक्ष संख्या 0' स्थित था। यह कमरा किसी नक्शे में नहीं था, बल्कि हवेली की नींव के ठीक ऊपर, उसके ब्रह्म-स्थान में था। जैसे ही आर्यन ने वह सुनहरी चाबी मुख्य द्वार के खाँचे में डाली, कोई यांत्रिक शोर नहीं हुआ। इसके बजाय, पत्थर की दीवारों से एक मधुर, मध्यम संगीत जैसी प्रतिध्वनि (Resonance) निकली। द्वार खुलते ही मीरा और आर्यन के सामने कोई सोने का भंडार नहीं था। वहाँ एक विशाल प्राकृतिक जलकुंड था, जिसके चारों ओर काँच जैसी पारदर्शी दीवारों के पीछे हज़ारों प्राचीन पांडुलिपियाँ और मिट्टी की पट्टिकाएँ (Clay Tablets) संरक्षित थीं।

कक्ष के बीचोबीच एक धातु का गोल मेज था, जिसपर एक होलोग्राफिक प्रोजेक्शन सक्रिय हुआ। यह आर्यन के दादाजी और मीरा के पिता का एक रिकॉर्ड किया गया संदेश था, जो एक विशेष प्राचीन तकनीक से बना था।

"प्रिय बच्चों!", विक्रम प्रताप सिंह की आवाज़ गूँजी, "असली खज़ाना वह 'फॉर्मूला' है, जो इस कुंड के पानी में घुला है। यह कोई हथियार नहीं, बल्कि दुनिया की हर बीमारी को जड़ से मिटाने वाला एक 'यूनिवर्सल हीलर (Universal Catalyst)' है। हमने इसे इसलिए छुपाया था क्योंकि उस समय की दुनिया इसे दवाओं के बजाय युद्ध के लिए इस्तेमाल करती। 'सूर्यास्त' इसे बायो-वेपन बनाना चाहता था, लेकिन इसका असली गुण जीवन देना है"।

आर्यन और मीरा ने देखा कि वहाँ हज़ारों सालों का वह चिकित्सा ज्ञान था, जो लुप्त हो चुका था। इसमें कैंसर से लेकर भविष्य की महामारियों तक का इलाज प्राकृतिक और वैज्ञानिक तरीके से दर्ज था। यह खज़ाना किसी एक देश का नहीं, बल्कि पूरी मानवता का था।

"यह है वह विरासत!", मीरा ने आँखों में गर्व के आँसू भरकर कहा, "मेरे पिता गद्दार नहीं थे, वे इस अनमोल जीवन-रक्षक ज्ञान के रक्षक थे"।

आर्यन और मीरा ने फैसला किया कि यह ज्ञान अब किसी अंधेरी कोठरी में बंद नहीं रहेगा। उन्होंने सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठनों के साथ मिलकर एक अंतरराष्ट्रीय 'मार्तंड फाउंडेशन' की स्थापना की। हवेली, जो कभी डरावनी और रहस्यमयी मानी जाती थी, अब दुनिया का सबसे बड़ा 'मानवतावादी अनुसंधान केंद्र' बन गई।

प्रोफेसर शर्मा और 'सूर्यास्त' गिरोह के बचे हुए सदस्य सलाखों के पीछे थे। उनका 'अंधकार' का साम्राज्य सत्य के इस 'प्रकाश' के सामने ढह गया।

एक साल बाद....

नीलपुरा की दर्पण झील के किनारे सूर्यास्त हो रहा था, लेकिन इस बार यह डर का नहीं, बल्कि एक सुकून भरी शाम का प्रतीक था। आर्यन और मीरा झील के किनारे बैठे थे।

"क्या तुम्हें लगता है कि हम सफल रहे?", मीरा ने आर्यन के कंधे पर सिर रखते हुए पूछा।

आर्यन ने झील की लहरों को देखा, "खज़ाना मिल गया, दुश्मन हार गए... और सबसे बड़ी बात... कि हमने अपने पूर्वजों के सम्मान को वापस पा लिया। लेकिन असली सफलता यह है कि अब 'सूर्यास्त' शब्द का अर्थ तबाही नहीं, बल्कि एक नई सुबह का इंतज़ार होगा"।हवेली की दीवारों पर अब नफरत के निशान नहीं थे। वहाँ बच्चों के हँसने की आवाज़ें आती थीं क्योंकि उसका एक हिस्सा अब अनाथालय और स्कूल बन चुका था। कहानी जहाँ से शुरु हुई थी, वहीं खत्म हुई — एक हवेली, एक आर्किटेक्ट और एक फोटोग्राफर। पर अब उनके पास सिर्फ़ तस्वीरें नहीं थीं, उनके पास एक बेहतर दुनिया का नक्शा था।

उपसंहार: एक नई सुबह की प्रतिध्वनि

हवेली के 'तीसवें द्वार' के भीतर अब वह भारी सन्नाटा नहीं था जिसने दशकों तक इस स्थान को जकड़ रखा था। अब वहाँ जीवन की आहट थी।

आर्यन खन्ना आज भी कभी-कभी उन दीवारों पर हाथ फेरता है। उसे महसूस होता है कि पत्थर अब ठंडे नहीं हैं, वे गर्म हैं, जैसे वे गहरी नींद से जाग गए हों। जिस 'प्रोटोकॉल-एक्स' को दुनिया के लिए मौत का पैगाम बनाया जा रहा था, वह आज प्रयोगशालाओं में लाखों लोगों को जीवन देने वाली औषधियों में बदल चुका था।

मीरा ने अपनी नई प्रदर्शनी का नाम रखा है — 'छाया से प्रकाश तक'। उसकी खींची हुई तस्वीरों में अब केवल खंडहर नहीं दिखते, बल्कि उन खंडहरों की दरारों से खिलते हुए फूल दिखते हैं।

'सूर्यास्त (The Sunset)' गिरोह का नाम अब इतिहास के उन पन्नों में दर्ज है जिन्हें लोग डर से नहीं, बल्कि एक सबक के रूप में पढ़ते हैं। पर क्या बुराई वाकई खत्म हो जाती है? शायद नहीं। वह बस तब तक सो जाती है,

जब तक कोई नया 'आर्का' जन्म न ले ले। लेकिन अब दुनिया के पास एक ढाल है — वह ज्ञान, जिसे आर्यन और मीरा ने अपनी जान की बाजी लगाकर बचाया था।

दर्पण झील के किनारे रात के सन्नाटे में अगर आप गौर से सुनें, तो आपको लहरों के साथ एक संगीत सुनाई देगा। यह उस सुकून का संगीत है, जो तब मिलता है जब किसी अधूरे वादे को पूरा कर दिया जाता है।

आर्यन और मीरा ने सिर्फ़ एक हवेली नहीं बचाई, उन्होंने उस विश्वास को बचाया जो दो परिवारों के बीच सालों पहले टूट गया था। सूरज फिर से ढल रहा है, लेकिन अब किसी को अंधेरे से डर नहीं लगता क्योंकि हर सूर्यास्त के बाद एक नई सुबह का होना अनिवार्य है।

इति।

भव्य सारांश

तीसवाँ द्वार: विरासत का अंतिम रहस्य

"क्या होता है जब इतिहास की राख से एक ऐसा सच उभरता है, जिसे मिटाने के लिए पूरी दुनिया दाँव पर लग जाए?"

नीलपुरा की धुंधली पहाड़ियों के बीच मार्तंड प्रदेश का गौरव कही जाने वाली सूर्यगढ़ हवेली सदियों से एक राज़ दबाए खड़ी है। इस हवेली के उनतीस दरवाजों की कहानियाँ तो सब जानते हैं, लेकिन असली रहस्य छिपा है उस 'तीसवें द्वार' के पीछे, जिसका जिक्र केवल पुरानी किंवदंतियों में मिलता है।

पेशे से चिकित्सक और स्वभाव से जिज्ञासु, आर्यन जब अपनी जड़ों की तलाश में नीलपुरा लौटता है, तो उसका सामना केवल अपनी विरासत से नहीं, बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र से होता है। एक तरफ 'प्रहरी' जैसी गुप्तचर एजेंसियां हैं, तो दूसरी तरफ 'सूर्यास्त (The Sunset)' नाम का एक खूंखार गिरोह, जो द्वितीय विश्व युद्ध के उस भयानक 'प्रोटोकॉल-एक्स' को दोबारा सक्रिय करना चाहता है।

केंद्र-प्रस्थ की आधुनिक कोडिंग से लेकर मोक्षपुरी के घाटों और नीलपुरा की प्राचीन गुफाओं तक फैली यह जंग केवल सत्ता की नहीं, बल्कि अस्तित्व की है। क्या आर्यन, महाराज मार्तंड देव के उस अंतिम वचन को निभा पाएगा? क्या वह 'ग्लोबल-आई' की पैनी नजरों से बचकर उस द्वार तक पहुँच पाएगा, जहाँ विज्ञान और इतिहास का मिलन होता है?

रहस्य, साहस और बलिदान की एक ऐसी महागाथा, जो आपको अंत तक बाँधे रखेगी।